In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

द्रव्य-गुण एवं रस-शास्त्र

राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित
धात्री-कल्पद् पाठ्यक्रम पर आधारित पाठ्यपुस्तक

वैद्य कनक प्रसाद व्यास
Ph.D.

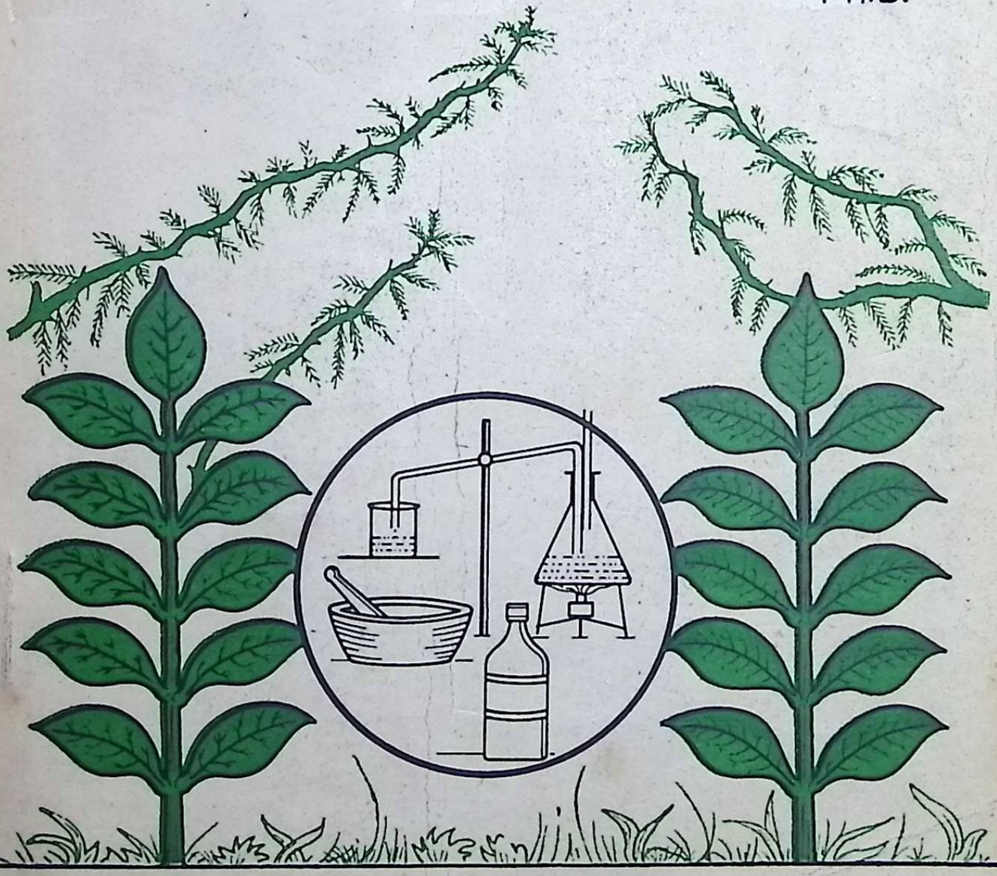

जगदीश संस्कृत पुस्तकालय
जयपुर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

द्रव्यगुण विज्ञान एवं रस भैषज्य कल्पना

(राज. विश्व विद्यालय के धात्री/कल्पद डिप्लोमा-पाठ्यक्रम पर आधारित)

लेखक-

डॉ. कनक प्रसाद व्यास
आयुर्वेद वृहस्पति Ph.D.
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
मदंन मोहन मालवीय आयुर्वेद महाविद्यालय
उदयपुर (राज.)

जगदीश संस्कृत पुस्तकालय
जयपुर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रकाशक :
जगदीश संस्कृत पुस्तकालय
झालानियों का रास्ता, किशनपोल बाजार,
जयपुर।

© लेखक के अधीन

प्रथम संस्करण 1993

मूल्य 30.00

प्रमुख वितरक
आयुर्वेद संस्कृत हिन्दी पुस्तक भण्डार
झालानियों का रास्ता, किशनपोल बाजार,
जयपुर।
दूरभाष : 62974

मुद्रक
न्यू ज्ञान ऑफसेट प्रिंटर्ज
शाहजादा बाग, दिल्ली

लेजर टाइप सैटिंग
कम्प्यूटर वर्ल्ड, चमेली वाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्राक्कथन

यह प्रकाशन प्रशिक्षणार्थियों के हाथों में सौंपकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। इसके द्वारा कोई भी आयुर्वेदानुरागी द्रव्यगुण, युनानी द्रव्य, रसशास्त्र तथा भैषज्यकल्पना से सम्बन्धित प्राथमिक जानकारी प्राप्त कर सकेगा। विशेष घात्रि कल्पद प्रशिक्षणार्थीयों के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। आशा है आप इस पुस्तक से लाभान्वित होंगे। इस पुस्तक का समय पर उत्तम मुद्रण तथा प्रकाशन के लिये मैं **जगदीश संस्कृत पुस्तकालय** का धन्यवादार्ह है।

अन्त में पाठकों से आग्रह है कि इस कृति में प्रमादवश स्वूक्लन तथा मुद्रण त्रुटियाँ स्वाभाविक है। उन्हें सारग्राही के रूप में ग्रहण करते हुये हमें सूचित करने का कष्ट करेंगे। जिससे अग्रिम संस्करण में परिष्कार किया जा सकें।

- डॉ. कनकप्रसाद व्यास

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अनुक्रमणिका

पाठ खण्ड एवं विषय सामग्री		पृष्ठ संख्या
१- प्रथम अनुच्छेद	द्रव्य गुण विज्ञान	1-13
द्रव्य		2
रस		4
गुण		5
वीर्य		8
विपाक		9
प्रभाव		10
कर्म		11
२- द्वितीय अनुच्छेद	आयुर्वेदीय द्रव्य परिचय	14-60
हरीतकी		14
विभीतक		15
आमलकी		16
सौंठ		17
काली मिरच		18
पीपल		19
पीपरामूल		19
चव्य		20
चित्रक		20
बड़ी इलायची		21
छोटी इलायची		22
दालचीनी		23
तेजपात		23
नागकेशर		24
बिल्ब		25

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कण्टकारी	25
बड़ी कटेरी	26
गोक्षुर	27
अजवायन	28
खुरासानी अजवायन	28
अजमोदा	29
बच	29
पारसीक बच	30
कुलिञ्जन	30
चोपचीनी	31
वाय विडङ्ग	32
अष्ट वर्ग	32
वंश लोचन	35
कुटज	36
इन्द्रयव	37
कुटकी	37
मदनफल	38
रास्ना	39
पुष्करमूल	39
कर्कट श्रृंगी	40
मंजिष्ठा	41
हरिद्रा	41
जायफल	42
जाविंत्री	43
रसोंत	43
भंग	43
लोध्र	44
अफीम	45
धत्तुर	46
वत्सनाभ	47
जयपाल	47
कुचला	48
सर्पगन्धा	49
अश्वगन्धा	49
Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कर्पूर		50
चन्दन		51
लवङ्ग		51
खस		52
नेत्रबाला		53
नागरमौथा		53
पित्त पापडा		54
चिरायता		54
पटोल पत्र		55
चन्द्र शूर		56
गिलोय		57
कायफल		57
शतावरी		58
शंखपुष्पी		59
गंवारपाठा		60
३- तृतीय अनुच्छेद	युनानी द्रव्य परिचय	61-81
वनप्सा		61
गाजवाँ		61
जूफा		62
खतमी		63
जदवार		63
अयापान		64
आबरेशम		65
आलूबुखारा		65
ईसबगोल		66
उसब्बा		67
खून खराबा		67
खुबकलां		68
लहसन		68
प्याज		69
रेवन्द चीनी		70
जलापा		71
तालमखाना		71
दरियाई नारियल		72

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बिहीदाना		73
तुख्म खस-खस		74
अंजीर		74
लिसोडा		74
उन्नाव		75
मुनक्का		76
उलटकम्बल		77
उस्तखुदूस		77
कबाब चीनी		78
गुडहल		79
रूमी मस्तगी		79
सनाय		80
सुरंजान		81
४- चतुर्थ अनुच्छेद	**रसतन्त्र**	82-95
यन्त्र एवं पुट परिचय		82
रस परिचय		84
गन्धक परिचय		87
धातु परिचय		87
स्वर्ण		88
रजत		89
ताम्र		90
लोह		91
पित्तल		92
यशद		93
नाग		94
वगं		95
५- पञ्चम अनुच्छेद	**मात्रा परिचय**	96-100
मागध मान		97
कालिङ्गमान		98
मध्यकालीन मान		98
इम्पीरीयल मान		99
ठोस पदार्थों के लिये		99
मिट्रिक मान		99
यूनानी मान		100

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

६- षष्ठ अनुच्छेद भैषज्कल्पना 100-115
ब्राह्मी का स्वरस निकालना 101
कल्क कल्पना 102
चूर्ण कल्पना 102
क्वाथ कल्पना 103
फाण्ट 103
हिम 104
अन्य कल्पनायें—अवलेह, गुटिका, स्नेह
आसव अरिष्ठा कल्पना, अर्क 104
मण्डूर 107
हिंगुल 107
संखिया 108
मन:शिला 108
हरताल 109
स्फटिक 109
गैरिक 110
तुत्थ या नीला थोथा 110
शिलाजीत 111
माक्षिक 111
अभ्रक 112
विषाण 113
शंख 113
शुक्ति 114
परिशिष्ट अकारादिक्रम से विषय सूची 115

* * *

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रथम अनुच्छेद

द्रव्यगुण विज्ञान

आयुर्वेदीय चिकित्सा विज्ञान का सम्यक् अध्ययन करने के लिए तीनों सूत्रों (हेतु, लिंग तथा औषध) का परिज्ञान होना आवश्यक है। इनमें से औषध सूत्र को विश्लेषित करने के लिए द्रव्य-गुण विज्ञान के नाम से एक नवीन विधा का विकास हुआ हैं। संक्षेप में **जिस शास्त्र या विज्ञान में वैज्ञानिक पद्धति से द्रव्य एवं उनके गुण-धर्मों का प्रतिपादन किया जाता है— उसे द्रव्य-गुण-विज्ञान कहते हैं।** यहाँ प्रयुक्त द्रव्य शब्द औषध तथा आहार दोनों ही प्रकार के द्रव्यों को समाविष्ट करता हैं, चिकित्सा में औषध द्रव्यों की प्रधानता होने से उनका प्रधान रूप से प्रतिपादन किया जाता है, गुण शब्द से रस, गुण, वीर्य, विपाक एवं कर्म का बोध होता है।

द्रव्य गुण विज्ञान की शाखाऐं—

आचार्य चरक ने द्रव्य का अध्ययन करते समय प्रकृति, गुण, प्रभाव, देश, संग्रह, संस्कार, मात्रा, व्याधि का परिज्ञान करने का निर्देश दिया है। तद्नुसार उसे नीचे लिखी मुख्य शाखाओं में विभक्त किया जा सकता है यथा—

1. देश-भूमि-काल विज्ञान *Ecology*

सम्बन्धित वनस्पतियों की पैदावार के लिए अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियों का अध्ययन इस शाखा में किया जाता है।

2. भैषज द्रव्य विज्ञान *Materia Medica*

ग्राह्य द्रव्य के भौतिक स्वरूप एवं गुणधर्मों का अध्ययन इसमें किया जाता है।

3. विष विज्ञान *Toxicology*

इस शाखा में विषैले द्रव्यों के प्रभाव-कार्मुकता तथा प्रतिरोध का अध्ययन किया जाता है।

4. भैषज्य कल्पना विज्ञान *Pharmacy*

प्रयोज्य द्रव्य से औषध-निर्माण तथा विविधकल्पनाओं जैसे स्वरस-क्वाथ-शार्कर गुटिका-आसव आदि का अध्ययन इस शाखा में किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

द्रव्य

परिभाषा—

जिसमें गुण व कर्म नित्य सम्बन्ध (समवाय सम्बन्ध) से रहते हों, तथा जो अपने कार्य द्रव्यों के समवायी कारण हों, उसे द्रव्य कहते हैं, यथा—

क्रियागुणवत् समवायी कारणं द्रव्यम्। सु. सू. 40

यत्राश्रिता: कर्मगुणा: कारणं समवायि यत्, तद् द्रव्यम्।। चरक

द्रव्य नौ है— पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा एवं मन। आयुर्वेदीय क्षेत्र में जिन द्रव्यों का औषध रूप में प्रयोग किया जाता है, वे पांचभौतिक होते है। इस विज्ञान में प्रयुक्त द्रव्य शब्द पांच भौतिक द्रव्यों के लिए है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश, इन पाँचों महाभूतों में पंचीकरण या संयोग से भौतिक सृष्टि एवं द्रव्य का निर्माण होता है, उनमें जिस किसी महाभूत की प्रधानता होती है, उसी के अनुसार वह द्रव्य कहलाता है। उदाहरण के लिये, आकाशीय द्रव्य, पार्थिव द्रव्य, तेजस् द्रव्यादि।

द्रव्य प्रकार—

योनिभेद से— 1. जाङ्गम, औद्भिद्, पार्थिव।

जांगम द्रव्य— जो द्रव्य एक स्थान से दूसरे स्थान पर गमन करते है, वे जंगम कहलाते है तथा उन प्राणियों से प्राप्त द्रव्य जाङ्गम कहलाते हैं, जैसे— कस्तूरी, मांस, मधु, घी, दुग्ध, गोरोचन, मूत्र आदि। ये पुन: चार प्रकार के होते है—

1. जरायुज, 2. अण्डज, 3. स्वेदज एवं 4. उद्भिज्ज

1. जरायुज— गर्भाशय में जरायु से उत्पन्न होने वाले प्राणी जरायुज कहलाते है जैसे— मनुष्य, गाय, बकरी आदि।

2. अण्डज— अण्डों से उत्पन्न होने वाले प्राणी अण्डज कहलाते हैं जैसे— कबूतर, पक्षी, सर्प आदि।

3. स्वेदज— मनुष्यों एवं पशुओं के स्वेद एवं भू वाष्प से उत्पन्न प्राणी स्वेदज कहलाते है, जैसे— जूं, कृमि, कीटं आदि।

4. उद्भिज्ज— पृथ्वी के अन्दर कुछ समय रहने के बाद पुन: बाहर निकलने वाले प्राणी उद्भिज्ज कहलाते हैं, जैसे— गण्डूपद, इन्द्रगोप, मण्डूक (मेंढक) आदि।

औद्भिद् द्रव्य—

जो द्रव्य पृथ्वी को भेदकर बाहर निकलते है, उन्हें औद्भिद् द्रव्य कहते है, जैसे— वृक्ष, गुल्म, लता आदि। इनसे प्राप्त पत्र, पुष्प, फल, बीज आदि औद्भिद् द्रव्य कहलाते है। ये पुन: चार प्रकार के होते है यथा—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

1. वनस्पति— अदृश्य या अल्प दृश्य पुष्पों से जिनके फल आते है, उन्हें वनस्पति कहते है। जैसे— वट, पीपल, उदुम्बर, मयूरशिखा, हंसपदी आदि।

2. वानस्पत्य— जिन वृक्षों के पुष्प, फल दोनों ही स्पष्ट दिखाई दें, वे वानस्पत्य कहलाते है। जैसे— हरीतकी, विभीतक, आम्र आदि।

3. औषधी— फलों के पक्व होने पर जो औद्भिद् नष्ट हो जाता है, वे औषधी द्रव्य कहलाते है, जैसे— अपामार्ग, यव, गोधूम, चणक, मेथिका, अजवायन, जीरा आदि।

4. वीरुध— फैलने तथा चढ़ने वाला औद्भिद् वीरुध कहलाता है, जैसे— अमृता, विष्णुक्रान्ता, कनेर, अर्क, वासा, आदि।

पार्थिव द्रव्य—

पृथ्वी की खदानों से प्राप्त द्रव्य पार्थिव या खनिज कहलाते है, जैसे हरताल, गोदन्ती, लोह, ताम्र आदि धातुएँ तथा पारद आदि।

अन्य वर्गीकरण—

1. पाँच भौतिक दृष्टि से— आकाशीय, वायव्य, आग्नेय, जलीय, एवं पार्थिव।

2. प्रयोग भेद से— औषध, आहार द्रव्य।

3. रस भेद से— मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय द्रव्य।

4. प्रभाव भेद से— दोषप्रशमन द्रव्य, धातु प्रदूषण द्रव्य, स्वस्थहितकारी द्रव्य।

इस प्रकार चेतन-अचेतन, कार्यकारण, गुणभेद, विपाक भेद, वीर्यभेद, कर्मभेद आदि दृष्टि से अनेक प्रकार के वर्गीकरण किये जा सकते है।

द्रव्यों के परिभाषिक वर्ग

त्रिफला—	हरड़, बहेड़ा एवं आंवला।
त्रिकटु—	सौंठ, कालीमिरच और पीपल।
चतुरुपण—	त्रिकटु (सौंठ, मिरच, पीपल) + पीपलामूल।
पंचकोल—	पिप्पली, पीपलामूल, चव्य, चित्रक एवं सौंठ। इनको पंचूषण भी कहते है।
षडूपण—	पंचकोल + कालीमिरच।
लघु पंचमूल—	शालपर्णी, पृश्नपर्णी, बड़ी कंटेरी, गोखरु और छोटी कंटेरी।
वृहद् पंचमूल—	बिल्व, अग्निमंथ, श्योनाक, पाटला एवं गम्भारी।
दशमूल—	लघु पंचमूल + वृहद् पंचमूल।
त्रिमद—	वाय विडङ्ग, नागर मोथा, चित्रक।
त्रिजात—	दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची। इनको त्रि-सुगन्धि भी कहते है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चातुर्जात— त्रिजात + नागकेशर।

चतुर्बीज— मेथिका, चन्द्रशूर, कालाजाजी (कलौंजी ?) एवं अजवायन।

पंचक्षीरी या पंचवल्कल-वट, उदुम्बर, अश्वत्थ, प्लक्ष, पारस पीपल।

पंच पल्लव— आम, जामुन, कैंथ, बिजोरा एवं बिल्व के पत्ते।

पंच पंचमूल— वृहद् पंचमूल, लघु पंचमूल, कण्टक पंचमूल, वल्ली पंचमूल एव तृण पंचमूल।

कंटक पंचमूल— करोंदा, गोखरु पियावासा, शतावरी, हिंस्रा।

वल्ली पंचमूल— अनन्तमूल, श्यामालता, विदारी, गुडूची, मेषशृंगी।

तृण पंचमूल— कुश कास, नल, दर्भ, ईक्षु।

अष्टवर्ग— जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीर काकोली, ऋद्धि, वृद्धि।

प्रतिनिधि द्रव्य— मेदा एवं महामेदा — शतावरी
जीवक-ऋषभक — विदारी कन्द
काकोली-क्षीर काकोली — अश्वगन्धामूल
ऋद्धि-वृद्धि — वाराही कन्द

क्षीराष्टक— गाय, भैंस, भेड़, बकरी, हथनी, घोड़ी, ऊँटनी और स्त्री का दूध।

मूत्राष्टक— गाय, भैंस, बकरी, हाथी, घोड़ा, ऊंट एवं गधा का मूत्र।

पंचलवण— सैन्धव, सौवर्चल, बिड्, सामुद्र और सांभर।

क्षारत्रय— यवक्षार, सर्जिकाक्षार, टङ्कणक्षार।

विषवर्ग— वत्सनाभ, शृंगिक, कालकूट, सक्तूक, हारिद्र, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, हलाहल, ब्रह्मपुत्र।

उपविष— अर्क, सैहुण्ड, धत्तूर, कनेर, कलिहारी, गुंजा, अफीम।

रस

किसी भी द्रव्य को जिह्वा पर रखते ही जिस विषय या गुण का ज्ञान होता है उसे रस कहते है। ये छः प्रकार के होते है—

रस	व्यवहार में	जैसे
1. मधुर (Sweet)	मीठा	ईख, चीनी, गुड़, सेकरीन, मुनक्का, दूध, मुलेठी
2. अम्ल (Citrous)	खट्टा	इमली, नींबू, दही, आंवला, नारंगी
3. लवण (Salty)	नमकीन	सेन्धा नमक, सामुद्रनमक
4. कटु (Spxice)	चरपरा	लाल मिरच, काली मिरच, सोंठ, नमक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

5. तिक्त (Biter)	कड़ुवा	चिरायता, कटुका, करेला, नीम
6. कषाय (Astring ent)	कसैला	बबूल, सुपारी, माजूंफल, हरड़

किसी भी द्रव्य को चखते समय प्रधान रस के बाद जिन रसों का ज्ञान होता है, उन्हें *अनुरस* कहते है। यहां यह भी ध्यान रखना चाहिये कि कोई भी द्रव्य एक रसात्मक नहीं होता है उनकी अंशांश कल्पना के आधार पर 63 प्रकार के भेद किये जा सकते है।

गुण

जो द्रव्य में नित्य सम्बन्ध से रहता हो, क्रिया रहित हो, निर्गुण हो, तथा कार्य के प्रति असमवायि कारण हो, उन्हें गुण कहते हैं।

संख्या— विभिन्न वर्गों में आये हुए गुणों की संख्या एवं प्रकार इस प्रकार है—

1. **सामान्य गुण—** गुरु-लघु, शीत-उष्ण, स्निग्ध-रुक्ष, मन्द-तीक्ष्ण, स्थिर-सर, मृदु-कठिन, विशद-पिच्छिल, श्लश्ण-खर, स्थूल-सूक्ष्म, सांद्र-द्रव।
2. **परादिगुण—** पर, अपर, युक्ति, संख्या, संयोग, विभाग, पृथकृत्व, परिणाम, संस्कार, अभ्यास।
3. **आध्यात्मिक गुण—** इच्छा-द्वेष, सुख-दुःख, प्रयत्न-बुद्धि।
4. **वैशेषिक गुण—** शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध।

इस प्रकार 41 गुणों की परिगणना की गई है। द्रव्य गुण विज्ञान के क्षेत्र में मुख्य रूप से 20 प्रकार के सामान्य गुणों का अधिकतर प्रयोग किया जाता है। ये गुण उन-उन द्रव्यों के भौतिक स्वरूप पर आधारित नहीं होकर उनका शरीर पर प्रयोग करने के बाद प्राप्त परिणामों या प्रभावों को बतलाते है। संक्षेप में गुण कर्मानुमेय है। उदाहरणार्थ कोई द्रव्य गुरु है इसका अभिप्राय है, वह द्रव्य शरीर के विभिन्न धातुओं में गौरव या गुरुता उत्पन्न करेगा, भौतिक दृष्टि से या द्रव्यतः भारी होना आवश्यक नहीं।

गुणों से कार्य की उत्पत्ति का अर्थ यह हैं कि वे शारीर धातुओं में जाकर अपने समान गुणों की उत्पत्ति एवं वृद्धि कर क्रिया को प्रेरित करते है। गुरु आदि बीस प्रकार के सामान्य गुणों पर संक्षेप में विचार करेंगे :—

1. गुरु *(Heavy)* व्यवहार में गुरु गुण को भारी या वजनदार कहते हैं। इस गुण से द्रव्य पचने में भारी, शरीर को पुष्ट करने वाला, तर्पण, बल बढ़ाने वाला होता है, भौतिक दृष्टि से यह गुण पृथ्वी व जल महाभूत प्रधान होता है। इससे वात एवं कफ का शमन होता है, मल मूत्र आसानी से उत्सृष्ट हो जाते है उदाहरण— उड़द, पके हुए आम, भैंस का दूध, प्याज, विदारी कन्द, लौह आदि।

2. लघु *(Light)* व्यवहार में लघु गुण को हल्का या हल्कापन कहते है—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इस गुण वाले द्रव्य से शरीर में हल्कापन, कृशता एवं रोपण होता है तथा आसानी से पच जाता है। अग्नि तथा आकाश महाभूत की प्रधानता होती है अतः लघु गुण कप शामक एवं वातवर्धक होता है। उदाहरण— मूंग, लाजा, पटोल, बकरी का दूध, तुलसी, यशद आदि।

3. शीत *(Cold)* लौकिक व्यवहार में शीत गुण को ठण्डा या ठण्डापन कहते है। इसके प्रयोग से शारीरिक धातुओं में शीतलता, स्निधता एवं गुरुत्व पैदा होता है। जल महाभूत प्रधान होने से पित्त शामक एवं वात कफ वर्धक होता है। उदाहरण— शाल्मली, चावल, जौ, मूंग, चीकू, फालसा, धारोष्ण दूध, मक्खन, चन्दन, उशीर, मुक्ता आदि।

4. उष्ण *(Hot)* लौकिक व्यवहार में उष्ण गुण को गर्म या गर्मी कहते है। इससे स्वेद, मूर्च्छा, दाह, तृषा, पाचन होता है। तेज महाभूत की प्रधानता से वात-कफहर एवं पित्त-वर्धक होता है। उदाहरण— मिरच, सौंठ, गुग्गुलु, हल्दी, पुष्करमूल, ताम्र आदि।

5. स्निग्ध *(Viscous)* लौकिक व्यवहार में स्निग्ध गुण को चिकनाहट या चिप-चिपाहट कहते हैं, जो द्रव्य शरीर में मार्दव या कोमलता, स्नेहन, क्लेदन, तथा बल-वर्णकर होते है, वे स्निग्ध गुण वाले होते है। यह गुण जल महाभूत की प्रधानता से वायु शामक तथा कफ वर्धक है। उदाहरण— माष, तिल, खर्जूर, वसा, घी, सोंठ, आदि।

6. रुक्ष *(Dry)* लौकिक भाषा में रुक्ष गुण का अर्थ खुरदरा या रुखापन होता है। इस गुण से धातुओं में रुक्षता, कठिनता, शुष्कता, एवं स्तम्भन पैदा होता है, अग्नि व वायु महाभूत की प्रधानता से वात वर्धक एवं कफ शामक है। उदाहरण— बाजरा, मटर, सूरणकन्द, आलू, गूगल, हल्दी, गोमूत्र, शिलाजीत आदि।

7. मन्द *(Dull)* व्यवहार में हम मन्द को धीमा या सुस्त कहते हैं। इसके सेवन से शारीरिक क्रियाएं धीरे या मन्द हो जाती है। पृथ्वी, जल महाभूत की प्रधानता से यह पित्त शामक एवं कफ वर्धक है। उदारहरण— गुडूची, अफीम, दही आदि।

8. तीक्ष्ण *(Micro-active)* लौकिक व्यवहार में तीक्ष्ण का अर्थ 'तेजी' से लिया जाता है। इस गुण से द्रव्य शीघ्र कार्यकारी, दाह, पाक, स्त्रावकारी होता है। तेज महाभूत प्रधान होने से वात-कफ शामक एवं पित्त वर्धक होता है। उदाहरण— मिरच, पीपल, सोंठ, अदरख, वत्सनाभ, संखीया, कस्तूरी, मद्य, हरताल आदि।

9. स्थिर *(Immovable)* व्यवहार में हम स्थिर गुण को गतिहीन या निश्चल कहते है, पृथ्वी महाभूत प्रधान होने से यह कफ वर्धक होता है। उदाहरण— अश्वगन्धा, बला, बबूल, खदिर आदि।

10. सर *(Mobility)* व्यवहार में सर का अर्थ गतिशीलता से लेते है। इस गुण के सेवन से दोष, धातु व मलों की प्रवृत्ति का अनुलोमन होता है तथा जल महाभूत

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रधान होने से कफ एवं पित्त की वृद्धि करता है। उदाहरण— पालक, दुग्ध, अमलतास, हरीतकी, जयपाल, ताम्र आदि।

11. मृदु *(Soft)* लौकिक भाषा में मृदु गुण का अर्थ कोमल या मुलायम होता है। बाह्य तथा आभ्यन्तर प्रयोग से शरीर में मृदुता और शिथिलता उत्पन्न करने वाले गुण को मृदु कहते है। जल व आकाश महाभूत की प्रधानता से यह पित्त शामक एवं कफ वर्धक है। उदाहरण— शाली, गेहूँ, जैतून का तेल, मुलैठी, दूध आदि।

12. कठिन *(Hard)* व्यवहार में हम कठिन से कड़ा या कड़ापन अर्थ लेते है, जो शरीर में दृढ़ता या कठोरता उत्पन्न करता है तथा पृथ्वी महाभूत प्रधान होने से वातशामक एवं कफ वर्धक हैं। उदाहरण— शतावरी, अश्वगन्धा, दूध, घी आदि।

13. पिच्छिल *(Sliminess)* लौकिक भाषा में पिच्छिल अर्थ लुआब या लुबाबदार होता है, यह गुण लेपन एवं चिक्कणता करता है। जल महाभूत प्रधान होने से यह वातहर एवं कफ वर्धक होता है। उदाहरण— ईसबगोल, तालमखाना, सेमल, गोंद, लिसोड़ा, मूसली आदि।

14. विशद *(Clearness)* व्यवहार में हम विशद गुण को निर्मल या स्वच्छता कहते है, जो शरीर में दोष, धातु, मल एवं स्रोतों में व्याप्त उपलेप को साफ करता है। वायु, अग्नि एवं पृथ्वी महाभूत की प्रधानता से कफशामक तथा वातवर्धक होता है। उदाहरण– निम्ब, खदिर, मद्य, क्षार आदि।

15. श्लक्ष्ण *(Smooth)* व्यवहार में हम श्लक्ष्ण गुण को फिसलन या चिकनाहट कहते है; जो शरीर में आकर श्लक्ष्णता पैदा करता है। जैसे— घिसे हुए संगमरमर एवं मणि का स्पर्श, आकाश गुण की प्रधानता से कफ वर्धक होता है। उदाहरण— घृताश्म, वैक्रान्त, प्रवाल, मुक्ता आदि।

16. खर *(Rough)* लौकिक भाषा में खर गुण के लिए खुरदरापन या रुखा शब्द प्रयोग करते है, यह द्रव्य शरीर में जाकर परुषता एवं खरता उत्पन्न करता है एवं पृथ्वी व वायु महाभूत की प्रधानता से वातवर्धक होता है। उदाहरण— करञ्जफल, वराटिका-शुक्ति, शंख आदि।

17. स्थूल *(Bulkiness)* स्थूल गुण से अभिप्राय मोटा या मोटापन से है। इस गुण वाले द्रव्य शरीर में मोटापन एवं स्रोतों में अवरोध पैदा करते है। पृथ्वी महाभूत की प्रधानता से यह कफ की वृद्धि करता है। उदाहरण— दही, मैदा, खली आदि।

18. सूक्ष्म *(Micro)* व्यवहार में सूक्ष्म शब्द को बहुत छोटे के अर्थ में प्रयोग किया जाता है; जो द्रव्य शरीर के सूक्ष्मातिसूक्ष्म स्रोतों में प्रविष्ट होकर कार्य कर सके उस गुण को सूक्ष्म कहते है। अग्नि, वायु व आकाश महाभूत की प्रधानता से यह वात वर्द्धक होता है। उदाहरण— गुग्गुलु, तिल तेल, मधु, शिलाजतु, स्वर्णमाक्षिक, लवण, वत्सनाभ, कुचला, सर्पविष आदि।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

19. सान्द्र *(Thick)* लौकिक भाषा में सान्द्र गुण घन या गाढा कहलाता है, जिस द्रव्य के प्रयोग से शरीर में स्थूलता, धातुओं में संघात एवं दृढ़ता उत्पन्न होती हो उसे सान्द्र कहते है। पृथ्वी व जल महाभूत की प्रधानता से यह कफ वर्धक होता है, उदाहरण— अष्टवर्ग, शालम पंजा, मक्खन, दही आदि।

20. द्रव *(Liquid)* द्रव गुण का अर्थ व्यवहार में पतलापन से लिया जाता है; इस गुण वाले द्रव्यों के प्रयोग से क्लिन्नता उत्पन्न होती है एवं यह द्रव्य सूक्ष्म स्रोतों में भी प्रसरण शील होता है। जल महाभूत की प्रधानता से कफ पित्त वर्धक होता है, जैसे तैल, जल, मूत्र, ईक्षुरस, शर्करा, लवण, नवसादर आदि।

दर्शन शास्त्र के अनुसार गुणों में गुण नहीं रहते हैं किन्तु रसों के प्रकरण में मधुरादि छः रसों के गुण बतलाये गये है, इसका अभिप्राय उन रसों वाले द्रव्यों में बतलाये गये गुण भी रहते है अर्थात् वे गुण उस रस के नहीं होकर उस रस वाले द्रव्य के होते हैं।

वीर्य

परिभाषा :—

द्रव्य जिस विशिष्ट शक्ति से कार्य करते है उसे वीर्य कहते है, अन्य शब्दों में वीर्य के द्वारा ही कोई भी द्रव्य कार्य करने में सक्षम होता है।

द्रव्य के प्रयोग में वीर्य महत्त्वपूर्ण होता है। वनस्पतियों के विभिन्न अंगों में से किसी अंग विशेष का प्रयोग निर्देश उस अंग में उत्कृष्ट वीर्यवत्ता के आधार पर किया जाता है। ऋतुओं का भी वनस्पतियों के वीर्य पर प्रभाव होने से विभिन्न वनस्पतियों को विशिष्ट ऋतुओं में संग्रहीत करने का निर्देश दिया जाता है। वीर्य की सुरक्षा एवं उत्कृष्टता के लिये ही विभिन्न औषध कल्पनाएँ की जाती है। कच्चे द्रव्यों को सुरक्षित एवं संग्रहीत करने के पीछे भी हमारा लक्ष्य उनको वीर्यवान् बनाये रखना है। इस प्रकार द्रव्यों की कार्मुकता में वीर्य महत्त्वपूर्ण भूमिका रखता है।

प्रकार— विभिन्न आचार्यों ने वीर्य के अलग-अलग भेद बताये है :—

1. अष्टविधवीर्य— गुरु, लघु, स्निग्ध, रुक्ष, मृदु, तीक्ष्ण, शीत, उष्ण।

2. द्विविध वीर्य— शीत और उष्ण।

कुछ विद्वान् कर्म को तथा कुछ गुणों को भी वीर्य मानते है, किन्तु द्विविध वीर्य अर्थात् शीत एवं उष्ण भेद से दो प्रकार ही व्यावहारिक एवं युक्ति संगत है।

शीतवीर्य— जीवन, बल्य, वृष्य, प्रसादन, क्लेदन, स्तम्भन, स्थितिकरण, विष्यन्दन, गुरु, वातकफकर, पित्तशमन होता है।

उष्णवीर्य— स्वेदन, दहन, पाचन, वमन-विरेचन, विलयन, तृष्णाकर, भ्रमकर, अवृष्य, लघु, वातकफहर, तथा पित्तकर होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विपाक

विपाक से तात्पर्य विशिष्ट पाक से है अर्थात् खाये हुए आहार का सम्यक् पाचन होना, जिसकी अभिव्यक्ति तीन प्रकार के विशिष्ट रसों से की जाती है। संक्षेप में खाये हुए आहार का जाठराग्नि तथा भौतिकाग्नियों द्वारा परिपाक के बाद प्राप्त रस को विपाक या निष्ठा पाक कहते है।

प्रकार— विपाक की संख्या में विभिन्न आचार्यों में मतान्तर मिलते है। उदाहरण के लिये—

1. षड्विध विपाक— मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय इन छः रसों के आधार पर खाये हुये आहार का भी छः प्रकार से विपाक माने गये है। इस मत के मानने वालों का कहना है कि आहार के रस, पाचन के बाद भी वैसे ही बने रहते है। इस मत का अधिकांश आचार्यों ने विरोध किया हैं।

2. पंचविध विपाक— खाया हुआ आहार या औषध पांच भौतिक होने से उनका पाचन के बाद प्राप्त विपाक भी भूतों के आधार पर पांच प्रकार का होगा।

3. त्रिविध विपाक— इस मत को मानने वाले आचार्यों का कहना है कि खाये हुये आहार या औषध का रस, पाचन के बाद तीन मुख्य रसों में से किसी एक रस में परिवर्तित हो जाता है। वे रस हैं मधुर, अम्ल और कटु। कटु, तिक्त व कषाय रस वाले द्रव्यों का विपाक प्रायः कटु ही होता है। अम्ल रस का विपाक प्रायः अम्ल तथा मधुर व लवण रस वाले द्रव्यों का विपाक प्रायः मधुर ही होता है। यद्यपि उक्त क्रम में अपवाद भी हैं फिर भी यह मत युक्तियुक्त एवं व्यावहारिक होने से स्वीकार्य है। इस मत को महर्षि चरक ने प्राधान्येन पुष्ट किया है।

4. द्विविध विपाक— महर्षि सुश्रुत ने दो प्रकार के विपाक माने है— गुरु या मधुर तथा लघु या कटु।

विपाक काल में महाभूतों के जो गुण निष्पन्न होते हैं उन्हें गुरु व लघु इन दो वर्गों में विभक्त किया गया है, गुरु, स्निग्ध, शींत, पिच्छिल, गुणोत्कर्ष से गुरु विपाक तथा रुक्ष, लघु, तीक्ष्ण, विशद, गुणों के उत्कर्ष से लघु विपाक होता है।

द्विविध विपाक एवं त्रिविध विपाक का तुलनात्मक अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि इनमें मौलिक मत भेद नहीं है, त्रिविध विपाक का आधार छः रस एवं त्रिदोष है, जब कि द्विविध विपाक महाभूत तथा गुणों पर आधारित है।

रस एवं विपाक में अन्तर—

1. रस का ज्ञान जिह्वा से होता है एवं विपाक का ज्ञान पाचन के बाद कर्मों के आधार पर किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

2. रस का ज्ञान जिह्वा पर द्रव्य के रखते ही हो जाता है, जब कि विपाक का ज्ञान पाचन के बाद विलम्ब से होता है।

3. रस का शरीर के साथ-साथ मन पर भी आल्हादन, मनः प्रसादन आदि तात्कालिक प्रभाव होता है, जब कि विपाक का शरीर पर अथवा परम्परया मन पर सीमित प्रभाव होता है।

4. रसों का प्रभाव जिह्वा, मुख, तालु, कण्ठ, गल, कपोलादि पर स्थानिक रूप से होता है किन्तु विपाक का प्रभाव दोष, धातु, मल तथा स्रोतों पर सार्वदैहिक होता है।

प्रभाव

द्रव्य सामान्यतया रस, गुण, वीर्य, विपाक के अनुसार कार्य करते है, किन्तु कई बार इससे विशिष्ट कार्य भी करते है; उन्हें प्रभावजन्य माना जाता है। आचार्य सुश्रुत ने द्रव्यगत दो शक्तियाँ प्रतिपादित की है—

1. चिन्त्य शक्ति— अर्थात् पाँच भौतिक संगठन एवं रस, गुण तथा विपाक के आधार पर जिनकी व्याख्या की जा सके। इसे वीर्य भी कहते है।

2. अचिन्त्य शक्ति— द्रव्य के जिस कार्य को उसके पाँच भौतिक संगठन, रस, गुण, वीर्य विपाक आदि से सम्बद्ध नहीं किया जा सके उसे, अचिन्त्य शक्ति या प्रभाव कहते है। उदाहरण के रूप में दन्ती, चित्रक के समान कटुरस, कटुविपाक तथा उष्ण वीर्य होने पर भी विरेचक है, चित्रक नहीं। मधुयष्टि और द्राक्षा दोनों मधुर रस, मधुर विपाकी, शीतवीर्य होते हुए भी द्राक्षा मृदुविरेचक है, मधुयष्टि नहीं है। गुग्गुल एवं रसोन कटु रस, कटु विपाकी, स्निग्ध और गुरु होने पर भी वातकफ शामक है। शिरीष अपने प्रभाव से विषघ्न है।

द्रव्यारम्भक महाभूत के अनुरूप रस–वीर्य विपाकादि होने पर उन्हें *समान प्रत्ययारब्ध द्रव्य* कहते है तथा द्रव्यारम्भक महाभूतों के गुणों के अतिरिक्त रस, गुण, वीर्य, विपाक प्राप्त होने पर उस द्रव्य को *विचित्र प्रत्ययारब्ध* द्रव्य कहते हैं।

**

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कर्म

परिभाषा :—

क्रिया अर्थात् जो कुछ किया जाय, उसे कर्म कहते है। अन्य शब्दों में शरीर के दोष, धातु, मल, अग्नि, स्रोतों की विषम क्रियाओं अथवा विषमता को प्राकृत स्थिति में लाने के लिये प्रयुक्त द्रव्यों से जो विभिन्न क्रियायें सम्पन्न होती है; उन्हें कर्म कहते है। महर्षि चरक ने प्रवृत्ति, चेष्टा, कार्य, क्रिया, कर्म, समारम्भ, आदि शब्द एक ही अर्थ के लिये प्रयोग किये है।

कर्म के प्रकार—

1. स्थानिक कर्म— जिन द्रव्यों का प्रभाव स्थान विशेष पर होता है उन द्रव्यों के कार्यों को विशिष्ट या स्थानिक कर्म कहते है। जैसे— नेत्र, मुख, कण्ठ, कर्ण, आमाशय, गर्भाशय आदि अवयवों पर कार्य करने वाले द्रव्य। इसी प्रकार अंजन आश्च्योतन, लेपन, स्वेदन आदि बाह्य उपचार भी स्थानिक प्रभाव करते है।

2. सार्वदैहिक कर्म— द्रव्य द्वारा सारे शरीर पर जो कार्य किये जाते है; उन्हें सार्वदैहिक कर्म कहते हैं। जैसे बृंहण, रसायन, रक्त विशोधन आदि।

औषध विज्ञान के क्षेत्र में बहुप्रचलित कर्मों की व्याख्या नीचे दी जा रही है—

(i) दीपन— जो द्रव्य आम का पाचन नहीं करें, किन्तु भूख बढ़ाते हुये अग्नि को दीप्त करें, उन्हें दीपन कहते हैं। जैसे पिप्पली, पिप्पलीमूल, चव्य, चित्रक आदि।

(ii) पाचन— ये द्रव्य आम का पाचन करते है किन्तु जाठराग्नि का संधुक्षण नहीं, कर पाते हैं; जैसे— पपीते का दूध, वचा, हरिद्रा, नागर मोथा, धनिया, नाग केशर आदि।

(iii) स्तम्भन— पक्वाशय में वात की वृद्धि कर द्रव मल को गाढा करने को स्तम्भन कहते है। इन द्रव्यों में कषायरस, लघु, रुक्ष, शीत, गुरु गुण होते है; अन्य शब्दों में गतिमान द्रव्य को रोकना स्तम्भन कहलाता है; जैसे लोध्र, मांजूफल, श्योनाक, कुटज आदि।

(iv) ग्राही — आमांश अर्थात् अपक्वांश का पाचन कर द्रव मल को बांधना अर्थात् गाढ़ा करना ग्राही कर्म कहलाता है। इस प्रकार का कार्य करने वाले द्रव्य आग्नेय गुण प्रधान होते है। जैसे— सोंठ, जीरा, अजमोदा, जायफल आदि।

(v) रेचन— गुदामार्ग से दोषों को निकालना रेचन, विरेचन, अनुलोमन, अधो भागहर कहते है। इस कार्य को करने वाले द्रव्य-उष्ण-तीक्ष्ण-सर-सूक्ष्म विकासी-व्यवायी गुण भूयिष्ठ होते है। रेचन तीन प्रकार का होता है—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

1. सुखविरेचन— जैसे निशोथ।
2. मृदु विरेचन— जैसे अमलतास का गुदा, मुनक्का।
3. तीक्ष्ण विरेचन— जैसे स्नुहीक्षीर, जयपाल आदि।

(vi) अनुलोमन सर— पाचन क्रिया को बिना बाधा पहुँचाये दोषों का पाक करते हुये मल को अधोमार्ग से बाहर निकालना अनुलोमन कहलाता है; जैसे हरीतकी, द्राक्षा, विभीतक, ईसबगोल आदि।

(vii) स्रंसन— आंतों में चिपके हुये पच्यमान मल या दोषों को उसी रूप में मल द्वार की ओर प्रेरित करना स्रंसन कहलाता है। यह क्रिया अनुलोमन से तीव्र होती है; जैसे सनाय, अमलतास, एलुवा, रेवन्दचीनी, एरन्ड स्नेह आदि।

(viii) भेदन— आंत में जमे हुये ग्रंथित बद्ध या अबद्ध, मल को भेदन कर द्रव रूप में बाहर निकालना भेदन कहलाता हैं; जैसे कुटकी, निशोथ, अर्कक्षीर, दन्ती, इन्द्रायन आदि।

(ix) संशोधन— स्थानिक या सार्वदैहिक दोषों को ऊर्ध्व या अधो मार्ग से निकालना संशोधन कहलाता है। संशोधन दो प्रकार से किया जाता हैं। (i) बहिराश्रय जैसे शस्त्र, क्षार, अग्नि, प्रलेपादि (ii) आभ्यन्तर आश्रय जैसे वमन, विरेचन अनुवासन, आस्थापन, शिरो विरेचन, रक्तमोक्षण आदि।

(x) वमन या ऊर्ध्वभागहर— शरीर के ऊर्ध्व भाग अर्थात् मुख से ऊपर दोषों को बल पूर्वक निकालना वमन या ऊर्ध्वभागहरण कहलाता है; जैसे मदन फल, देवदाली, निम्ब, सरसों, वचा आदि।

(xi) वमनोपग— वमन कर्म में सहायता करने वाले द्रव्य वमनोपग कहलाते है; जैसे सैंधानमक, मुलैठी, शहद आदि।

(xii) विरेचनोपग— जो द्रव्य विरेचन कर्म में सहायता प्रदान करे वे विरेचनोपग कहलाते है; जैसे मुनक्का, गम्भारी फल, हरड़, बहेड़ा आदि।

(xiii) संशमन— जो द्रव्य दोषों का शोधन नहीं करें न ही समदोषों को प्रकुपित करें तथा बढ़े हुये या क्षीण दोषों को सम करें, उन्हें संशमन द्रव्य कहते है; जैसे गुडूची।

(xiv) लेखन— शरीर की धातुओं तथा कफ दोष को सूखाना तथा खुरचना लेखन कहलाता है; उदाहरणार्थ उष्णोदक, बिडङ्ग, चित्रक, बचा, शहद आदि।

(xv) मादक— बौद्धिक क्षमता को हीन कर मद उत्पन्न करें, वे द्रव्य मादक कहलाते है; जैसे भांग, अफीम, सुरा आदि।

(xvi) प्रमाथि— जो द्रव्य अपनी शक्ति से कर्ण, मुख, नासिका आदि बहिर्मुख

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्रोत तथा आभ्यन्तर स्रोतों के दोष संचय को दूर करें, वह प्रमाथि कहलाता है जैसे काली मिरच, वचा आदि।

(xvii) विकाशि— विकाशि द्रव्य जाठराग्नि द्वारा पाक होने से, पहले ही अपने प्रभाव से शरीर में व्याप्त होकर सन्धि बन्धनों को शिथिल कर देते है: जैसे सुपारी (कच्ची), कोदों आदि।

(xviii) व्यवायि— जो द्रव्य जाठराग्नि से पाक होने से पहले ही सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त हो जाते है तथा उसके बाद उनका पाक होता हो, उन्हें व्यवायि कहते है जैसे अफीम, भाँग, वत्सनाभ आदि।

(xix) सूक्ष्म— इस प्रकार के द्रव्य सूक्ष्मतम स्रोतों में भी प्रविष्ट होकर अपना प्रभाव दिखाते हैं; जैसे सैन्धव, मधु, तिल तैल, आदि।

(xx) योगवाही— इस प्रकार के द्रव्य अपने गुणों के साथ-साथ संसर्गी द्रव्यों के गुणों का भी वहन करते है; जैसे मधु, पारद आदि।

(xxi) बृंहण— शरीर को पुष्ट या मोटा करना बृँहण कहलाता है; जैसे मांस, विदारीकन्द, खर्जूर, बादाम, आम आदि।

(xxii) रसायन— ये द्रव्य रस रक्तादि धातुओं को बढ़ाकर बल, औज, मेधा वर्ण, स्वर को उत्कृष्ट बनाते है जैसे आमलकी, हरीतकी, गुग्गुलु, अमृता आदि।

(xxiii) वाजीकरण— घोड़े के समान मैंथुन शक्ति पैदा करने वाले द्रव्य वाजीकर द्रव्य कहलाते है, इन्हें वृष्य भी कहते है। ये चार प्रकार के होते हैं—

(1) शुक्रविवर्धन या शुक्रल जैसे अश्वगन्धा, शतावरी, विदारीकन्द, कौच आदि।

(2) शुक्रस्रुतिकर— जैसे अकलकरा, कस्तूरी, स्त्री संस्पर्श आदि।

(3) शुक्रस्रुतिवृद्धिकर जैसे उड़द, भल्लातक, दुग्ध आदि।

(4) शुक्र स्तम्भन— जैसे जायफल, जावित्री, अफीम आदि।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

द्वितीय अनुच्छेद

आयुर्वेदीय द्रव्य-परिचय

हरीतकी

पर्याय— संस्कृत– अभया, पथ्या, कायस्था, पूतना, अमृता, चेतकी, शिवा, वयस्था

हिन्दी– हर्र, हरड़, हर्रे

लेटिन– टर्मिनिलीया चेबुला (Terminalia chebula)

वानस्पतिक परिचय— हरीतकी के वृक्ष हमारे देश में प्रायः सब प्रान्तों में पाये जाते हैं। उत्तरी भारत में बहुलता से मिलता है, दक्षिणी भारत के मद्रास, कोयम्बटूर, गोदावरी की तलहटी, शतपुड़ा के पहाड़, कोङ्कण, मालाबार तथा विध्यांचल के पहाड़ों में पाये जाते है। इसके वृक्ष 60 से 100 फीट तक ऊंचे होते है, छाल कालापन लिये हुये भूरे वर्ण की होती है।

पत्र— पत्र महुए के पत्रों के समान तीन से आठ ईन्च तक लम्बे, अण्डाकार, कुछ नुकीले, सफेदीयुक्त हरे रंग के होते हैं। ये पत्र टहनियों पर दूर-दूर विषमवर्ती लगे हुए होते है।

पुष्प— दुर्गन्धित तथा आम की मंजरी के समान बारीक होते हैं, जिनका रंग पीलापन लिए हुए सफेद होता है।

फल— लम्बे व गोलाकार होने से यवाकृति बन जाती है। जिनके सूखने पर छिलके में पाँच सलवटें बन जाती है। आकृति, पुष्टता तथा छोटे बड़े के भेद से कई प्रकार देखने में मिलते है। कच्ची हरीतकी को सूखाकर यव हरीतकी या जौ हरड़ तैयार की जाती है।

उत्तम हरीतकी के लक्षण— पूरी पकी हुई, गोल, श्लक्ष्ण तथा भारी हरीतकी उत्तम होती है। जो प्रायः पाँच ग्राम वचन वाली तथा पानी में डालने पर डूब जाने वाली होती है। औषधीय प्रयोग में इन फलों के छिलके काम में लिये जाते हैं।

फल तथा गुणों के आधार पर हरीतकी की सात जातियां बतलाई गई है। जो निम्न है—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(1) विजया, (2) रोहिणी, (3) पूतना, (4) अमृता, (5) अभया, (6) जीवन्ती एवं (7) चेतकी। ये सब ही प्रकार वर्तमान में उपलब्ध नहीं है।

रासायनिक संगठन— गेलोटानिक एसिड, गेलिक एसिड, राल और गोंद के साथ टेनिन पाये जाते है।

गुण-धर्म—

रस— मधुर, अम्ल, कटु, कषाय और तिक्त ये पाँच रस होते है तथा कषाय रस प्रधान होता है, इसमें लवण रस नहीं होता है। (अलवणा-पंचरसा)।

गुण— रूक्ष, उष्ण, लघु, दीपन, मेध्य, रसायन, चक्षुष्य, आयुष्य, बृंहण, अनुलोमन।

वीर्य— उष्ण।

विपाक— मधुर।

प्रभाव— (क) दोषों पर— त्रिदोष शामक।

(ख) रोगों पर— विबन्ध, गुल्म, आध्मान, कृमि, उदरशूल, प्लीहा एवं यकृत के रोग, कामला, छर्दि, हृदयरोग, अश्मरी, श्वास, कास, प्रमेह, अर्शा, कुष्ठ, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात।

औषध मात्रा— 3 से 6 ग्राम।

विशिष्ट योग— (1) त्रिफला चूर्ण, (2) अभयादि मोदक, (3) अभया गुग्गुलु, (4) अभयारिष्ट, (5) अभया, (6) हरीतक्यादि क्वाथ, (7) हरीतक्यादि चूर्ण, (8) ब्राह्मरसायन, (9) हरड़ पाक, (10) हरड़ मुरब्बा, (11) हरीतकी चूर्ण, (12) हरीतक्यादि योग, (13) पथ्यादि क्वाथ, (14) फल त्रिकादि क्वाथ आदि।

विभीतक

पर्याय—

संस्कृत— अक्ष, कर्षफल, कलिद्रुम, भूतवाश, कलियुगालय।

हिन्दी— बहेड़ा, बहेरा, भेरा, फिनाश।

लेटिन— टरमीनेलिया बेलेरिका (Terminalia belerica)

वानस्पतिक परिचय— विभीतक के वृक्ष हमारे देश के लगभग सब प्रान्तों के पहाड़ों-जंगलों में पाये जाते हैं। जो प्रायः मध्यम ऊँचाई वाले पहाड़ो की तलहटी में पनपते है। इसके पड़ों की ऊँचाई 60 से 100 फीट तक होती है तथा तने मोटे सीधे तथा गोल होते है जिनकी छाल कुछ कालापन लिये हुये खाकी रंग की होती है।

पत्र— महुए के पत्र के समान आकृति वाले तीन से आठ इन्च तक लम्बे तथा दो से तीन इन्च चौड़े होते हैं।

पुष्प— नन्हें-नन्हें फूलों की मंजरिया दो से छः इन्च तक लम्बे वृन्तों पर लगी रहती है। ये पुष्प खाकी या मम हरे वर्ण के होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फल— अण्डाकार तथा लगभग एक इंच लम्बे होते हैं। इन्हीं का औषधीय प्रयोग किया जाता है। शुष्क होने पर छिलकों में सिलवटें पैदा हो जाती है। फलों में से निकलने वाली गुठली में से एक प्रकार का तैल भी निकाला जाता है।

रासायनिक संगठन— टेनिन, गेलोटोनिक एसिड, सोपोनिन, राल।

गुण-धर्म—

रस— कषाय, **गुण**— उष्ण, भेदन, रुक्ष, स्वर्य, चक्षुष्य, केश्य।

वीर्य— उष्ण, **विपाक**— मधुर।

प्रभाव— **दोष प्रभाव**— कफ पित्तशामक।

रोग प्रभाव— कृमि, स्वरभेद, कास आदि रोगों का शमन करता है।

मात्रा— 3 से 6 ग्राम।

विशिष्ट योग— (1) त्रिफला चूर्ण, (2) त्रिफला घृत, (3) विभीतक चूर्ण, (4) फलत्रिक क्वाथ एवं (5) विभीतक योग।

आमलकी

पर्याय—

संस्कृत— वयस्या, शिव, धात्रीफल, श्रीफल, अमृतफल, आमलक।

हिन्दी— आंवला, आमला, आमलकी।

लेटिन— फाईलेन्थस अम्ब्लिका (Phyllanthus emblica)

वानस्पतिक परिचय— आंवला के वृक्ष जंगलों में प्राप्त होंने के साथ-साथ उद्यानों में भी उगाये जाते है विशेषकर बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बंगाल तथा मध्य प्रदेश में। मध्यम ऊँचाई वाली पहाड़ियों तथा पथरीले जंगलों में इनके पेड़ प्राकृतिक रूप से मिलते है। वृक्ष मध्यम आकार वाले अर्थात् 40 से 60 फीट तक ऊँचे होंते है।

पुष्प— टहनियों से सटे हुए लाई के समान हरिताभ, पीत वर्ण के लगते है। इनमें नींबू के पुष्प की तरह भीनी सुगन्ध आती है।

फल— गोल, चमकीले, छः रेखाओं वाले, कच्चे हरे रंग के तथा पकने पर हरिताभ या रक्ताभपीत रंग के होते हैं। जो सूखने पर फट जाते है तथा रंग भी काला हो जाता है। जंगली आंवले के फल एक तोला या कम वजन के तथा बाग में उगाये हुए कलमी आँवले पाँच तोले से भी अधिक भार वाले देखे गये हैं। बनारसी आँवले सर्वोत्तम माने जाते है इनमें गुदा अधिक, रेशे कम तथा अधिक गुणकारी होते है। आंवलों में से छोटे-छोटे त्रिकोणाकार बीज निकलते हैं जिनमें से तैल भी निकाला जाता है।

रासायनिक संगठन— टेनिक एसिड, गेलिक एसिड, ग्लुकोज, टेनिन, एक्टिन एसकोंर्बिक एसिड, आइरन, केलृशियम।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण-धर्म—

रस— अम्ल, मधुर, कषाय।

गुण— रुक्ष, शीत, रसायन, बल्य, शोणितस्थापन।

वीर्य— शीत। **विपाक—** मधुर।

प्रभाव— दोष प्रभाव— अम्ल रस होने से वायु शामक, मधुर शीत, गुणों से पित्त शामक रुक्ष, कषाय होने से श्लेष्म शामक।

रोग प्रभाव— रसायन, बल्य, रक्तपित, उरःक्षत, त्वक्/ रोग, उच्च रक्त चाप, अम्लपित्त, अग्निमांद्य, अन्नद्रवशूल, परिणामशूल, यक्ष्मा, हृदयरोग, वृद्धावस्थाजन्य व्याधियों में उपयोगी है।

मात्रा— 3 से 6 ग्राम।

विशिष्ट योग— आमलकी चूर्ण, आमलकी रसायन, धात्रीलौह, च्यवनप्राश, त्रिफलाघृत आदि।

सौंठ

पर्याय— संस्कृत— शुण्ठी, महौषधि, विश्वा, विश्वभैषज, शृंग बेर।

हिन्दी— सूंठ, सौंठ।

लेटिन— जिंजी-बेर औफिसिनेली (Zingiber officinale)

परिचय— अदरख को सूखाकर सौंठ तैयार की जाती है इसके लिए सबसे पहले अदरख को साफ पानी या दूध में उबालकर सूखा ली जाती है, जिस सौंठ में रेशे बहुत कम होते हैं वह अच्छी समझी जाती है।

अदरख का वानस्पतिक परिचय—

भारत वर्ष के लगभग सभी प्रान्तों में उगाई जाती है। इसके गुल्माकृति पौधे होते हैं जो डेढ़ फीट तक ऊंचे होते हैं।

पत्र— बांस के पत्तों की तरह लम्बे अधिक तथा चौड़े कम होते है।

पुष्प— जामुनी रंग के होते है जो किसी पुराने पौधे पर दिखाई देते हैं।

कन्द— जड़ों में लगने वाली गाँठें या कन्द अदरक कहलाती है।

रासायनिक संगठन— एक उड़नशील तैल, जिंजरोल, जींजीरींन, रेजीन, स्टार्च।

गुण-धर्म—

रस— कटु। **गुण—** रुक्ष, तीक्ष्ण, उष्ण, गुरु, दीपन, रुचिकारक, वृष्य, स्वर्य।

वीर्य— उष्ण। **विपाक—** मधुर।

प्रभाव— दोष प्रभाव— वात, कफ शामक।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोग प्रभाव— अग्निमांद्य, विबन्ध, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर, कुष्ठ, पाण्डु, प्रसूतावस्था, श्वास, कास, शूल, हृदयरोग, वमन, अर्श तथा आमज व्याधियां।

मात्रा— 600 मि. ग्रा से 1 ग्राम।

विशिष्ट योग— त्रिकटु, चूर्ण, नागर चूर्ण, वैश्वानर चूर्ण, हरिद्रार्द्रकावलेह, सौभाग्य शुण्ठीपाक।

काली मिरच

पर्याय— संस्कृत— मरिच, वेल्लज, कृष्ण, उषण, धर्म पत्तन।
हिन्दी— मीरच, मीरिंच, काली मरिच, गोलमिरच।
लेटिन— पाईपर नाईग्रम (Piper nigrum)

परिचय— दक्षिणी भारत में उष्ण-आर्द्र क्षेत्रों में विशेषकर मालाबार, त्रावणकोर तथा खादर में पैदा की जाती है। आसाम, देहरादून, सहारनपुर, दार्जिलिंग तथा सिलहट में भी खेती की जाती है।

कालीमिरच की बेल होती है, जो पास में लगाये गये पैड़ों पर चढ़ाई जाती है।

पत्र— 5'' से 7'' लम्बे तथा दो से पाँच इन्च चौड़े गोल नुकीले, पान के पत्ते के समान होते हैं।

फल— कच्ची अवस्था में हरे रंग के तथा कम चरपरे होते हैं। पक जाने पर इनका लाल रंग हो जाता है। फल गुच्छों में लगते हैं, जिन्हें तोड़कर सूखालेने पर रंग काला हो जाता है। पूर्वी प्रांतों की मरिच की अपेक्षा दक्षिणी भारत की मरिच अधिक तीक्ष्ण एवं गुणदायक होती हैं।

रासायनिक संगठन— वसा, पाइपरी, पाइपरीडीन, स्टार्च, चवीसीन आदि।

गुण-धर्म—

रस— कटु।

गुण— उष्ण, तीक्ष्ण, रुक्ष, दीपन, पाचन।

वीर्य— उष्ण।

विपाक— कटु।

प्रभाव— दोष प्रभाव— कफ वात शामक।
रोग प्रभाव— श्वास, शूल, कृमि, अग्निमांद्य, आनाह, गुल्म, शीतपित्त, कण्डु, दृष्टिमांद्यनाशक।

मात्रा— 500 मि. ग्रा. से 1 ग्राम तक।

विशिष्ट योग— त्रिकटु चूर्ण, मरिच चूर्ण, मरिच्यादि तैल, मरिच्यादिवटी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पीपल

पर्याय— संस्कृत— पिप्पली, मागधी, कृष्णा, वैदेही, चपला, कणा, उष्णा, उपकुल्या।

हिन्दी— पीपर, पीपल, लिंढी पीपल।

लेटिन— पाईपर लोंगम (Piper longum)

परिचय— नेपाल से आसाम तक की पर्वत श्रृंखला तथा खासीया के पहाड़ों में बंगाल तथा ट्रावनकोर में पाई जाती है। पीपल की लता अधिक लम्बाई तक नहीं फैल पाती है।

पत्र— 2 से 3 इन्च की परिधि में गोलाकार तथा कोमल होते है।

फल— एक से डेढ़ इन्च लम्बा और गोल होता है।

रासायनिक संगठन— पाइपरीन, पाइपरीडीन, क्षार, वसा, स्टार्च, राल तथा उड़नशील तैल।

गुण-धर्म—

रस— कटु रस।

गुण— अनुष्ण, स्निग्ध, लघु।

वीर्य— अनुष्ण।

विपाक— मधुर।

प्रभाव— दोष प्रभाव— वात कफ नाशक।

रोग प्रभाव— श्वास, कास, उदर रोग, ज्वर, कुष्ठ, प्रमेह, अर्श, प्लीहा, शूल, आमवातनाशक।

मात्रा— 250 से 500 मि. ग्रा. तक।

विशिष्ट योग— चौंसठ प्रहरी पिप्पली, पीप्पल्यादि लोह, पिप्पल्यासव, त्रिकटु चूर्ण आदि।

पीपरामूल

पर्याय— संस्कृत— ग्रन्थिक, पिप्पली मूल, ऊषण, चटकाशिर।

हिन्दी— पीपरामूल, पीपलामूल।

लेटिन— पाइपर लोंगम (रूट) (Piper longum Roote)

पीपल की लता की जड़ को पीपरामूल कहते है।

गुण-धर्म—

रस— कटु, **गुण—** उष्ण, लघु, तीक्ष्ण।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वीर्य— उष्ण **विपाक—** कटु।

प्रभाव— दोष प्रभाव— वात कफशामक, वेदनाशामक।

रोग प्रभाव— आनाह प्लीह, गुल्म, कृमि, श्वास, क्षय, कृच्छ्रार्तव, मूढ़र्मे।

मात्रा— 500 मि. ग्रा से 2 ग्राम तक।

योग— अमर सुन्दरी, प्रसन्ना (अर्श एवं भगंदर में क्षारसूत्रावचारण नामक पुस्तक से।)

चव्य

पर्याय— संस्कृत— चविका, ऊषण।

हिन्दी— चाब, चाभ, चब।

लेटिन— पाइपर चब (Piper chaba)

परिचय— यह एक संदिग्ध द्रव्य है। कुछ विद्वान् काली मिरच की बेल को ही चव्य मानते है, किन्तु उक्त दोनों मत उचित नहीं है। डा. कीर्तिकर और वसु ने चव्य का वर्णन इस प्रकार बताया है—

वानस्पतिक परिचय— लता पर किसी प्रकार के रोम नहीं होते हैं तथा शाखायें निकटस्थ वृक्षपर खूब लिपटती हुई चढती है। ये शाखायें सूख जाने पर पीताभ श्वेत रंग की हो जाती है।

पत्र— 5 से 7 इन्च लम्बे, दो से साढे तीन इन्च चौड़े नुकीले अण्डाकार होते हैं। इनकी ऊपरी सतह चमकीली होती है।

पुष्प एवं फल— चौथाई इन्च मोटे, डेढ इन्च लम्बे वृंत्तों पर गुच्छों के रूप में पुष्प और फल लगते है। फल छोटे तथा अण्डाकार होते है।

रासायनिक संगठन— पाइपरीन, पाइपरीडीन, चवीसीन, स्टार्च वसा आदि।

गुण-धर्म— इसके गुणधर्म पीपरामूल की भांति होते है। चव्य का विशिष्ट प्रभाव अर्श पर है।

मात्रा— 500 मि. ग्रा. से 2 ग्राम तक।

योग— षड्रूषण चूर्ण।

चित्रक

पर्याय— संस्कृत— चित्रक, अग्नि के सभी पर्याय, ऊषण।

हिन्दी— चीता, चित्रा, चित्ता।

लेटिन— प्लम्बेगो जिलेनिका (Plumbago zeylanica)

परिचय— सामान्यतया सभी प्रान्तों में मिलने वाला मध्यमाकार क्षुप है जो सफेद, लाल और काले फूलों की दृष्टि से तीन प्रकार के होते है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्वेत चित्रक— यह दो से पाँच फीट ऊँचा क्षुप होता है, ग्रीष्म ऋतु में पत्ते झड़ जाने से कम दिखाई देता है। वर्षा ऋतु में क्षुप हरा भरा हो जाता है।

पत्र— एक से डेढ इन्च चौड़े, अण्डाकार, नुकीले चिकने और कोमल, डेढ से तीन इन्च लम्बे पत्र होते है।

पुष्प— चमेली के फूल के समान सफेद तथा शरद ऋतु में लगते है। इनके बीचकोष यवाकार लम्बे, कच्चे हरे, पकने पर धूसर रंग के होते है। इनको तोड़ने से चिपचिपाहट पैदा होती है।

लाल चित्रक— औषधि प्रयोग में यही चित्रक अधिक उपयोग में आता है। चित्रक का यह प्रकार कम पाया जाता है। दो से चार फीट ऊँचा क्षुप होता है।

पत्र— गोल, विषमवर्ती तथा सीधे तने से लगे रहते है।

पुष्प— लाल रंग के।

काला चित्रक— काला चित्रक लाल चित्रक की तरह ही क्षुप होता है किन्तु झाड की तरह फैलता है।

पुष्प— नीले रंग के होते है।

रासायनिक संगठन— दाहक तत्व प्लाम्बेजीन।

गुण-धर्म—

रस— कटु। **गुण—** लघु, रुक्ष, उष्ण, पाचन, दीपन।

वीर्य— उष्ण। **विपाक—** कटु।

प्रभाव— दोष प्रभाव— त्रिदोषनाशक।

रोग प्रभाव— ग्रहणी, कुष्ठ, शोथ, अर्श, कृमि नाशक, स्थौल्य।

मात्रा— 250 से 500 मि. ग्रा.।

विशिष्ट योग— चित्रकादिवटी, चित्रकहरीतकी, अग्निसंदीपन चूर्ण, वातारिपाक आदि।

बड़ी इलायची

पर्याय— संस्कृत— एला, स्थूला, बहुला, पृथ्विका, त्रिपुटा, भद्रएला, बृहद्एला, चन्द्रबाला, निष्कुटि।

हिन्दी— बड़ी इलायची, पूर्वी इलायची, लाल इलायची।

लेटिन— एमोमम शबलेटम (Amomum subulatum)

परिचय— पूर्वी हिमालय, तथा मालाबार में अधिक़तर प्राप्त होती है। बड़ी इलायची का क्षुप आमा हल्दी के समान होता है। जिसकी जड़ों में कन्द बनते हैं।

पत्र— एक से दो फीट लम्बे तथा तीन से चार इन्च चौड़े नुकीले होते है पत्रवृन्त भी 3 से 4 फीट तक ऊंचा होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बीज— काले रंग के एवं सुगन्धित होते हैं।

रासायनिक संगठन— एक प्रकार का उड़नशील सुगन्धित तैल मिलता है।

गुण-धर्म—

रस— कटु। **गुण**— लघु, रुक्ष, उष्ण, दीपन।

वीर्य— उष्ण। **विपाक**— कटु।

प्रभाव— दोष प्रभाव— कप पित्त शामक।

रोग प्रभाव— रक्त विकार, कण्डू, श्वास, तृषा, हल्लास, मूत्रकृच्छ्र, छर्दिनाशक।

मात्रा— 500 मि. ग्रा. से 1 ग्राम।

छोटी इलायची

पर्याय— संस्कृत— सूक्ष्मा, त्रुटि, सुक्ष्मएला, कोरङ्गी।

हिन्दी— छोटी इलायंची, गुजराती-इलायची, सफेद इलायची।

लेटिन— इलेक्टरीया कार्डेमोमम (Elacttaria cardamomum)

परिचय— छोटी इलायची के क्षुप अदरख के समान होते हैं। इनकी जड़ों के नीचे कन्द रुप में लगती है। ये क्षुप पश्चिमी घाट तथा मालाबार में उगाये जाते है। अन्यत्र भी इलायची के क्षुप लगाये जाते है किन्तु फल नहीं लगते हैं।

पत्र— 3" इन्च चौड़े तथा 1 से 2 फीट लम्बे होते हैं।

पुष्प— औष्ठ युक्त नलिकाकार होते है।

बीज— कृष्णाभ, घूसर रंग के तथा सुगन्धित होते है।

रासायनिक संगठन— स्थिर एवं उड़नशील तैल, पोटेशियम तथा पीले रंग का द्रव्य मिलता है।

गुण-धर्म—

रस— **कटु**। गुण— लघु, शीत, पाचन।

वीर्य— शीत। **विपाक**— मधुर।

प्रभाव— दोष प्रभाव— कफ वात नाशक।

रोग— मूत्रकृच्छ्र, अर्श, कास, श्वासनाशक, वमन, तृषा आदि।

मात्रा— 500 मि. ग्रा. से 1 ग्राम।

विशिष्ट योग— एलादिचूर्ण, एलादिवटी, एलादिमोदक, च्यवनप्राश आदि सब ही महत्वपूर्ण अवलेह तथा पाकों में प्रक्षेप रूप में डाली जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दालचीनी

पर्याय— संस्कृत— तनुत्वक्, दारुसिता, स्वाद्वी, त्वक्।

हिन्दी— दालचीनी, दारचीनी।

लेटिन— सिन्नामोमम झिलानिकम। (Cinnamomum zeylanicum)

परिचय— समुद्री टापुओं पर उगने वाले दालचीनी के वृक्ष तज के समान होते है। लङ्का, जावा, सुमात्रा, कोचीन, मालाबार में अधिकतर पाये जाते है। दालचीनी इन वृक्षों की छाल से प्राप्त की जाती है। जिसमें पतले-पतले कई स्तर लिपटे रहते है।

पत्र— तेजपात के समान चमकीले तथा चिकने अण्डाकार होते हैं।

पुष्प— भूरे रेशम के समान कोमल होते हैं।

फल— नीले, लाल रंग के करौंदे के समान होते है।

रासायनिक संगठन— शर्करा, स्टार्च, सिनेमिक एसिड तथा उड़नशील तैल।

गुण-धर्म—

रस— मधुर। **गुण—** लघु, दीपन, पाचन, उष्ण, शुक्रल, बल्य, सुगन्धित।

वीर्य— उष्ण। **विपाक—** कटु।

प्रभाव— दोष प्रभाव— वात पित्त नाशक।

रोग प्रभाव— मुखशोष, तृषा, छर्दि, अरुचि।

मात्रा— 500 मि. ग्रा. से 1 ग्राम।

विशिष्ट योग— सितोपलादि चूर्ण, तालिसादि चूर्ण एवं मोदक आदि।

तेजपात

पर्याय— संस्कृत— तमालपत्र, पत्रवाचीशब्द।

हिन्दी— तेज पातर, तेजपत्ता।

लेटिन— सिनेमोमम टमाल (Cinnamomum tamala)

परिचय— वर्ष भर हरा भरा रहने वाला सुगन्धित मध्यमाकार वृक्ष हिमालय पर्वत श्रृंखला के साधारण गरम प्रान्तों में जैसे भूटान, सिक्कीम, सिलहट, खासिया एवं सिन्ध में मिलते हैं।

पत्र— चार से पाँच इन्च लम्बे तीन सिराओं वाले अनियमित चौड़ाई के होते है। दालचीनी, तज, तेजपात और शीतल चीनी के पत्ते एक जैसे होने पर भी अलग-अलग है।

पुष्प— 1/4 इन्च की परिधि वाले गोल होते है। फल काले रंग के होते है।

रासायनिक संगठन— एक प्रकार का विशिष्ट रंग तथा उड़नशील तैल पाया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण-धर्म—

रस— मधुर। **गुण—** किंचित्, तीक्ष्ण, पिच्छिल लघु।

वीर्य— उष्ण। **विपाक—** मधुर।

प्रभाव— दोष प्रभाव— कफ वात शामक।

रोग प्रभाव— अर्श, हृल्लास, अरुचि तथा प्रतिश्याय श्वास नाशक।

मात्रा— 500 मि. ग्रा. से डेढ ग्राम तक।

विशिष्ट योग— तालीसादि चूर्ण एवं मोद, प्रक्षेप रूप में अवलेह तथा पाकों में प्रयुक्त।

नाग केशर

पर्याय— संस्कृत— नाग केशर, नाग पुष्प, चांपेय, नागकिंजल्क।

हिन्दी— नागकेसर, नागेसर।

लेटिन— Mesua ferrea (मेसुआ फेरिआ)।

वानस्पतिक परिचय— नाग केशर के वृक्ष सदाबहार होते है जो अधिकतर आसाम, बर्मा, श्रीलंका, बंगलादेश में मिलते है।

पत्र— डेढ इन्च चौड़े नुकीले 2'' से 6'' तक लम्बे, झुके रहते है।

पुष्प— वसन्त ऋतु में सफेद या नारंगी रंग के 2'' से 4'' की परिधि में गोल लगते हैं। सफेद पुष्पों वाले वृक्ष अधिक मिलते हैं। नारङ्गी रंग के फूलों के वृक्ष कम मिलते है। इन्हीं नारङ्गीं रंग के फूलों की केशर को नागकेशर कहते है। नाग केशर के सुगन्धयुक्त फूलों में हल्के लाल रग के फल लगते है। शीतल चीनी के समान गोल नाग केशर जो बाजार में मिलती है वह नकली हैं।

रासायनिक संगठन— हल्के पीले रंग का सुगन्धित तैल जाति की राल।

गुण-धर्म—

रस— कषाय। **गुण—** रुक्ष, लघु, उष्ण, आमपाचन, रक्तस्कन्दन।

वीर्य— उष्ण। **विपाक—** कटु।

प्रभाव— दोष प्रभाव— कफ पित्तशामक।

रोग प्रभाव— ज्वर, तृषा, छर्दि, हृल्लास, अतिस्वेद, कण्डू, रक्तस्त्राव, रक्त प्रदर, रक्तार्श।

मात्रा— 1 से 2 ग्राम।

विशिष्ट योग— नागकेशरादियोग, नागकेशर चूर्ण, पुष्यानुग चूर्ण।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बिल्व

पर्याय— संस्कृत— शाण्डिल्य, शैलूष, मालूर, श्रीफल।
हिन्दी— बेल, श्रीफल।
लेटिन— एगल मार्मलोश (Aegle marmelos)

वानस्पतिक परिचय— लगभग 50 फीट ऊंचे मध्यमाकार वृक्ष होते हैं जो देश के लगभग सभी प्रांतों में पैदा होते है। विशेषकर राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बंगाल, बिहार, बर्मा, श्रीलंका आदि प्रदेशों एवं देशों में मिलते है। इसकी शाखाओं पर एक इन्च तक लम्बे, तीखे एवं सीधे कांटे होते है।

पत्र— कसोंदि (कासमर्द) के पत्ते के समान नुकीले, लम्बे, गाढे हरे रंग के होते है। प्रत्येक वृन्त पर 3-3 पत्ते लगते है कभी-कभा 5 के ।। पत्ते भी देखे गये है इनमें से मधु के समान भीनी-भीनी गन्ध निकलती है।

पुष्प— बसन्त ऋतु में सफेद रंग के सुगन्धित पुष्प लगते है।

फल— गोल तथा कई आकारों के लगते हैं जो 2 से 3 किलो तक भारी देखे गये है। बिल्ब फल के छिलके कठोर, कच्चे हरे तथा पकने पर पीले होते है। गूदा के बीच में बीज रहते है, पके फल मीठे लगते है। औषधि प्रयोग में साधारणतया कच्चा बिल्ब फल ही काम में लिया जाता है।

रासायनिक संगठन— शर्करा, पेक्टिन, टेनिन, तिक्त, गोंद, मार्मेस्नेलीन।

गुण-धर्म—

रस— कषाय, तिक्त, **गुण—** ग्राही, रुक्ष, लघु, उष्ण, बल्य, पाचक, शोथघ्न।
वीर्य— उष्ण। **विपाक—** कटु।
प्रभाव— दोष प्रभाव— वात कफनाशक।
रोग प्रभाव— प्रवाहिका, आमातिसार, अग्निमांद्य, ग्रहणी।
मात्रा— 3 से 6 ग्राम।
विशिष्ट योग— बिल्वादि चूर्ण, धान्यपञ्चक क्वाथ, दशमूल क्वाथ, बिल्व मुरब्बा।

कण्टकारी

पर्याय— संस्कृत— कण्टकारी, दुःस्पर्शा, व्याघ्रि, निदिग्धिका, कण्टकीनी।
हिन्दी— कटेरी, कण्टकारी, भटकटैया, रेंगनी कंटाली।
लेटिन— सेलिनम सुराटेन्स Solanum surattense)

वानस्पतिक परिचय— कण्टकारी पृथ्वी पर छत्ते के समान लगभग साढे तीन से साढे पाँच फीट तक घेरे में फैली हुई रहती है। यह लगभग सभी प्रकार की मिट्टी में पैदा होती है। किन्तु रेतीली मिट्टी में अधिक देखी जाती है। पूरे पौधे पर तीक्ष्ण कांटे लगे रहते है। सफेद रंग की कण्टकारी बहुत कम मिलती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पत्र— एक इन्च चौड़े, 3 से 8 इन्च तक लम्बे तथा ऊंट कटेरे के समान अनियमित कटे फटे होते है। पत्ते के हर कोण पर तीक्ष्ण कांटे लगे रहते है।

पुष्प— बैंगन के समान घण्टाकृति, बैंगनी या सफेद रंग के होते है।

फल— गोल, छोटे बैंगन के समान जिनमें से छोटे बीज निकलते है।

रासायनिक संगठन— पोटेशियम नाइट्रेट, पोटेशियम क्लोराइड, आइरन, आर्गैनिक एसिड, सोलेनील एल्कलाइड।

गुण-धर्म—

रस— तिक्त, कटु। **गुण**— लघु, रुक्ष, उष्ण, पाचक, दीपन।

वीर्य— उष्ण। **विपाक**— कटु।

प्रभाव— दोष प्रभाव— कफ वातशामक।

रोग प्रभाव— कास, श्वास प्रतिश्याय, पार्श्वशूल, कृमि, हृद्रोग।

विशिष्ट योग— वासाकण्टकारी क्वाथ, कण्टकार्यवलेह, कण्टकारी क्षार।

बड़ी कटेरी

पर्याय— संस्कृत— वार्ताकी, क्षुद्रभण्टाकी, महती, वृहति, हिंगुली, राष्ट्रीका।

हिन्दी— वनभण्टी, बड़ी कटेरी, जंगली बैंगन।

लेटिन— सोलेनम इडिंकम (Solanum indicum)

वानस्पतिक परिचय— बड़ी कटेरी का क्षुप, भारत के लगभग सभी प्रान्तों के ठण्डे प्रदेशों में अधिक मिलते है। इसका क्षुप बैंगन के समान डेढ से साढे चार फीट ऊंचा अनेक शाखाओं वाला टेढे कांटों से भरा हुआ होता है।

पत्र— 1 से 4 इन्च तक चौड़े तथा 1 से 6 इन्च तक लम्बे अनियमित कटे-कटे किनारों वाले बेंगन के पत्तों के आकार के होते है, इनके ऊपरी पृष्ठ पर भी कांटे लगे रहते है।

पुष्प— बैंगनी रंग के होते है। जिनमें पाँच पंखुडियां एवं सूक्ष्म केशर होती है।

फल— कच्चे हरे एवं पकने पर पीले रंग के आंवले के समान गोल फलों पर सफेद छींटे लगे हुए होते है। जिनको तोड़ने पर लाल मरिच के बीज जैसे अनेक बीज निकलते है।

गुण-धर्म—

रस— कटु, तिक्त। **गुण**— संग्राही, उष्ण, दीपन।

वीर्य— उष्ण। **विपाक**— कटु।

प्रभाव— दोष प्रभाव— कफ वातनाशक।

रोग प्रभाव— शूल, कास, श्वास, मन्दाग्नि, कुष्ठ, ज्वर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मात्रा— 10 से 20 ग्राम तक।

विशिष्ट योग— - दशमूल क्वाथ, लघु पंचमूल क्वाथ, दशमूलारिष्ट।

गोक्षुर

पर्याय— संस्कृत— गोक्षुर, क्षुरक, त्रिकण्ट, स्वादु कण्टक, गो कण्टक, गोक्षुरक, वन शृंगाट, स्वदंष्ट्रा।

हिन्दी— गोखरु, गोखलु, हर विकार।

लेटिन— ट्रिब्युलस टेरेस्ट्रीस (Tribulus terrestris)

छोटे गोखरु का वानस्पतिक परिचय—

यह गोखरु एक भू विसर्पीवनौषधि है, जो सब ही प्रान्तों में विशेषकर बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान तथा मद्रास में पाये जाते है। इसका तना डेढ से 2 फीट लम्बाई में तथा 3 से साढे चार फीट के घेरे में फैला रहता है।

पत्र— इमली के पत्तों की आकृति जैसे किन्तु कुछ छोटे होते है। तने के दोनों ओर 1'' से डेढ इन्च के अन्तर पर एक-एक वृन्त होता है। जिन पर 5 से 6 जोड़े पत्ते लगे रहते हैं।

पुष्प— पीले रंग के छोटे तथा पाँच दल वाले होते हैं।

फल— पाँच दल वाले होते हैं जो शुष्क होने पर त्रिकोणाकार अलग हो जाते है इन पर 3 से 5 कांटे होते है।

बड़े गोखरु का वानस्पतिक परिचय— बड़ा गोखरु या वन सिंघाड़ा का एक क्षुप होता है जो प्रायः: समुद्री किनारे रेतीली या पथरीली भूमि में पाये जाते है। गुजरात, राजस्थान तथा श्रीलंका में पाये जाते है।

पत्र— छोटे गोखरु की अपेक्षा थोड़े अधिक नुकीले तथा सदल होते है।

फल— कच्चा फल हरे रंग का होता है। पकने पर पीला तथा सूखने पर मटमेले रंग का हो जाता है। यह चौकोर होने से चारों कोनों पर एक-एक कांटा लगा रहता है।

रासायनिक संगठन— क्षार, राल, नाइट्रेटस, तथा उड़नशील तैल।

गुण-धर्म—

रस— मधुर। **गुण—** शीत, बल्य, दीपन, पुष्टिकारक।

वीर्य— शीत। **विपाक—** मधुर।

प्रभाव— दोष प्रभाव— वात शामक।

रोग प्रभाव— अश्मरी, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, हृद्रोग, अर्श, श्वास कासनाशक।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मात्रा— 1 से 3 ग्राम।

विशिष्ट योग— गोक्षुरादि चूर्ण, गोक्षुरादि गुग्गुलु, गोक्षुरादि मोदक, त्रिकण्टकादि क्वाथ।

अजवायन

पर्याय— संस्कृत— यवानिक, ब्रह्मदर्भा, अजमोदिका, दीप्यका, दीप्या।

हिन्दी— अजबाईन, अजमायन, अजवा।

लेटिन— कारम कोकटिकम् (Carum copticum)

वानस्पतिक परिचय— अज़वायन की हमारे देश में प्राय: प्रत्येक प्रांत में खेती की जाती है। इसका क्षुप होता हैं जों 1 से 3 फीट तक ऊंचा होता है।

पत्र— डालियों पर दूर-दूर लगने वाले तथा धनिये के पत्ते की तरह कटे-फटे होते हैं।

पुष्प— छोटे-छोटे तथा सफेद रंग वाले छत्र की तरह होते हैं।

फल— छोटे-छोटे बारीक़ सुगंधित तथा परिखाओं वाले होते हैं।

रासायनिक संगठन— साइमोंन टर्पेन तथा तेज सुगन्धित उड़नशील तैल।

गुण-धर्म—

रस— कटु, तिक्त। **गुण**— लघु, उष्ण, तीक्ष्ण, रुचिकारक, दीपन, अनुलोमन।

वीर्य— उष्ण। **विपाक**— कटु।

प्रभाव— दोष प्रभाव— वात कफ शामक।

रोग प्रभाव— उदर रोग, आनाह, गुल्म, प्लीहा तथा उदरशूल, कृमिनाशक, प्रसूतावस्था में विशेष प्रभावी, गर्भाशय शोधक।

मात्रा— 500 मि. ग्रा. से 1 ग्राम तक।

विशिष्ट योग— अजमोदादि चूर्ण, अर्क अजवायन, कर्पूर धारा।

खुरासानी अजवायन

पर्याय— संस्कृत— पारसीक यवानी।

हिन्दी— खुरासानी।

लेटिन— हायोस्यामस नाइगर (Hyoscyamus niger)

वानस्पतिक परिचय— खुरासानी अजवायन के क्षुप पारस की खाड़ी के आस-पास वाले योरोपीय देशों तथा मध्य एशिया में अधिकतर पाये जाते है। भारत में कश्मीर से गढवाला तक सहारनपुर, पूना, आगरा तथा अजमेर के आस-पास खेती की जाती है।

पत्र— धत्तूरे के पत्तों के समान लम्ब-गोल, झालरदार किनारीवाले होते हैं, इन पत्तों के वृन्त नहीं होने से सीधे शाखाओं से लगे रहते है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्प— क्षुप की ऊर्ध्व शाखा में पीले रंग के पुष्प लगते है जो तम्बाखू के पुष्पों के समान आकार वाले तथा पाँच पुष्प दलों पर जामुनी रंग की रेखायें होती है।

फल— गोल, अण्डाकार दो हिस्सों में बंटे हुए होते है। जिनमें छोटे-छोटे हल्के लाल रंग के मटमैले बीज निकलते है जो गोल चपटे होते है। इन्हें ही खुरासानी अजवायन कहते हैं। कुछ विद्वान् खुरासानी अजवायन के सफेद, काली और लाल रंग भेद से तीन प्रकार बताते है।

रासायनिक संगठन— हायौसाइमिन, हायोसीन, एट्रोपिन, कोलीन, पोटेशियम नाइट्रेट।

गुण-धर्म—

रस— कटु। **वीर्य**— उष्ण।

गुण— गुरु, उष्ण, तीक्ष्ण, पाचक, ग्राही, मादक, कृमिघ्न।

विपाक— कटु।

प्रभाव— दोष प्रभाव— पित्त वर्धक।

रोग प्रभाव— उन्माद, अपस्मार, अनिद्रा, कृमि।

मात्रा— 125 मि.ग्रा. से 500 मि.ग्रा. तक चिकित्सक के परामर्श के अनुसार।

विशिष्ट योग— मांस्यादि क्वाथ।

अजमोदा

पर्याय— संस्कृत— अजमोदा, खराश्वा, मायूरी, दीप्यक, कारवी।

हिन्दी— अजमोद, अजमोदा, अजमूदा।

लेटिन— कारमराक्स वर्घियानम् (Carumrox burghianum)

वानस्पतिक परिचय— इसके क्षुप अजवायन से बड़े होते है तथा पत्र-पुष्पादि अजवायन की भांति।

गुण-धर्म— अजवायन के समान।

रासायनिक संगठन— गन्धक, गौंद, राल, ग्लुकोसाइड तथा हल्के पीले रंग का उड़नशील तैल।

बच

पर्याय— संस्कृत— वचा, उग्रगन्धा, षड्ग्रन्था, गोलोमी, शतपर्विका, क्षुद्रपत्री, मंगल्या, जटिला, उग्रा।

हिन्दी— वच, घोरवच।

लेटिन— एकोरस केलेमस (Acorus calamus)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वानस्पतिक परिचय— भारत में मणिपुर, नागालैण्ड तथा उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त मध्य एशिया के दल-दली एवं सजल स्थानों में प्राय: प्राप्त होते है। बचा के गुल्म साढे चार से 6 फीट तक ऊँचे होते हैं।

पत्र— लम्बे, गोल ईख के समान होते है। इसके फूल नहीं लगते है, पूरे पौधे में से विशिष्ट गन्ध निकलती है।

मूल— कई शाखा-प्रशाखा तथा पतले-पतले रेशों वाली जटायुक्त होती है। बीच-बीच में गांठे बनी होती है। इन जड़ों में तेज गन्ध होने से उग्रगन्धा भी कहते है।

रासायनिक संगठन— असारिल, एर्डिहाइड, एकोरिन, केफिन, केलामाईन, स्टार्च, गौंद, एवं कैसला द्रव्य।

गुण-धर्म—

रस— तिक्त, कटु। **गुण**— उष्ण, दीपन, पाचन।

वीर्य— उष्ण। **विपाक**— कटु।

प्रभाव— दोष प्रभाव— वात कफघ्न।

रोग प्रभाव— अपस्मार, उन्माद, भूत बाधा, कृमि।

मात्रा— 250 मि.ग्रा. से 1 ग्राम।

विशिष्ट योग— वचाघृत, सारस्वत चूर्ण आदि।

पारसीक वच

इसे खुरासानी वच भी कहते है। ईरान के सजल तथा रेतीले क्षेत्र में अधिकतर पाई जाती है। क्षुप वचा के समान होते है किन्तु रंग गहरा सफेद होता है। गुण धर्म प्रभाव आदि वचा के समान होते है।

कुलिञ्जन

पर्याय— संस्कृत— सुगन्धा, उग्रगन्धा।

हिन्दी— कुलञ्जन, कुलिञ्जन, महाभरीवच।

लेटिन— अल्पीनीया गेलङ्गा (Alpinia galanga))

वानस्पतिक परिचय— जावा, सुमात्रा तथा भारत में बंगाल, मालाबार, गोवा के जंगलो में पाया जाता है। इसका क्षुप 6 से 7 फीट ऊँचा आमा हल्दी के समान होता है।

पत्र— एक से 2 फीट लम्बे 4'' से 6'' चौड़े, नुकीले, अण्डाकार चिकने होते है।

पुष्प— छोटे-छोटे होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फल— 2 से.मी. परिधि वाले, गोल, नारंगी रंग के।

जड़— गांठदार सुगन्धित होती हैं।

कुछ विद्वान कुलिञ्जन की द्राक्षा के समान पत्तों वाली बेल मानते है एवं कुछ ताम्बूल की जड़ को ही कुलिञ्जन मानते हैं।

रायानिक संगठन— यूजीनोल, सिनोल, मिथाइल, सिनामेट, एलपिनींन।

गुण-धर्म—

रस— कटु तिक्त। **गुण**— विशद, रुच्य, स्वर्य।

वीर्य— अनुष्ण। **विपाक**— कटु।

प्रभाव— **दोष प्रभाव**— कफ शमन।

रोग प्रभाव— कण्ठ, मुख एवं स्वरयन्त्र के रोग, हृद् रोग, अरुचि।

मात्रा— 500 मि.ग्रा. से 2 ग्राम।

चोपचीनी

पर्याय— संस्कृत— द्विपान्तर वचा।

हिन्दी— चोपचीनी, तोपचीनी, चोबचीनी।

लेटिन— स्माईलक्स चाईना (Smilax china)

वानस्पतिक परिचय— चीन देश में उत्पन्न होने वाली वचा की एक जाति है, हिमालय के गरम पहाड़ियों जैसे– आसाम, बंगाल, चिटगांव, सिलहट में भी अब पाई जाती है। बहुत फैलने वाली लता के डंठल गोल व मजबूत होते है।

पत्र— अण्डाकार, नुकीले 6'' से 18'' इन्च तक लम्बे चौड़े होते है।

पुष्प— गुच्छों में लगते है।

फल— डेढ इन्च तक गोल परिधि वाले होते है जिनमें से एक दो बीज निकलते है।

जड़— दृढ़ रक्ताभ होती हैं, यही औषध प्रयोग के काम में लाई जाती है।

रायानिक संगठन— वसा, शर्करा, सेपोनीन, गौंद, स्टार्च रंगीन पदार्थ।

गुण-धर्म—

रस— तिक्त। **गुण**— उष्ण, दीपन, मलमूत्रादिशोधन।

वीर्य— उष्ण। **विपाक**— कटु।

प्रभाव— **दोष प्रभाव**— वात कफघ्न।

रोग प्रभाव— वात व्याधि, फिरङ्ग, उपदंश, अपस्मार, उन्माद, नाभिशूल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मात्रा— 500 मि.ग्रा. से 1 ग्राम।

विशिष्ट योग— चोपचीन्यादि चूर्ण, वातारिपाक।

वायविडङ्ग

पर्याय— संस्कृत— बिडङ्ग, कृमिघ्न, जन्तुनाशन, तण्डुल, वल्ल, अमोघा, चित्र तण्डुला।

हिन्दी— वायविडङ्ग, वायविडंग।

लेटिन— अम्बेलिया रिबिस (Embelia ribes)

वानस्पतिक परिचय— पर्वतीय प्रदेशों में विशेषकर आसाम, उत्तर प्रदेश, केरल, सिंहपुर, श्रीलंका में वायविडङ्ग के वृक्ष अधिकतर उत्पन्न होते है।

पत्र— अण्डाकृति, भालाकृति, नुकीले, निम्न पृष्ठ श्वेताभ तथा धब्बे लगे होते है।

पुष्प— सफेद या हरिताभ शाखाओं के अग्रिम प्रान्तों में गुच्छों के रूप में लगते है।

फल— गुच्छों के रूप में ही कालिमिरच की तरह गोल, छोटे फल लगते है। पकने पर लाल रंग के सूखने पर झुर्रीदार काले रंग के होते है।

बीज— एक श्वते धूसर मज्जा वाला निकलता है।

रायानिक संगठन— एम्बेलिक एसिड, एम्बेलिन, उड़नशील तैल तथा कषाय द्रव्य पाये जाते है।

गुण-धर्म—

रस— कटु, तिक्त। **गुण**— तीक्ष्ण, लघु, रुक्ष।

वीर्य— उष्ण। **विपाक**— कटु।

प्रभाव— **दोष प्रभाव**— वात कफहर।

रोग प्रभाव— उदरकृमि, अग्निमांद्य, ग्रहणी, शूल, वातव्याधि, कुष्ठ।

मात्रा— 1 से 6 ग्राम तक।

विशिष्ट योग— विडङ्गादि चूर्ण, विडङ्गादि लोह, विडङ्गारिष्ट, हरीतक्यादि योग कृमिमुद्गर आदि।

अष्ट वर्ग—

1. जीवक

पर्याय— जींवक, मधूर श्रृंग, ऋषवाङ्ग, कूर्चशीर्षक।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वानस्पतिक परिचय— हिमालय की पर्वत शृंखलाओं में उत्पन्न होने वाला यह कन्द लहसुन के समान होता है। इनके पत्ते छोटे होते है। कन्द का आकार कूंची के समान होता है।

गुण-धर्म—

रस— मधुर। **गुण—** शीत, स्निग्ध, लघु।
वीर्य— शीत। **विपाक—** मधुर।
प्रभाव— दोष प्रभाव— कफवर्धक।
रोग प्रभाव— कार्श्य, वातरोग, क्षयरोग, दाह, पित्तरोगनाशक।

2. ऋषभक

पर्याय— ऋषभ, वृषभ, धीर, विषाणी, द्राक्ष।

वानस्पतिक परिचय— प्राप्ति एवं वानस्पतिक परिचय जीवक के समान है। इसका कन्द बैल के सींगों के समान होता है।

गुण-धर्म—

जीवक के समान।

3. मेदा

पर्याय— शल्यपर्णि, मणिछिद्रा, मेदा, मेदोभवा, अध्वरा।

वानस्पतिक परिचय— मोरङ्ग प्रदेश में उत्पन्न होने वाली वनस्पति है। इसका कन्द सफेद होता है, तथा नख से काटने पर मेद के समान रस निकलता हैं।

गुण-धर्म—

रस— मधुर। **गुण—** शीत, गुरु।
वीर्य— शीत। **विपाक—** मधुर।
प्रभाव— दोष प्रभाव— बृहंण, शुक्रल, स्तनों में दूध पैदा करने वाला, पित्तनाशक।

4. महामेदा

पर्याय— वसुछिद्रा, त्रिदन्ती, देवतामणि।

वानस्पतिक परिचय— मेदा के समान। इसका कन्द सफेद आर्द्रक के समान होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण-धर्म—

मेदा के समान।

5. काकोली

पर्याय— संस्कृत— काकोली, धानशिखा, वायसोली, वीरा, कायस्थिका, वयस्था, जीवन्ती मधुरा।

हिन्दी— काकोली।

लेटिन— (Luvanga scadens)

सा. परिचय— यह वनस्पति भी अष्टवर्ग की दिव्य औषधियों में से है, भावमिश्र के अनुसार काकोली का कन्द शतावरी की तरह होता है। काकोली क्षीर काकोली की अपेक्षा कुछ कालापन लिये हुए होती है। प्राप्त विवरण के अनुसार बंगाल, आमास, खासीया पर्वत शृंखला, चटगांव एवं देहरादून की ऊंची चोटियों पर यह प्रायः मिलती है।

वानस्पतिक परिचय— काकोली की झाड़ीनुमा बेल होती है जिस पर कांटे भी लगे रहते है।

पत्र— लम्बे पत्र वृन्तों पर बर्छि के आकार की लम्बी मुलायम पत्तियाँ लगती है जो 7.5 से.मी. 25 से.मी. तक लम्बी होती है।

पुष्प— श्वेत।

फल— कबूतर के अण्डे के समान गोल होते है, जिसमें से 1 से 3 बीज निकलते हैं।

गुण-धर्म—

रस— मधुर, तिक्त। **गुण—** शीत, गुरु, बल्य, तृषाशामक, बृंहण।

वीर्य— शीत। **विपाक—** मधुर।

प्रभाव— **दोष प्रभाव—** पित्तशामक, कफप्रकोपक।

रोग प्रभाव— क्षय, रक्त-पित्त, दाह, ज्वर नाशक।

विषजन्य रोगों को न. करने वाली है। कुछ विद्वान् इसकी जड़ को बिच्छू व सर्प विष को नष्ट करने के लिये भी प्रयोग करने का निर्देशन करते है। यूनानी मत से ज्वर, क्षय, दौर्बल्य व जलोदर में भी उपयोगी है।

6. क्षीर काकोली

पर्याय— संस्कृत— पयस्या, महावीरा, पयस्विनी, क्षीर वल्लिका, धीरा, क्षीर शुक्ला।

हिन्दी— क्षीर काकोली।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वानस्पतिक परिचय— महामेदा, मेदा एवं काकोली जिन क्षेत्रों में पाई जाती है उन्हीं क्षेत्रों में क्षीर काकोली भी मिलती है। जिसकी जड़ भी शतावरी के समान होती है किन्तु काटने पर सफेद सुगन्धित दूध निकलता है।

गुण-धर्म—

रस— मधुर। **गुण**— गुरु, शीत, बृंहण।
वीर्य— शीत। **विपाक**— मधुर।
प्रभाव— **दोष प्रभाव**— वात पित्तशामक।
रोग प्रभाव— शोष, ज्वर, रक्त पित्त नाशक।

7-8. ऋद्धि-वृद्धि

ऋद्धि और वृद्धि का कन्द कपास की गांठ के समान सफेद रोयें वाला होता है। इनके फलों में आवर्त बने हुए होते है। ऋद्धि के आवर्त बांयी ओर से एवं वृद्धि के आवर्त दाहिनी ओर से बने होते हैं।

गुण-धर्म—

रस— मधुर। **गुण**— गुरु, शीत, शुक्रल, बल्य, बृंहण।
वीर्य— शीत। **विपाक**— मधुर।
प्रभाव— **दोष प्रभाव**— त्रिदोषशामक।
रोग प्रभाव— रक्त पित्त, क्षय, मूर्च्छा, कास, उरः क्षत, वन्ध्यत्व नाशक।
विशिष्ट योग— च्यवनप्राश।

अष्ट वर्ग की उक्त औषधियाँ वर्तमान में संदिग्ध एवं दुष्प्राप्य है, अतः इनके स्थान पर प्रयोग किये जाने वाले प्रतिनिधि द्रव्य पृष्ठ संख्या 32 पर दिये गये है।

वंशलोचन

पर्याय— संस्कृत— वंशरोचन, वांशी, तुगाक्षीरी, शुभा, तुगा, त्वक्क्षीरी, बंशजा शुभ्रा, बेलकी।
हिन्दी— बंशलोचन।
लेटिन— बम्बुसा एरुण्डीनेसी (Bambush arundinacea)

वानस्पतिक परिचय— भारत के लगभग सभी प्रांतों में बांस पाये जाते है। मोटे और दृढ बांस के अन्तर उसके रस सूख जाने से जमे हुये कंकरीनुमा कणों को वंशलोचन कहते है। इसका वृक्ष

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

10 से 25 मीटर ऊँचा तथा 150 से 300 मि.मी. व्यास वाला होता है। पत्र लम्बे भाले की तरह नुकीले तथा लम्बी रेखाओं वाले होते है।

पुष्प— श्वेत रंग के छोटे-छोटे पुष्प ग्रीष्म में निकलते है।

फल— जौ के समान होते है।

रायानिक संगठन— लौह, केलशियम, पोटाश, एन्जाईम, ग्लुकोसाइड के अतिरिक्त 90% सिलिका होती है।

गुण-धर्म—

रस— मधुर, कषाय। **गुण**— लघु, बल्य, बृंहण, हृद्य, रक्तस्कन्दन, मूत्रल।

वीर्य— शीत। **विपाक**— मधुर।

प्रभाव— **दोष प्रभाव**— वात पित्तशामक।

रोग प्रभाव— तृष्णा, कास, ज्वर, क्षय, रक्तपित्त, कामला, पाण्डु, मूत्रकच्छ्र।

मात्रा— 250 मि.ग्रा. 500 मि.ग्रा.।

विशिष्ट योग— सितोपलादि चूर्ण, च्यवनप्राश आदि।

कुटज

पर्याय— संस्कृत— कुटज, कूटज, कौटवत्सक, गिरिमल्लिका, कालिङ्ग, इन्द्र के पर्याय, यवफल।

हिन्दी— कूडा, कुरैय्या।

लेटिन— होलार्रहेना एन्टीडिसेन्ट्रिका। (Holarrhena antidysenterica)

वानस्पतिक परिचय— सभी पर्वतीय स्थानों में विशेषकर राजस्थान, बंगाल, बिहार और उड़ीसा में कुटज के वृक्ष पाये जाते है, 12 से 15 फीट ऊँचे मध्यमाकार वृक्ष होते है।

पत्र— 30 से 50 मि.मी. चौड़े, लम्बे बादाम के पत्तों के समान आकृति वाले होते हैं।

पुष्प— चमेली के समान आकृती वाले होते हैं।

फल— 20 से 40 से.मी. लम्बी युग्म फलियाँ लगती है जिनमें से जौ के समान लम्बे बीज निकलते है। इन्हें इन्द्रयव कहते है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इन्द्रयव

पर्याय— संस्कृत— इन्द्र जौ।

रायानिक संगठन— कौने साईन, कूर्चीन, कुर्चिसिन आदि क्षार, कुटजत्वक् क्षार अधिक मात्रा में होता है।

गुण-धर्म—

रस— तिक्त, कषाय। **गुण—** लघु रुक्ष।

वीर्य— शीत। **विपाक—** कटु।

प्रभाव— दोष प्रभाव— पित्त कपनाशक।

रोग प्रभाव— अर्श, प्रवाहिका, ज्वर, वातरक्त, कुष्ठ, विसर्प, अतिसार, शूल।

मात्रा— छाल— 10 से 20 ग्राम।

इन्द्रयव— 500 मि.ग्रा से डेढ ग्राम।

विशिष्ट योग— प्रवाहिकान्तक चूर्ण, कुटजारिष्ट, कुटजघनवटी, कुटजावलेह आदि।

कुटकी

पर्याय— संस्कृत— कटुका, कटवी, तिक्ता, कृष्णमेदा, मत्स्यशकला, चक्राङ्गी, कटुरोहणी।

हिन्दी— कुटकी, कटुकी।

लेटिन— पिंकरोहिजा कुरोआ (Picrohiza kurrooa)

वानस्पतिक परिचय— 900 से 15000 फीट ऊँचे पहाड़ी क्षेत्रों में विशेषकर कश्मीर से सिक्किम तक अधिक पाई जाती हैं इसका क्षुप वर्षा ऋतु में दिखाई देने वाला छोटा रोमश, तथा शाकवर्गीयहोता है, पत्र अण्डाकार नुकीले, वृन्त की ओर से संकुचित, चिकने प्रान्त भाग कटे फटे होते है। मुख्य तने के ऊपरी भाग में पुष्प का गुच्छा लगता है।

पुष्प— नीले या सफेद रंग के आते है।

फल— जौ के बीज के छिलके के समान डोडियाँ लगती है।

जड़— काले रंग की तिक्त होती है।

रायानिक संगठन— मूल में पिक्रौईझिन नामक ग्लुकोसाइड मोम तथा केथारटिक एसिड (रेचनाम्ल) होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण-धर्म—

रस— तिक्त। **गुण—** लघु, रुक्ष, भेदन, दीपन, हृद्य, ज्वरघ्न, रक्तशोधक, यकृतप्ली होत्तेजक।

वीर्य— उष्ण। **विपाक—** कटु।

प्रभाव— दोष प्रभाव— पित्त कफशामक।

रोग प्रभाव— प्रमेह, श्वास, कास, विषम ज्वर, कामला, रक्त दोष, कुष्ठ, कृमि।

मात्रा— 500 मि.ग्रा. से 6 ग्राम तक।

विशिष्ट योग— आरोग्यवर्धिनी, तिक्तादिक्वाथ, कुटकी चूर्ण आदि।

मदन फल

पर्याय— संस्कृत— मदन, धर्दन, पिण्डीतक, मरुअक, शल्पक, विषपुष्पक।

हिन्दी— मैनफल, मदनफल, करहर, मैनल।

लेटिन— रेंडिया डयूमेटोरम (Randia dumetorum)

वानस्पतिक परिचय— हिमालय की तलहटी में जैसे सिक्किम, आसाम, बिहार, उत्तर प्रदेश के मध्यम पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाने वाला मध्यमाकार वृक्ष होता है। इसके तने एवं शाखाओं पर एक से डेढ इन्च लम्बे मजबूत कांटे लगे हुए होते है।

पत्र— लट्वाकार तथा खुरदरे वृन्त की ओर क्रमशः सिकुड़ते हुए होते हैं।

पुष्प— पीताभ, श्वेत 5 दल वाले होते हैं।

फल— अखरोट के समान पीला, धूसर इन्हें ही मैन फल कहते है, इनको फोड़ने पर बिह दाने के समान मदनफल पिप्पली या बीज निकलते है।

रायानिक संगठन— फल मज्जा में मोम, राल, रंजक द्रव्य बेलेरियक एसिड तथा सेफोनीन मिलता है।

गुण-धर्म—

रस— तिक्त, मधुर, कटु, कषाय।

गुण— लघु, रुक्ष, विषघ्न, रक्तशोधक, वामक, लेखन।

वीर्य— उष्ण। **विपाक—** कटु।

प्रभाव— दोष प्रभाव— वात शामक, पित्तकफ निःस्सारक।

रोग प्रभाव— प्रतिश्याय, कुष्ठ, आनाह, शोथ, गुल्म व्रणशोथ, रक्त विकार आदि।

मात्रा— 500 मि.ग्रा. से 2 ग्राम। वमन के लिए 3 से 6 ग्राम।

विशिष्ट योग— मदनफल, पिप्पली चूर्ण।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रास्ना

पर्याय— संस्कृत— रास्ना, युक्तरसा, रस्या, सुआ, रसना, सुवहा, एलापर्णी, सुगन्धा, श्रेयसी।

हिन्दी— रासन, रसना, रचना।

लेटिन— प्लुचिया लेन्सियो लेटा (Pluchea lanceo lata)

वानस्पतिक परिचय— रास्ना एक संदिग्ध द्रव्य है उक्त लेटिन नामवाला रास्ना उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, पंजाब में अधिकतर पाया जाता है रास्ना के गुल्माकृति वर्षायु क्षुप जो 1 से 4 फीट तक ऊँचा होता है।

पत्र— सनाय के समान, आकृति वाले कंगुरेदार होते है।

पुष्प— बैंगनी रंग के गोल होते है।

जड़— सुगन्धित पुष्टिकारक होती है।

गुण-धर्म—

रस— तिक्त। **गुण—** गुरु, उष्ण, शोथहर, आमपाचन, रक्त शोधक।

वीर्य— उष्ण। **विपाक—** कटु।

प्रभाव— **दोप प्रभाव—** वेत कफशामक।

रोग प्रभाव— आमवात, सन्धिवात, वातिकशूल, शोथ, श्वास, उदररोग, पक्षाधात, गृध्रसी, विश्वाची नाशक।

मात्रा— 3 से 6 ग्राम।

विशिष्ट योग— रास्ना गुग्गुलु, महारास्नादि क्वाथ, रास्नासप्तक क्वाथ आदि।

पुष्कर मूल

पर्याय— संस्कृत— पुष्कर मूल, पौष्कर, पुष्कर, पद्मपत्र, काश्मिर।

हिन्दी— पोखरमूल, पोहकर मूल, पुहकर मूल।

लेटिन— इनूला रेशीमूसा (Inula racemosa)

वानस्पतिक परिचय— कुष्ठ के समान आकृतिवाला तथा साथ-साथ उत्पन्न होने वाला मध्यमाकृति क्षुप कश्मीर में अधिकतर प्राप्त होता है। इसकी ऊँचाई 3 से 4 फीट की होती है। हिमपात से क्षुप के नष्ट हो जाने पर भी कन्दवत लम्बा मूल सजीव रहता है।

पत्र— दो से ढाई फीट लम्बे, तीन से चार इन्च चौड़े, नुकीले तथा कंगुरीदार।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्प— गाजवां के समान चक्राकार होते है।

मूल— सुषिर किन्तु पुरानी होने पर खोखली हो जाती है इसका रंग भूरा हो जाता है।

रायानिक संगठन— कर्पूर के समान एक पदार्थ तथा राल के समान तिंक्त द्रव्य पाया जाता है।

गुण-धर्म—

रस— कटु, तिक्त। **वीर्य**— उष्ण।

गुण— तीक्ष्ण, लघु, शूलध्न, वेदनास्थापन, नाडीबल्य, शोथहर, स्वेदजनन, दीपन।

विपाक— कटु।

प्रभाव— **दोष प्रभाव**— वात कफशामक।

रोग प्रभाव— पार्श्वमूल, श्वासकाप, हिक्का, अनार्तव, ज्वर शोथ।

मात्रा— 300 मि.ग्रा. से डेढ ग्राम तक।

विशिष्ट योग— पुष्करमूल चूर्ण, पुष्करादि चेूर्ण, पुष्कर मूल हिंगुलु।

कर्कट श्रृंगी

पर्याय— संस्कृत— शृंगी, अजशृंगी, चक्रा।

हिन्दी— काकड़ा, सिंगी, कक्कड़ सिंगी।

लेटिन— पिस्टेशिया इन्टिजीनीया। (Pistacia integerrima)

परिचय— पंजाब, पश्चिमी हिमालय, टिहरी गढवाल के कर्कट शृंगी के मध्यमाकार तथा नाजुक वृक्ष पाये जाते है

पत्र— 3 से 6 इन्च तक लम्बे, नुकीले, भालाकृति होते है।

पुष्प— छोटे-छोटे तथा दल रहित होते है।

फल— गोल, घूसर, झुर्रीदार, पोले सींग के समान होते है।

रासायनिक संगठन— इनमें टेनीन 60%, गोंद 5%, राल, खेदार एसिड तथा पीले रंग का उड़नशील तैल रहता है।

गुण-धर्म— **रस**— कषाय, तिक्त। **गुण**— रुक्ष, लघु, उष्ण।

वीर्य— उष्ण। **विपाक**— कटु।

प्रभाव— **दोष प्रभाव**— वात कफ शामक।

रोग प्रभाव— हिक्का, श्वास, छर्दि, अतिसार, ग्रहणी, बाल रोग।

मात्रा— 500 मि.ग्रा. से 2 ग्राम।

विशिष्ट योग— बाल चातुर्भद्रिका, शृंग्यादि चूर्ण आदि।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मंजिष्ठा

पर्याय— संस्कृत— मंजिष्ठा, समङ्गा, कालमेषिका, मण्डूकपर्णी, रक्ताङ्गी, वस्त्ररंजनी।
हिन्दी— मजीठ, मंजीठ।
लेटिन— रुबिया कार्डीफोलिया (Rubia cordifolia)

वान. परि— पर्वतीय क्षेत्रों में मंजीठ की बहुशाखी फैलने वाली लता मिलती है। लता की तरह इसकी जड़े भी दूर-दूर तक फैलती है।

पत्र— तेजपात की तरह गोलाकार नुकीले, सधन होते है।

पुष्प— सफेद रंग के गुच्छों में लगते है।

फल— पकने पर जामुनी रंग के छोटे-छोटे होते है।

रासायनिक संगठन— केलूशियम, राल, गौंद, शर्करा, परप्यूरीन आदि।

गुण-धर्म— **रस**— कषाय, तिक्त, मधुर। **गुण**— रुक्ष, गुरु, रक्त शोधक, वर्ण्य।

वीर्य— उष्ण। **विपाक**— कटु।

प्रभाव— **दोष प्रभाव**— पित्त कफनाशक।
रोग प्रभाव— रक्तरोग, त्वक्रोग, रक्तपित्त, मेह, रजोरोध, सूतिका विकार।

मात्रा— 1 से 3 ग्राम।

विशिष्ट योग— महामंजिष्ठादि क्वाथ, मंजिष्ठादि चूर्ण, मंजिष्ठाद्यरिष्ट।

हरिद्रा

पर्याय— संस्कृत— हरिद्रा, कांचनी, पीता, रात्रिवाचक शब्द इसके पर्याय है, योषित प्रिया, हट्टविलासिनी।
हिन्दी— हल्दी, हरदी।
लेटिन— (Curcuma longa)

वानस्पतिक परिचय— दैनिक व्यवहार में आने वाली हल्दी के गुल्माकृति क्षुपों की देश में लगभग सभी प्रान्तों में खेती की जाती है, विशेषकर दक्षिणी राजस्थान, बंगाल, महाराष्ट्र।

पत्र— लम्बे वृन्त वाले एक से डेढ फीट लम्बे, छः से सात इंच चौड़े, नुकीले पत्ते होते है जिनमें से आम के समान गन्ध निकलती है।

पुष्प— पीतवर्णी मंजरियों में लगते है।

मूल— ग्रन्थिल, लम्बे नारङ्गी रंग के होते है, जिन्हे हल्दी के रूप में हम काम में लेते है।

रासायनिक संगठन— क्यूरक्यूमिन नामक पीला रंजक उड़नशील तैल, स्टार्च एलब्यमिनाइडस, तथा एक विशिष्ट तैल पाया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण-धर्म— रस— तिक्त, कटु। गुण— रुक्ष, उष्ण, लघु, लेखन कार्य, कुष्ठघ्न, कृमिघ्न, शोथहर, रोपण।

वीर्य— उष्ण। विपाक— कटु।

प्रभाव— **दोष प्रभाव**— कफ पित्तनाशक।

रोग प्रभाव— त्वक्रोग, रक्त विकार, व्रण, पाण्डु, शोथ, स्नायुक, शीतपित्त, आघात जन्य शोथ, कास, श्वास, प्रमेह आदि।

मात्रा— 2 मात्रा से 4 ग्राम तक।

विशिष्ट योग— हरिद्राखण्ड, हरिद्रार्द्रकावलेह, निशातैल, हरिद्राचूर्ण आदि।

जायफल

पर्याय— संस्कृत— जातिफल, जाति कोष, मालती फल, सुमन फल।

हिन्दी— जायफल, जायफर।

लेटिन— मिरिस्टिक ओफिसिनेलिस (Myristica Officinalis)

परिचय— समुद्री तटों पर विशेषकर मलाया, सिंगापुर, सुमात्रा श्री लंका आदि द्वीपों में जायफल के वृक्ष पाये जाते है। दक्षिणी भारत के नीलगिरी पर्वत शृखला में कहीं-कहीं वृक्ष लगाये गये है।

पत्र— जामुन के पत्ते के समान आकृति वाले होते है।

पुष्प— छोटे-छोटे सफेद या पीले रंग के होते है।

फल— गोल अण्डाकार, रक्तांभ पीत घूसर वर्ण के होते है। पुष्ट होने पर दो फांकों में फट जाते है, उनके भीतर से जो बीज निकलता है वही जायफल कहलाता है। इनमें से निकलने वाली गन्ध तीक्ष्ण, कटु एवं सुगन्धित होती है।

रासायनिक संगठन— क्षार, स्टार्च, वसा और स्थिर तैल के अतिरिक्त उड़नशील तैल भी पाया जाता है।

गुण-धर्म— रस— कटु, कषाय, तिक्त।

गुण— स्निग्ध, तीक्ष्ण, लघु, दीपन, दौर्गन्ध्हर, वेदनास्थापन उत्तेजक, वातानुलोमन, हृद्य, वाजीकर, गर्भाशयोत्तेजक।

वीर्य— उष्ण। विपाक— कटु।

प्रभाव— **दोष प्रभाव**— वात कफशामक।

रोग प्रभाव— हृद्रोग, कास, कृमि, वमन, ग्रहणी, अग्निमांद्य, आध्मान, प्रतिश्याय, अनिद्रा, शीघ्रपतन, ध्वजभंग।

मात्रा— 250 मि.ग्रा. से 500 मि.ग्रा.।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विशिष्ट योग— जातिफलादि चूर्ण, कामदेवमोदक, वृष्ययोग आदि।

जावित्री

जिस प्रकार नारियल के ऊपर मोटा आवरण होता है। उसी प्रकार जायफल के बीज के ऊपर, बाहर छोटा छिलका और भीतर पतला आवरण होता है। यह लाल रंग का जालीदार होता है, इसको जावित्री कहते है।

गुण-धर्म— जायफल के समान।

रसोंत

पर्याय— संस्कृत— रसाञ्जन, रसगर्भ, तार्क्ष्यज, तार्क्ष्यसेल।

हिन्दी— रसोत, रसवत।

लेटिन— एक्सट्रेक्टम बरबेरस (Extractum berberils)

वान. परि.— रसाञ्जन कृष्णाभ, भूरे रंग का मुलायम गौंद के समान द्रव्य होता है जो मद्य एवं जल में धुल जाता है। यह बकरी के दूध एवं दारुहल्दी के क्वाथ कौ उबालकर बनाया जाता है।

गुण-धर्म— रस— कटु, तिक्त। गुण— चक्षुष्य, रसायन, छेदन, रोपण।

प्रभाव— रोग प्रभाव— नैत्र, मुख, गल, नासा, कर्ण रोगों में तथा व्रणों पर इसका ब्राह्य प्रयोग किया जाता है।

भंग

पर्याय— संस्कृत— भंगा, गंजा, मातुलानि, मादिनी, विजया, जया।

हिन्दी— भांग, भंग।

लेटिन— (Cannabis Sativa)

वानस्पतिक परिचय— भांग के सरल क्षुप पूरे ही भारत में तर प्रदेशों में पाये जाते है। उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब में सरकार की अनुज्ञा प्राप्त खेती की जाती है।

पत्र— नीम के पत्रों समान छोटे समूहों में लगते है।

पुष्प— छोटे एक लिङ्गी गुच्छेदार पीत हरिताभ होते है।

फल— छोटे-छोटे फल लगते है।

रासायनिक संगठन— उड़नशील तैल, राल, मोम, वसा, शर्करा, पोटेशियम नाईट्रेट मिलता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण-धर्म— रस— तिक्त, कषाय।

गुण— व्यवायी, रुक्ष, लघु, तीक्ष्ण, वेदनास्थापन, आक्षेपहर, दीपन, ग्राही, शूल-प्रशमन, वाजीकर, शुक्रस्तम्भन।

विशेष— इसके पत्ते बीज और कोमल शाखाओं को भांग कहते है। स्त्री जाति के क्षुप को जो अधिक ऊंचा तथा बहुत पत्ते वाला होता है। उसको गांजा तथा शाखाओं पर जमे हुए निर्यास को चरस कहते है।

मात्रा— 125 मि.ग्रा. से 500 मि.ग्रा.।

विशिष्ट योग— लाईचूर्ण, विजयावटी, जातिफलादिचूर्ण।

लोध्र

पर्याय— संस्कृत— लोध्र, तिल्व, तिरीट, शाबर, मालव, पट्टिकालोध, प्रमुख।

हिन्दी— लोध।

लेटिन— सिम्पलोकोश रेशीमोशा (Symplocos racemosa)

वान. परि.— लोध का सदा बहार वृक्ष 20 से 25 फीट तक ऊंचा श्वेताभ, रक्त, धूसर, बिन्दू एवं छिद्रयुक्त छाल वाला, पर्वतीय क्षेत्रों में विशेषकर आसाम, बंगाल, बिहार, मलाबार आदि प्रांतों में पाया जाता है।

पत्र— अण्डाकार कंगुरेवाले 3 से 6 इन्च लम्बे होते है।

पुष्प— मंजरियों के रूप में पीले व सुगन्धित होते है।

फल— आधे इन्च लम्बे गोल तथा पकने पर बैंगनी रंग के होते है। इस वृक्ष की छाल को औषधि प्रयोग में लिया जाता है।

रासायनिक संगठन— लोच्यूरीन, कोलोच्यूरीन, लोच्यूरीडीन नामक क्षार तथा पर्याप्त मात्रा में रंजक द्रव्य बनता है।

गुण-धर्म— रस— कषाय। **गुण**— लघु, रुक्ष।

वीर्य— शीत, व्रणशोधन, शोथहर, गर्भाशय शोथहर, शोणितस्थापन स्तम्भन।

विपाक— कटु।

प्रभाव— **दोष प्रभाव**— पित्त कफशामक।

रोग प्रभाव— रक्तप्रदर, श्वतेप्रदर, गर्भाशय शोथ, रक्तातिसार, ग्रहणी, रक्तपित्त।

मात्रा— 1 ग्राम से 3 ग्राम।

विशिष्ट योग— पुष्यानुगचूर्ण, लोध्रासव, लोध्र चूर्ण आदि।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अफ़ीम

पर्याय— संस्कृत— खसफलक्षीर, आफूक, अहिफेनक।

हिन्दी— अफीम आफूक, अमल, अफयून।

लेटिन— पपेवर सोमनीफेरम (Papaver somnifierum)

परिचय— पोस्त के डोडे से अफीम निकाली जाती है। हमारे देश के प्रायः सभी प्रांतों में सरकार से अनुज्ञा प्राप्त खेती की जाती है। राजस्थान में विशेषकर, कोटा, चित्तौड़, उदयपुर जिलों में पोस्त उगाया जाता है।

पत्र— लम्बे, शाखाओं से लगे हुए, किनारे झालदार कटे हुए, एकान्तरित होते है।

पुष्प— कटोरीनुमा सुन्दर आकर्षक फूल होते है। जो सफेद नीले, बैंगनी (काला) और लाल इन चार प्रकार के रंगवाले होते है।

फल— दाडिम के समान आकृति वाले गोल डोडे शाखाओं के अग्रभाग में लगते है। इनके ऊपर की छाल पकने से पहले कठिन होती जाती है। इन डोडो पर सायं काल चीरा दे देते हैं तथा दूसरे दिन सुबह सूर्योदय से पहले ही उन चीरों में से निकले हुए दूधिया निर्यास को इकट्ठा करते है। इसे ही अफीम कहते है। इसी प्रकार 3 से 4 दिन के अन्तर से चारों तरफ चीरे लगाते है जमीन पर गिरे हुए फूलों से अफीम बांधने के लिए सम्पुट तैयार किये जाते है। डोडों के सूख जाने पर अन्दर से पोस्त के दाने निकलते है।

रासायनिक संगठन— मार्फीन, कोडिन, नार्कोटीन, पापावरीन, सूडो मारफीन, राल, जल, वसा, शर्करा, एपोमार्फिन, एपोकोडीन तथा बीज में 50% स्थिर तैल होता है।

गुण-धर्म— **रस—** तिक्त, कषाय।

गुण— रुक्ष, सूक्ष्म, निद्रालु, स्तम्भन, रक्तरोधक, शक्रस्तम्भन, वेदनास्थापन, शोथघ्न।

वीर्य— उष्ण। **विपाक—** कटु।

प्रभाव— **दोष प्रभाव—** वात कफशामक।

रोग प्रभाव— अनिद्रा, आक्षेप, अतीसार, ग्रहणी, रक्तस्राव, शीघ्रपतन, गर्भपात, हृत्शूल, पार्श्वशूल अपतन्त्रक, शल्यक्रियाओं में उपयोगी।

मात्रा— 30 मि.ग्रा. से 125 मि.ग्रा. तक।

विशिष्ट योग— कर्पूर रस, दुग्धवटी, अहिफेनासव, गंगाधर चूर्ण, कामिनी विद्रावण, निद्रोदयरस।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषाक्त प्रभाव— तन्द्रा, निद्रा, मूर्च्छा, श्वास कृच्छ्रता, कनीनिका संकोच, नाडीक्षीणता।

निवारण— आमाशय प्रक्षालन (पोटेशियम परमेंगनेट के जल से या अरिठे के पानी से।) तेजपात, आवला, हिंगु आदि प्रति विष द्रव्य तथा अम्बर, याकूती, मकरध्वज, कस्तूरी, भैरव आदि हृदयोत्तेजक औषध प्रयोग करना चाहिये।

धत्तूरा

पर्याय— संस्कृत— धतूर, धूर्त, धुत्तूर, उन्मत्त, कनकवाची, देवता, महामोही, शिवप्रिय, मातुल, नन्दन।

हिन्दी— धत्तूरा, धातूरा।

लेटिन— डाटूरा स्ट्रामोनियम (Datura stramonium)

परिचय— मध्यप्रदेश एवं राजस्थान के साथ-साथ सभी प्रान्तों में 8 से 10 फीट तक ऊंचा धत्तूरे का क्षुप प्रायः मिलता है।

पत्र— लम्बे चौड़े त्रिकोणाकार कटे हुई किनारे वाले होते है।

पुष्प— लगभग 7 इन्च तक लम्बे नलिकाकार काला या सफेद दो रंग के मिलते है। फूलों के इन दो रंगों के भेद से ही धत्तूर दो प्रकार का होता है।

फल— मुलायम, कांटोवाले गोल हरे रंग के फल लगते है। जिसको तोड़ने पर 4 कोष्ठ में छोटे-छोटे कष्णाभ, धूसर, वृक्काकृति बीज निकलते है। कृष्ण धतूर, ही प्रायः औषध प्रयोग में लिया जाता है।

रासायनिक संगठन— पुट्रीन, हायोसाईमिन, हायोसिन, एट्रोपिन पिच्छिल सत्त्व 'पाया जाता है।

गुण-धर्म— रस— तिक्त, कषाय, कटु, मधुर।

गुण— गुरु, तीक्ष्ण, शूलहर, अवसादक।

वीर्य— उष्ण। **विपाक**— कटु।

प्रभाव— **दोष प्रभाव**— वात कफशामक, पित्तवर्धक।

रोग प्रभाव— अलर्कविष, तमकश्वाद, विसूचिका, कृमि, विषमज्वर, शूल, धनुर्वात्त आदि में प्रभावी है।

मात्रा— बीजचूर्ण 60 मि.ग्रा. से 125 मि.ग्रा. तक।

विशिष्ट योग— मृत्युञ्जय, ज्वरांकुश, कनकासव, कनकवटी, लक्ष्मीविलास आदि।

अपाय— वमन, मूर्च्छा, गलतालुशोष, भ्रमस्वेदविकृति, कनीनिका विस्तार, तापबृद्धि, आक्षेप एवं मृत्यु।

प्रतिरोध— वमन, दधि, दुग्ध, मक्खन, कार्पासपंचाङ्ग आदि।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वत्सनाभ

पर्याय— संस्कृत— वत्सनाभ, विष, अमृत, रसायन, ब्रह्मपुत्र, जाङ्गल।

हिन्दी— मीठाविष, सिंगीमोरा, बच्छनाग।

लेटिन— एकोनाइटम फेराक्स (Aconitum ferox)

परिचय— 1000 से 14000 फीट तक की ऊंची पहाड़ियों पर जैसे कुमाऊं, गढवाल, सिक्कीम, जम्मू कश्मीर आदि क्षेत्रों में पाया जाता है।

पत्र— खरबूजे के समान गोल, कंगूरेदार रोमश होते है।

पुष्प— मटर के फूल के समान गोल नीलाभ श्वेत होते है।

फल— गोल, तीक्ष्ण, रोमश पंच कोष्ठ वाले होते है।

मूल— गो पुच्छ के समान आकार वाले धूसरे ग्रन्थिल होते है। जिनका औषधी प्रयोग किया जाता है।

रासायनिक संगठन— एकोनाइटिन तथा सूडो एकोनाइटिन नामक विषैला द्रव्य तथा पिक्रो एकोनिन के साथ एकोनाइटिक एसिड होता है।

गुण-धर्म— **रस**— मधुर। **गुण**— तीक्ष्ण, लघु, व्यवायी, विकाशी, शोथहर, वेदनास्थापन, स्वेदल।

वीर्य— उष्ण। **विपाक**— कटु।

प्रभाव— **दोष प्रभाव**— त्रिदोष शामक।

रोग प्रभाव— ज्वर, श्वास, कास, आमवात, पक्षाघात, वातव्याधियां, हृद्दौर्बल्यनाशक।

मात्रा— 60 मि.ग्रा. से 125 मि.ग्रा.।

विशिष्ट योग— संजीवनी, आनन्दभैरव, मृत्युंजय, त्रिभुवनकीर्ति आदि।

अपाय— महास्रोत में शोथ, दाह, छर्दि, अतिसार, मूर्च्छा, अवसाद, अतिस्वेद, शैत्य, श्वास कृच्छ्रता।

प्रतिरोध— हृदयोत्तेजक द्रव्य एवं कृत्रिम श्वसन देकर आमाशय प्रक्षालन करना चाहिए।

जयपाल

पर्याय— संस्कृत— जयपाल, दंती बीज, तिन्तिडी फल।

हिन्दी— जमाल घोटा, जमल घोटा, अजयपाल।

लेटिन— क्राटन टिग्लियम (Croton tiglium)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वान. परि.— ज़यपाल का क्षुप बंगाल, आसाम, ब्रह्मा, श्रीलंका में अधिकतर पाया जाता है। हमेशा हरा-भरा रहने वाला यह क्षुप रोमश होता है।

पत्र— 2 से 4 इन्च लम्बे-चौड़े, अण्डाकार कुछ नुकीले और कंगुरेदार होते है।

पुष्प— हरिताभ पीत रंग के मंजरी रुप में लगते है।

बीज— एरण्ड के समान मांसल, बादमी रंग के होते है, जिन्हें औषधी प्रयोग में लिया जाताहै।

रासायनिक संगठन— स्थिर तैल के अतिरिक्त टिगालिक एसिड ओलिइक पानिटिक क्षोभ उत्पादक तथा विस्फोटजनक तत्व पाया जाता है।

गुण-धर्म— रस— कटु। **गुण**— स्निग्ध, तीक्ष्ण, गुरु, कृमिध्न, तीव्र रेचन, विषहर।

वीर्य— उष्ण। **विपाक**— कटु।

प्रभाव— दोष प्रभाव— कफ वातशामक।

रोग प्रभाव— जलोदर, सर्वाङ्ग शोथ, आमवात, जीर्ण विबन्ध, कृमि।

मात्रा— 30 मि.ग्रा. से 125 मि.ग्रा. तक।

विशिष्ट योग— नाराच रस, जलोदरारिरस, इच्छाभेदीरस, बिन्दुघृत।

अपाय— रक्तातिसार, उदरशूल, वमन, प्रवाहण।

प्रतिरोध— दूध, घी, दही, कत्था, निम्बूरस, पानी से हाथ पैर धोना आदि।

कुचला

पर्याय— संस्कृत— कुपिलु, कुलक, तिन्दुक, जलद, दीर्घपत्रक, काकतिन्दुक।

हिन्दी— कुचला, कुचिला, कौंचीला।

लेटिन— स्ट्रेंक्नस नक्सवमिका (Strychnos nuxvomica)

वानस्पतिक परिचय— कुचला के मध्यमाकार वृक्ष तर गरम प्रदेशों में जैसे तमिलनाडु. बंगाल, आन्ध्र प्रदेश में अधिकतर पाये जाते है। बारह मास हरा रहने वाला लगभग चालीस फीट तक ऊँचा वृक्ष होता है।

पत्र— लट्वाकार, चमकीले, उभरी हुई सिराओं वाले होते हैं।

पुष्प— हरिताभ श्वेत शाखाओं के अग्रिम भाग में लगते है।

फल— गोल, चिकने, पकने पर पीले रंग के, तिन्दु (टीमरु) के समान लगते है। जिनको तोड़ने पर 3 से 5 इन्च गोलाई में बटन के समान एक पृष्ठ नतोदर तथा दूसरा उन्नतोदर होता है। इनका ही औषधियों में प्रयोग किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रासायनिक संगठन— स्ट्रिकनीन, ब्रूसीम, लोगानिन, प्रोटीड, ग्लुकोसाइड एवं गौंद, तैल आदि पाये जाते है।

गुण-धर्म— रस— तिक्त।
गुण— रुक्ष, तीक्ष्ण, लघु, ज्वरध्न, दीपन, पाचन, शूलहर, नाडीबल्य, वेदनास्थापन, कामोत्तेजक।
विपाक— कटु।

प्रभाव— दोष प्रभाव— वात कफशामक।
रोग प्रभाव— वात व्याधियां, आमवात, ध्वजभंग, क्लैव्य, शय्यामूत्र, ग्रहणी, अर्श, अग्निमांद्य, कृमि।
मात्रा— 60 से 250 मि.ग्रा.।
विशिष्ट योग— अग्नितुण्डावटी, तिन्दुकवटी, एकाङ्गवीररस, वृष्य योग।

सर्पगन्धा

पर्याय— हिन्दी— सर्पगन्धा।
लेटिन— रुवोलफिया सर्पैन्टिना (Rauwalfia serpentina)
परिचय— सर्पगन्धा के बहु वर्षायु क्षुप 4000 फीट तक की ऊंचाई पर आसाम, बिहार, उडीसा, बंगाल में खेती की जाती है।
पत्र— क्षुप की प्रत्येक पर्विकाओं पर 3 से 4 की संख्या में चक्र के रूप में लगते है। ये पत्र अण्डाकार लम्बे चमकीले हरे रंग के होते है।
पुष्प— गुलाबी-सफेद रंग के गुच्छों में लगते है।
फल— नीलाभ रक्तवर्णीय गोल होते है।
मूल— लम्बी, भूरे रंग की पिष्ट युक्त होती है जो औषधि प्रयोग में ली जाती है।
रासायनिक संगठन— राल, स्टार्च, गोंद, लवण के साथ-साथ, सर्पासिल, सर्पेन्टिना, रोवोलफिन, आदि तत्व मिलते है।

गुण-धर्म— रस— तिक्त। वीर्य— उष्ण। विपाक— कटु।
गुण— रुक्ष, वेदनास्थापन, निद्रालु, ज्वरध्न, रक्तभार को कम करने वाला।
मात्रा— 500 मि.ग्रा. से 1 ग्राम तक।
विशिष्ट योग— सर्पगन्धा धनवटी, सर्पगन्धा चूर्ण।

अश्वगन्धा

पर्याय— संस्कृत— घोड़े के पर्यायवाची, वराहकर्णी, वरदा, बलदा, कुष्ठगन्धिनी।
हिन्दी— असगन्ध, नागोरी असगन्ध।
लेटिन— विदेनिया सोमिनिफेरा (Withania somonifera)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

परिचय— समशीतोष्ण प्रदेशों में अश्वगन्धा के क्षुप अधिकतर पनपते है जैसे राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश आदि।

पत्र— कुछ गोलाई लिये हुए, लम्बे-चौड़े सफेद रोएं वाले होते है।

पुष्प— पत्र वृन्त के कोण में छोटे-छोटे गुच्छों में लगते है।

फल— मकोय (चिरोटी) के समान पतले खोल के अन्दर चने के समान फल लगते है जो पकने पर लाल रंग के हो जाते है। इनमें से छोटे चपटे बीज निकलते है।

रासायनिक संगठन— उड़नशील तैल तथा वसा, राल, विदेनीयोल एवं शर्करा पाई जाती है।

गुण-धर्म— रस— कषाय, तिक्त, मधुर। **वीर्य—** उष्ण। **विपाक—** मधुर।
गुण— लघु, स्निग्ध, नाडी बल्य, रसायन, बाजीकरण, बृहंण, दीपन।

प्रभाव— **दोष प्रभाव—** वात कफहर।
रोग प्रभाव— मांसक्षय, शोष, वातव्याधियां, शुक्रक्षय, शोथ, हृद्दौर्बल्य, अनिद्रा, गलगण्ड आदि।

मात्रा— 3 से 6 ग्राम।

विशिष्ट योग— अश्वगन्धा चूर्ण, अश्वगन्धा गुग्गुलु, कामदेवघृत, अश्वगन्धारिष्ट आदि।

कर्पूर

पर्याय— संस्कृत— कर्पूर, शीताभ्र, हिमाह्व, घनसार, चन्दपर्याय, हिमपर्याय।
हिन्दी— कर्पूर।
लेटिन— सिन्नेमोमम केम्फेरा (Cinnamomum camphora)

परिचय— कर्पूर के वृक्ष 60 से 70 फीट ऊँचे होते है जो भारत के देहरादून, कर्नाटक एवं नीलगिरी की पर्वत श्रृंखलाओं में एवं चीन, जापान, सुमात्रा तथा हिन्दी चीन में अधिकतर मिलते है।

पत्र— चिकने, मुलायम, अण्डाकार, हरे रंग के किन्तु हल्का पीलापन लिये हुए होते है।

पुष्प— सफेद गुच्छों में लगते है जिन पर मटर के समान फल लगते है। इसी वृक्ष के निर्यास से कर्पूर तैयार किया जाता है। जो सफेद, पारदर्शक डली के रूप में प्राप्त होता है।

रासायनिक संगठन— एक तरह का उड़नशील तैल मिलता है।

गुण-धर्म— रस— कटु, मधुर। **वीर्य—** शीत, **विपाक—** कटु।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण— तीक्ष्ण, लघु, जन्तुघ्न, दीपन, वातानुलोमन, हृद्य, दुर्गन्धहर, आक्षेपशमन, ज्वरघ्न, वाजीकर, वेदनास्थापन।

प्रभाव— **दोष प्रभाव—** त्रिदोषशामक।

रोग प्रभाव— विसूचिका, हृदयावसाद, न्यूनरक्तभार, अरुचि, छर्दि, मूत्रकृच्छ्र, क्लैब्य, आमवात।

मात्रा— 125 से 250 मि.ग्रा.।

विशिष्ट योग— कर्पूरासव, कर्पूररस, अमृतधारा, पंचगुण तैल आदि।

अपाय— छर्दि, उत्क्लेश, भ्रम, शीतस्वेद, मूत्राघात, आक्षेप, सन्यास।

प्रतिरोध— आमाशय प्रक्षालन, अम्बर एवं कस्तूरी के योग देना चाहिये।

चन्दन

पर्याय— संस्कृत— श्री खण्ड, तैल पर्णिका, कालीयक, कालीय, हरिचन्दन, हरिप्रिय कालसार भद्रश्री।

हिन्दी— सफेद चन्दन।

लेटिन— Santalm album

वान. परि.— भारत के कर्नाटक राज्य में उत्तम कोटी का चन्दन पाया जाता है। इसके वृक्ष मध्यमाकृति, हमेशा हरे रहने वाले, बहुशाखीय होते है। इसकी दो जातियां होती है- श्वेत एवं रक्त चन्दन।

पत्र— अण्डाकार, नुकीले एवं मुलायम होते है।

पुष्प— बैंगनी रंग के निर्गन्ध होते है।

फल— छोटे, कालापन लिये, मांसल-गोल होते है।

रासायनिक संगठन— उड़नशील तैल सेन्टलोल, राल, टैनिक एसिड आदि।

गुण-धर्म— **रस—** तिक्त, मधुर। **वीर्य—** शीत। **विपाक—** कटु।

गुण— रुक्ष, लघु, शीत, ग्राही, रक्त प्रसादन, हृद्य, मूत्र-जनन, कण्डुघ्न।

प्रभाव— **दोष प्रभाव—** कफ पित्तशामक।

रोग प्रभाव— अतिसार, रक्तातिसार, दाह, छर्दि तृषा, हृत्कम्प, रक्तपित्त, प्रमेह आदि। लाल चन्द मुख्यतया व्रणरोपक एवं शोधक है।

मात्रा— तैल 5 से 6 बूंद। **चूर्ण—** 3 से 5 ग्राम तक।

विशिष्ट योग— चन्दनादि लौह, चन्दनादि चूर्ण, चन्दनासव आदि।

लवङ्ग

पर्याय— संस्कृत— लवङ्ग, देवकुसुम, श्री या लक्ष्मी के पर्यायवाचक, चन्दन पुष्पक, श्री पुष्पक।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हिन्दी— लौंग, लवङ्ग।

लेटिन— केरियोफाइलस, ऐरोमेटिकस (Caryophyllus aromaticus)।

वानस्पतिक परिचय— समुद्री तटों जैसे जंगबार, मलाबार, जंजीबार, पेम्बा, तथा भारत में केरल राज्य में खेती की जाती है। इसके सुन्दर मध्यमाकार वृक्ष होते है।

पत्र— अडूसे के पत्र के समान चमकीले, सुगन्धित, हरितवर्णी होते है।

पुष्प— शाखाओं के अग्रिम प्रान्त में नीलाभ या रक्ताभ पुष्पों के गुच्छे लगते है जिनसे तेज सुगन्ध निकलती है। इन्हें ही लवङ्ग के रूप में काम में लिया जाता है।

रासायनिक संगठन— उड़नशील तैल, भूजीनाल, टेनिन, केरियोफाईलिन एवं गौंद पाया जाता है।

गुण-धर्म— रस— कटु, तिक्त। **वीर्य—** शीत। **विपाक—** कटु।

गुण— स्निग्ध, तीक्ष्ण, लघु, दुर्गन्धहर, दीपन, रोचन, वातानुलोमन, हृद्य, मूत्रल, वाजीकर, वेदनास्थापन।

मात्रा— 500 मि.ग्रा. से 1 ग्राम। तैल— 4 से 6 बूंद।

विशिष्ट योग— लवङ्गादिचूर्ण, लवङ्गादिवटी, अविपत्तिकर चूर्ण आदि।

खस

पर्याय— संस्कृत— उशीर, अमृणाल, सेव्य, नलद, समगन्धिक, वीरणमूल।

हिन्दी— खस।

लेटिन— वेटीवेरिया जिजेन्यूडीस (Vetiveria zizanuioides)

वान. परि.— दलदली प्रदेशें में विशेषकर बंगाल, बिहार एवं दक्षिणी भारत के प्रदेश में खस के क्षुप अधिक पाये जाते हैं।

पत्र— सरकण्डे के तरह लम्बे पतले, नुकीले तथा कहीं-कहीं कांटे होते है।

पुष्प— पीताभ या रक्ताभ होते है।

मूल— बहुशाखा-प्रशाखायुक्त तथा सुगन्धित होते है। इन्हें ही औषध प्रयोग में लिया जाता है।

रासायनिक संगठन— राल, रंजक द्रव्य, लौह, केल्शियम तथा उड़नशील तैल पाया जाता है।

गुण-धर्म— रस— मधुर, तिक्त। **वीर्य—** शीत। **विपाक—** मधुर।

गुण— स्निग्ध, गुरु, मूत्रल, सारक, बल्य, बृंहण, कफोत्सारि।

प्रभाव— दोष प्रभाव— वात-पित्तशामक।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोग प्रभाव— रक्तपित्त, दाह, तृषा, मूत्रकृच्छ्र, विष विकार, ज्वर।

मात्रा— 10 से 30 ग्राम।

विशिष्ट योग— तृणपंचमूल क्वाथ, उशीरासव, शर्बत खस, इत्र खस।

नैत्रबाला

पर्याय— संस्कृत— बाल, उदीच्य, केश के पर्याय, जल के पर्याय, बालक।

हिन्दी— सुगन्धबाला, नैत्रबाला।

लेटिन— पावोनिया ओडोराटा (Pavonia Odorota)

परिचय— तृण जाति की यह वनौषधि सिंध, बांदा, श्रीलंका तथा पश्चिमोत्तर प्रदेशों में पाई जाती है। इसके क्षुप पर बारीक तीक्ष्ण रोएं होते है।

पत्र— 3 से 5 भागों में विभक्त हृदयाकृति होते है।

पुष्प— गुलाबी रंग के गुच्छों में लगते है।

फल— अण्डाकार छोटे होते है। इसके मूल को औषधि प्रयोग में लिया जाता है।

रासायनिक संगठन— सुगन्धित द्रव्य के साथ पिच्छिल सत्त्व पाया जाता है।

गुण-धर्म— रस— तिक्त, कषाय। वीर्य— शीत। विपाक— मधुर।

गुण— रुक्ष, लघु, दाह प्रशमन, छर्दि निग्रहण, रक्तपित्त।

प्रभाव— दोष प्रभाव— त्रिदोषशामक।

रोग प्रभाव— तृष्णा, छर्दि, अतिसार, रक्तपित्त, हृद्रोग।

मात्रा— 3 से 4 ग्राम।

विशिष्ट योग— धान्यपंचक क्वाथ, षडङ्गपानीय।

नागर मोथा

पर्याय— संस्कृत— मुस्तक, मुस्त, वारिध, मेघवाची शब्द उरविन्द।

हिन्दी— मोथा, नागरमोथा।

लेटिन— साइफरस स्केरियोसस (Cyperus scariosus)

परिचय— मोथा के क्षुप प्रायः सर्वत्र ही जलाशयों के निकट पाये जाते है।

पत्र— लम्बे व पतले होते है। जो 6 से 24 इन्च या इससे भी अधिक ऊँची त्रिकोणाकार डण्डी से लगे रहते है।

पुष्प— तने के अन्त में पत्तों के बीच में लालिमायुक्त पीले रंग के फूलों की मंजरियां लगती है।

मूल— जड़ के नीचे पोन इन्च से 1 इन्च की परिधि में अण्डाकार कन्द लगता

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

है। जिसके ऊपर कई रोएं होते हैं तथा भीतर सफेद व सुगन्धित मज्जा होती है। इसे ही औषध प्रयोग में लिया जाता है।

रासायनिक संगठन— एलब्यूमिन, वसा, शर्करा एवं उड़नशील तैल पाया जाता है।

गुण-धर्म— **रस**— तिक्त, कषाय, कटु। **वीर्य**— शीत। **विपाक**— कटु।
गुण— लघु, रुक्ष, तृषादाहशमन, स्तन्य शोधन, रक्त शोधन, मूत्रल, विषघ्न, कृमिघ्न।

प्रभाव— **दोष प्रभाव**— पित्त कफशामक।
रोग प्रभाव— संग्रहणी, कृमि, रक्त विकार, प्रमेह, स्तन्य व विषदोष, ज्वर आदि शामक।

मात्रा— 1 से 3 ग्राम।

विशिष्ट योग— धान्यपंचक क्वाथ, षड्ङ्गपानीयम, मुश्तादिक्वाथ आदि।

पित्तपापड़ा

पर्याय— **संस्कृत**— पर्पट, वरतिक्त, सूक्ष्मपत्र, कवच, शीतप्रिय, कृशशाक, पित्तारि।
हिन्दी— पित्तपापड़ा, शाहतरा, धन पापड़।

परिचय— राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश तथा हिमालय की तराई वाले क्षेत्रों तथा गंगा के मैदानों में पाया जाता है।

पत्र— गाजर के समान खण्डित, मृदु।

पुष्प— लाल रंग के छोटे-छोटे।

फल— छोटे-गोल-चपटे।

रासायनिक संगठन— इसके पंचाङ्ग में फ्यूमेरिक एसिड, फ्यूमेरिन, तथा एलक्लाईड्स पाये जाते है।

गुण-धर्म— **रस**— अति तिक्त। **वीर्य**— शीत। **विपाक**— कटु।
गुण— लघु, मूत्रल, रक्तशोधन, रक्तपित्त शामक, दाहशामक, यकृदुत्तेजक।

प्रभाव— **दोष प्रभाव**— पित्त कफशामक।
रोग प्रभाव— दाह, तृषा, ज्वर, कामला, मूत्रकृच्छ्र, भ्रम, मूर्च्छा।

मात्रा— 1 ग्राम से 2 ग्राम।

विशिष्ट योग— षड्ङ्गपानीयम्, पर्पटादि क्वाथ, पंचतिक्तघृत।

चिरायता

पर्याय— **संस्कृत**— किरात तिक्त, कैरात, किरातक, काण्डतिक्त, भूनिम्ब, रामसेनक।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हिन्दी— चिरायता, चिराईता।

लेटिन— स्वीरटीया चिराटा (Subertia chirata)

परिचय— तर, गरम प्रदेशों से भूटान तक और खासिया के पहाड़ों में चिरायता के क्षुप पाये जाते है। 2 से 5 फीट ऊंचे गोल तथा सुषिर तने होते है।

पत्र— भालाकृति, लम्बे तथा जड़ के निकट बड़े एवं ऊपर की ओर क्रमशः छोटे होते जाते है।

पुष्प— हरित, पीत, बैंगनी रंग के छोटे-छोटे गुच्छों में लगते है। इसका पंचाङ्ग औषधि प्रयोग में लिया जाता है।

रासायनिक संगठन— आफेलिक एसिड, चिरातीन, केल्शीयम, राल एवं ग्लुकोसाइड पाया जाता है।

गुण-धर्म— **रस—** तिक्त। **वीर्य—** शीत। **विपाक—** कटु।

गुण— लघु, रुक्ष, दाहप्रशमन, रक्तशोधन, स्तन्य शोधन।

प्रभाव— **दोष प्रभाव—** पित्त-कफशामक।

रोग प्रभाव— विषम ज्वर, अरुचि, अग्निमांद्य, कृमि, रक्त विकार, कुष्ठ रक्तपित्त, विबन्ध।

मात्रा— 1 से 3 ग्राम।

विशिष्ट योग— सुदर्शन चूर्ण, किरातादि क्वाथ आदि।

पटोल पत्र

पर्याय— संस्कृत— तिक्त, पाण्डुक, कर्कश छद, अमृत फल, बीज गर्भ, कुष्ठहा।

हिन्दी— कडुवा परवल, परवर।

लेटिन— ट्राईकोसेन्थिस क्यूक्यूमेरीना। (Tricosanthes cucumerina)

परिचय— उत्तर प्रदेश के गंगीय क्षेत्र में तथा लगभग सभी तर प्रदेशों में पाया जाता है। पटोल की लता रोमश तथा चक्रारोही होती है।

पत्र— लम्बे नोकदार, कर्कश एवं विषम खण्डों में विभक्त होते हैं।

पुष्प— सफेद रंग के होते है।

फल— अण्डाकार, सफेद रेखाओं वाले और दोनों ओर नुकीले होते है।

रासायनिक संगठन— प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, केल्शियम, फासफोरस आदि।

गुण-धर्म— **रस—** तिक्त। , **वीर्य—** उष्ण। **विपाक—** कटु।

गुण— रुक्ष, लघु, पित्तसारक, दीपन, कृमिघ्न, विषघ्न, ज्वरघ्न, रक्तशोधन, अनुलोमन।

प्रभाव— **दोष प्रभाव—** वात कफशामक।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोग प्रभाव— तृषा, दाह, अग्निमांद्य, अम्लपित्त, रक्तपित्त, अर्शं, कामला।

मात्रा— 2 से 3 ग्राम।

विशिष्ट योग— पटोलादि क्वाथ, पंचतिक्त घृत।

चन्द्र शूर

पर्याय— संस्कृत— चन्द्र शूर, चन्द्रिका, वासपुष्पा।

हिन्दी— चनसूर, हालों या हालिम।

गुजराती— असेलियो।

लेटिन— लेपिडीयम सेटाइबम (Lepidium sativium)

वानस्पतिक परिचय—

भारत एवं तिब्बत में इसकी खेती होती है। क्षुप पशुओं के आहार के काम आता है। पत्तियों को सलाद में डालते हैं। वर्षायु क्षपु आधे से डेढ फीट ऊँचा होता है।

पत्र— लम्बे वृन्त पर लगे हुए भालाकृति होते हैं।

पुष्प— छोटे सफेद रंक की लम्बी मंजरियों में होते हैं। इस पर लगने वाली फली चक्राकार तथा कोष्ठयुक्त होती है। प्रत्येक कोष्ठ में एक बीज होता है।

बीज— ये लाल रंग के कुछ लम्बे नोंकाकृति होते हैं। जिनको जल में भिगोने पर लुआब पैदा होता है।

रासायनिक संगठन—

उड़नशील तैल, बैनजिल आइसो थाओसाइनेट, बीज में विशेषकर एक स्थिर तैल, प्रोटीन, वसा, फास्फोरस, कैल्शियम तथा गन्धक रहता है।

गुण-धर्म—

रस— कटु, तिक्त। **गुण**— लघु, रुक्ष, तीक्ष्ण।

वीर्य— उष्ण। **विपाक**— कटु।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— कफ वात शामक।

रोग प्रभाव— कटिशूल, सन्धिवात, वातरक्त, शुक्रदोष नाशक।

प्रयोज्यांग— बीज।

विशिष्ट योग— चतुर्बीज चूर्ण।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गिलोय

पर्याय— संस्कृत— गुडूची, अमृता, छिन्नरुहा, चक्रलक्षणिका।
हिन्दी— गिलोय, गुलेल।
लेटिन— टाइनोस्पोरा कोर्डिफोलिया (Tinospora cordifolia)

वानस्पतिक परिचय—

यह एक बहुवर्षायु लता है। जो खेत की बाडों एवं पेडों पर चढ़ती है। इसका तना मोटा, शाखा-प्रशाखाओं युक्त होता है। जिनसे पतले-पतले सूत्रवत् वाताशन मूल निकल कर झूलते रहते हैं।

त्वचा— धूसर वर्णी पतले शल्कयुक्त हरी त्वचा होती है।
पत्र— हृदयाकार, एकान्तर तथा हरित वर्णी।
पुष्प— पतझड़ के बाद मञ्जरीयुक्त होते हैं।
फल— मटर के समान अण्डाकार होते हैं।

रासायनिक संगठन—

बरबेरिन, गिलोइन तथा स्टार्च।

गुण-धर्म—

रस— तिक्त, कषाय। गुण— गुरु स्निग्ध।
वीर्य— उष्ण। विपाक— मधुर।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— त्रिदोषशामक।
रोग प्रभाव— तृष्णा, छर्दि, कृमि, अम्लपित्त, प्रमेह नाशक, रसायन।
प्रयोज्यांग— तना।
विशिष्ट योग— अमृतासत्व, संशमनी वटी, कैशोर गुग्गुल।

कायफल

पर्याय— संस्कृत— कट्फल, महावल्कल।
हिन्दी— कायफल।
लेटिन— मिरिका एस्युलेन्टा (Myrica esculenta)

परिचय—

10 से 15 फीट तक ऊँचा सदाबहार, छायादार छोटा वृक्ष होता है। जिसके तने पर मोटी धूसर रंग की ऊखड़ी हुई छाल होती है। इस छाल पर लम्बाई में गहरी धारियां होती हैं। इसकी टहनियों पर छोटे-छोटे रोम होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पत्र— भालाकार, दन्तुर एवं 3 से 6 इंच लम्बे होते हैं।

पुष्प— स्त्री एवं पुंपुष्प भिन्न-भिन्न वृक्षों पर मञ्जरियों में लगते हैं।

फल— आधे से पोन इंच लम्बे खिरनी के समान अण्डाकार बादामी रंग के खट्टे एवं मीठे होते हैं। ये वृक्ष उत्तरी पंजाब, गढ़वाल, कुमायुं तथा खासिया पर्वत शृंखला में पाये जाते हैं।

रासायनिक संगठन—

छाल में पीत रञ्जक, मीरीसेटिन तथा टेनिक होता है।

गुण-धर्म—

रस— कषाय, कटु, तिक्त। **गुण**— लघु, तीक्ष्ण।

वीर्य— उष्ण। **विपाक**— कटु।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— कफ वात शामक।

रोग प्रभाव— शिरोरोग, श्वास, कण्डू, शोथ नाशक।

प्रयोज्यांग— त्वचा।

विशिष्ट योग— कट्फल नस्य, कट्फलादि क्वाथ।

शतावरी

पर्याय— संस्कृत— शतावरी, शतमूली, शतवीर्या।

हिन्दी— शतावर, नारकांटा।

लेटिन— एस्पेरेघस रेसीमोसस (Asparagus Racemosus)

परिचय—

भारत में सर्वत्र ही पाई जानें वाली कांटे युक्त लता है। इसके कांटे चौथाई से आधे इंच लम्बे घुमावदार होते हैं।

पुष्प मञ्जरी— 1 से 2 इन्च लम्वी गुच्च युक्त मञ्जरी होती है जिस पर छोटे-छोटे पुष्प लगते हैं।

फल— मटर के आकार के लाल रंग के फल होते है। जिनमें 1 से 2 बीज होते हैं।

मूल— मूल स्तम्भ से अनेक शाखाओं में मोटी पुष्ट जड़े निकलती हैं। जिनके बीच में दृढ़ सूत्र रहता है। औषधि प्रयोग में इन मूलों का ही उपयोग होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रासायनिक संगठन—

शतावरी मूल से कोई विशिष्ट रासायनिक द्रव्य अभी तक नहीं पहचाना गया है। अपितु कुछ सेपोनिन निकाले गये हैं।

गुण-धर्म—

रस— मधुर, तिक्त। **गुण—** गुरु, स्निग्ध।
वीर्य— शीत। **विपाक—** मधुर।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— वात पित्त शामक।
रोग प्रभाव— रक्तपित्त, अम्लपित्त, रक्तप्रदर, स्तन्यनाश, क्षय, दौर्बल्य नाशक।
विशिष्ट योग— शतावरी घृत, शतावरी चूर्ण, नारायण तैल, शतावर्यादि गुग्गुल।

शंखपुष्पी

पर्याय— संस्कृत— शंखपुष्पी, क्षीरपुष्पी।
हिन्दी— शंखाहुली।
लेटिन— कनवाल्वुलस फ्यूरीआलिस (Convolvulus pluricaulis)

वानस्पतिक परिचय—

मैदानी इलाकों में जमीन पर प्रसरणशील क्षुप होता है। शाखायें-रोमश एवं 4 से 12 इंच लम्बी होती हैं।

पत्र— आधे इंच लम्बे रेखायुक्त होते हैं।
पुष्प— शंख के समान सफेद या हल्के गुलाबी फनल के आकार के होते हैं।
फल— अण्डाकार, .17 से .2 इंच लम्बे होते हैं।

रासायनिक संगठन—

शंखपुष्पीन।

गुण-धर्म—

रस— तिक्त। **गुण—** स्निग्ध, पिच्छिल।
वीर्य— शीत। **विपाक—** मधुर।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— वता पित्त शामक।
रोग प्रभाव— स्मृति भ्रंश, मानसिक रोग, रक्तचाप, हृदयरोग, कुष्ठ नाशक, मेध्य, केश्य।
विशिष्ट योग— सीरप शंखपुष्पी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ग्वारपाठा

पर्याय— संस्कृत— कुमारी, गृहकन्या, घृतकुमारिका।
हिन्दी— घी कुआरं, ग्वारपाठा।
लेटिन— एलोवेरा (Aloevera)

वानस्पतिक परिचय—

भारत वर्ष में सर्वत्र ही पाये जाने वाला 1 से 2 फीट ऊँचा क्षुप होता है।

पत्र— लगभग डेढ फीट लम्बी 4 इंच चौड़ी, पोन इंच मोटी गुदा युक्त दंतुर पत्र होते हैं जो तने के चारों ओर चक्राकार लगते हैं।

पुष्प— पत्तियों के बीच में से लम्बा पुष्पध्वज निकलता है। जिस पर रक्ताभपीत पुष्प आते हैं। इस पुष्पध्वज को राजस्थान में सिन्दुरी कहते हैं। पत्र को काटने पर उसमें से पीले रंग के लुआबदार निर्यास निकलता है जिसे कुमारीसार या एलुआ कहते हैं। यूनानी में मुसब्बर कहा गया है।

रासायनिक संगठन—

एलोइन, बारवेरोइन एवं राल।

गुण-धर्म—

रस— कटु। **गुण—** गुरु, स्निग्ध, पिच्छिल।
वीर्य— शीत (एलुआ उष्ण)। **विपाक—** तिक्त।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— कफ पित्त हर।
रोग प्रभाव— यकृत्त रोग, अग्निमांद्य, रक्तदुष्टि, शोथ नाशक। गर्भाशय संकोचक आर्तव संजनन।
विशिष्ट योग— कुमार्यासव, रज:प्रवर्तनीवटी।

ooo

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तृतीय अनुच्छेद

यूनानी-द्रव्य परिचय

बनप्सा (Viola Odarata)

पर्याय— हिन्दी— वनप्सा, बनफसा।

वानस्पतिक परिचय—

अनुष्ण शीत एवं तर प्रदेशों में वनप्सा के छोटे-छोटे क्षुप पाये जाते है।

पत्र— गोल, हृदयाकृति, सूक्ष्म, झालरदार तथा नीचे के पृष्ठ पर छोटे-छोटे रोएं होते है।

रासायनिक संगठन—

शर्करा, वायलीन, इमेटिन जैसा द्रव्य उड़नशील तैल आदि होते है।

गुण-धर्म—

रस— मधुर, तिक्त। वीर्य— शीत। विपाक— मधुर।

गुण— स्निग्ध, लघु, अनुलोमन, ज्वरध्न, कफोत्सारि, रक्त स्तम्भन, स्रंसन।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— वात पित्तशामक।

रोग प्रभाव— श्वसन संस्थानीय शोथ, कण्ठप्रदाह, प्रतिश्याय, ज्वर, रक्तार्श आदि।

मात्रा— 1 से 2 ग्राम चूर्ण। 5 से 10 मि.ली. स्वरस।

विशिष्ट योग— वनप्साशार्करा, वनप्सादि क्वाथ।

गाजवां (Onosma Bracteatum)

पर्याय— संस्कृत— गोजिह्वा, खरपर्णिनी।
हिन्दी— गाजबां, वनगोभी।

वानस्पतिक परिचय—

तर प्रदेशों में पाये जाने वाले गाजवां का क्षुप भूसंसक्त रहता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पत्र— गाय की जिह्वा के समान आकृति वाले खुरदरे, मोटे तथा सफेद छींटे वाले होते हैं।

पुष्प— नीलाभ या रक्ताभ रंग के गुच्छों में लगते है।

रासायनिक संगठन—

सोडियम, पोटाशियम, केलूशियम, आइरन तथा पिच्छिल द्रव्य पाये जाते है।

गुण-धर्म—

रस— मधुर, तिक्त। **वीर्य**— शीत। **विपाक**— मधुर।

गुण— गुरु, स्निग्ध, पिच्छिल, हृद्य, बृहंण, मूत्रल, लेखन, सारक, श्वासनलिका विस्फारक, रक्त स्तम्भक।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— वात पित्तशामक।

रोग प्रभाव— कास, प्रतिशाय, हृद्दौर्बल्य, पार्श्वशूल, विबन्ध, ज्वर, आमवात, रक्त विकार, मूत्रकृच्छ्र।

मात्रा— 3 से 6 ग्राम पंचाग चूर्ण।

विशिष्ट योग— खमीरागाजवां, गोजिह्वादिक्वाथ, बनप्सादि क्वाथ आदि।

जूफ़ा (Hyssopus officinalis)

पर्याय— हिन्दी— जूफा।

वानस्पतिक परिचय—

फारस में अधिकतर पाया जाने वाला जूफ़ा एक तृणवर्गीय वनस्पति है। जिसकी भूविसर्पी शाखायें ग्रन्थिल होती है।

पत्र— भालाकृति लम्बे, पत्रों में से मन्द सुगन्ध आती है।

पुष्प— द्रोण पुष्पी के समान प्रत्येक शाखा के पर्वों पर हल्के पीले रंग के पुष्प लगते है।

फल— त्रिकोणाकार, बैंगनी रंग के चार प्रकोष्ट वाले होते है।

रासायनिक संगठन—

हाइसो आयल, वसा, शर्करा एवं कसैला द्रव्य पाये जाते है।

गुण-धर्म—

रस— तिक्त, कटु। **वीर्य**— उष्ण। **विपाक**— कटु।

गुण— तीक्ष्ण, लघु, शोथहर, प्रमाथी, स्रंसन, अनुलोमन, यकृत्उत्तेजक, कृमिघ्न।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रभाव—

दोष प्रभाव— वात कफशामक।

रोग प्रभाव— कास, श्वास, प्रतिश्याय, यकृत्कृमि, जलोदर।

मात्रा— 10 से 20 ग्राम।

विशिष्ट योग— शर्बतजूफ़ा, गोजिह्वादि क्वाथ।

खतमी (Althoia officinalis)

वानस्पतिक परिचय—

हिमालय की पश्चिम तलहटियों में पाया जाने वाला रोमश क्षुप होता है।

पत्र— खुरदरे तथा कंगुरेदार गोंल होते है।

पुष्प— लाल, पीले या सफेद रंग के गोल होते हैं इन्हें गुलमेरु कहते है।

बीज— वृक्काकार होते है। इन्हें तुख्मखतमी भी कहते है।

मूल— शंकुवाकार, गोल, लम्बी झुर्रियादार होते है। सफेद रंग की इन जड़ों को रेशाखतमी कहते है।

रासायनिक संगठन—

एलूविन, स्टार्च, पिच्छिल द्रव्य एवं स्थिर तैल पाया जाता है (मूल में)।

गुण-धर्म—

रस— मधुर, तिक्त। **गुण—** गुरु, पिच्छिल।

वीर्य— अनुष्ण। **विपाक—** मधुर।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— पित्त कफशामक।

रोग प्रभाव— कास, प्रतिश्याय, अन्त्रशोथ, प्रवाहिका, मूत्रकृच्छ्र।

मात्रा— 3 से 5 ग्राम।

जदवार (Delphinium denuatum)

पर्याय— हिन्दी— निर्विषी।

वानस्पतिक परिचय—

समशीतोष्ण प्रदेशों में जदवार के बहुवर्षायु सरल क्षुप पाये जाते है।

पत्र— गोल, लम्बे धनिये के समान होतें है।

पुष्प— नीलाभ, चंचुयुक्त, रोम वाले होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फल— घण्टाकृति पीले रंग के होते है।

मूल— धूसर रंग के ठोस शंकु के समान होते है।

रासायनिक संगठन—

इसकी जड़ों में डेलफीनाईन, स्टेफिसग्रीन, डेल्फाक्यूरी नामकक्षार द्रव्य होते है।

गुण-धर्म—

रस— तिक्त। **गुण**— रुक्ष, लघु, पित्तसारक।

वीर्य— उष्ण। **विपाक**— कटु।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— वात कफशामक।

रोग प्रभाव— आक्षेप, अर्दित, वात व्याधियां, अपस्मार, हृद्दौर्बल्य, श्वास, कास, कृच्छ्रार्तव।

मात्रा— 500 मि.ग्रा. से 1 ग्राम।

विशिष्ट योग— निर्विष्यांदिवटी।

अयापान (Eupatorium ayapana)

पर्याय— संस्कृत— विशल्यकर्णी।
हिन्दी— अया पानी।

वानस्पतिक परिचय—

गुल्म के समान छोटा क्षुप होता है जिसकी रक्ताभ, सरल, रोमयुक्त शाखायें होती है।

पत्र— लाल रंग के वृन्त पर तीन स्पष्ट शिराओं वाले कोमल, बड़े और नुकीले पत्ते लगते है।

पुष्प— बैंगनी रंग के होते।

रासायनिक संगठन—

अयापानिनसत्व, उड़नशील तैल तथा कसैला द्रव्य पाया जाता है।

गुण-धर्म—

रस— तिक्त, कषाय। **गुण**— शोणित स्थापन, लघु, रुक्ष।

वीर्य— उष्ण। **विपाक**— कटु।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रभाव—

दोष प्रभाव— वात पित्तशामक।
रोग प्रभाव— अत्यार्तव, रक्तप्रदर, रक्तमेह, रक्तष्ठीवन, रक्तातिसार।
मात्रा— 2 से 5 ग्राम।

आबरेशम (Slickpod)

पर्याय— संस्कृत— कोश।
हिन्दी— रेशम का कोया।

वानस्पतिक परिचय—

बंगाल, बिहार, कर्नाटक, आदि प्रान्तों में शहतूत के वृक्षों पर रेशम के कीडे पालकर उत्पादन किया जाता है। सफेद या हल्का पीलापन लिये हुये रेशम के तन्तुओं के गुच्छों वाला यवाकार कोश होते है। इनमें से कीडे को निकाल कर प्रयोग किया जाता है।

आलू बुखारा

पर्याय— संस्कृत— आरुक्, भल्लुक, रक्त फल।
लेटिन— Prunus communis

वानस्पतिक परिचय—

5 से 6 हजार फीट तक ऊंचे तर इलाकों में आलू बुखारा के मध्यमाकार गुल्म पाये जाते है। इसकी शाखाएं कभी-कभी कांटेवाली होती है।
पत्र— अण्डाकार, कंगूरे वाले होते है।
पुष्प— छोटे-छोटे आकार के तथा हल्के पीले रंग के होते हैं।
फल— आडु एवं आंवले के समान गोल, गहरे लाल रंग के (पकने पर) होते हैं। इसकी मृदुमज्जा के बीच में एक बीज होता है।

रासायनिक संगठन—

पेक्टिन, मेलिक एसिड, साईट्रिक एसिड तथा फ्रुक्टोज पाये जाते है।

गुण-धर्म—

रस— अम्ल, मधुर। **वीर्य—** शीत। **विपाक—** मधुर।
गुण— स्निग्ध, गुरु, सर, दींपन, मूत्रल, ज्वरध्न, तृषानाशक।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रभाव—

दोष प्रभाव— वात पित्तशामक।
रोग प्रभाव— हृल्लास, छर्दि, अर्श, विबन्ध, वातरक्त, दाह, ज्वर, मूत्रकृच्छ्र।
मात्रा— 2 से 3 फल।

ईसब-गोल

पर्याय— लेटिन— Plantago avata

वानस्पतिक परिचय—

गुजरात तथा कर्नाटक में ईसबगोल की प्रचुर मात्रा में खेती की जाती है। गुजरात में ऊंझा इसकी मुख्य मण्डी है। ईसबगोल का छोटा सा क्षुप होता है। जिसकी शाखाओं पर छोटे-छोटे रोयें लगे होते है।

पत्र— चावल के समान रेखाङ्कित लम्बे पत्र होते है। इन पर उभरी हुई तीन शिराएँ स्पष्ट होती है।

पुष्प— मंजरियों में शाखा के अन्तिम भागों में लगते है।

फल— अण्डाकार सम्पुटित फलों में अनेक छोटे-छोटे बीज निकलते है। इन बीजों को ही ईसबगोल कहते है। यह लाल या गुलाबी रंग के नौकदार तथा एक तरफ से नौकाकृति होते है। ईसब गोल के बीजों पर पतला सफेद आवरण चढा होता है जो ईसब गोल की भूसी के नाम से व्यवहार में लिया जाता है।

रासायनिक संगठन—

एल्ब्यूमिन, म्यूसीलेज तथा तैल पाया जाता है।

गुण-धर्म—

रस— मधुर। **गुण—** स्निग्ध, पिच्छल, गुरु, स्नेहन, ग्राही सर।
वीर्य— शीत। **विपाक—** मधुर।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— वात पित्तशामक।
रोग प्रभाव— प्रवाहिका, रक्तातिसार, विबन्ध, गलशोथ, रक्तार्श।
मात्रा— भूसी 3 से 6 ग्राम।
विशिष्ट योग— ईसब गोल भूसी, ईसब्बेल, स्पोलेक्स।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उसब्बा

पर्याय— लेटिन— Smilaz zaylanica

वानस्पतिक परिचय—

उसब्बा की लता हिमालय की मध्यम पर्वत श्रृंखला के तर प्रदेशों में बहुधा पाये जाते है। सारिवा की लता के समान इसकी लता भी फैलने वाली होती है। किन्तु कांटे लगे होते है।

पत्र— सारिवा की तरह लम्ब गोल, किन्तु पतले एवं मृदु होते है।

पुष्प— लालिमा लिए हुए हरे रंग के गुच्छों में लगे हुए होते है।

रासायनिक संगठन—

उड़नशील तैल, राल, स्टार्च, स्माईलेक्सिन पाये जाते है।

गुण-धर्म—

रस— तिक्त, कषाय। **गुण**— लघु, रुक्ष, मूत्रल, रक्तशोधन।

वीर्य— उष्ण। **विपाक**— कटु।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— त्रिदोषशामक।

रोग प्रभाव— रक्तरोग, त्वग्रोग, उपदंश पूयमेह, यकृत रोग, मूत्राघात तथा वातव्याधियों में उपयोगी है।

मात्रा— 2 ग्राम से 5 ग्राम तक।

विशिष्ट योग— शर्बत उसब्बा, माजून उसब्बा।

खून खराबा

पर्याय— हिन्दी— हीरा दोखी।
लेटिन— (Dracaena cinnabari)

वानस्पतिक परिचय—

अरब तथा अफ्रीका के अन्य देशों में यह अधिकतर पाया जाता है। खून खराबा एक प्रकार के वृक्ष से निकलने वाला गौंद है। इसके चमकीले लाल रंग के दाने होते है।

रासायनिक संगठन—

सिनेमिक एसिड तथा बेन्जोर्यिक एसिड मुख्य रूप से पाये जाते है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण-धर्म—

रस— कषाय। **गुण—** रुक्ष, लघु, रक्त संग्राही।
वीर्य— शीत। **विपाक—** कटु।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— पित्त कफशामक।
रोग प्रभाव— रक्तार्श, उरःक्षत, अत्यार्तव, प्रवाहिका, रक्तातिसार, शीताद, पुरपुरा।
मात्रा— 1 से 5 ग्राम।
विशिष्ट योग— नाग केशरादियोग, रक्तरोधक चूर्ण।

खूब कला

पर्याय— लेटिन— Sisymbrium iroia

वानस्पतिक परिचय—

सरसों के पोधे के समान खूब कला का क्षुप पंजाब, हिमाचल प्रदेश आदि पश्चिमोत्तर राज्यों में अधिक उत्पन्न होता है। इसके बीज खस-खस की तरह छोटे-छोटे गोल आकृति के तथा नारङ्गी या पीताभ रंग के होते है।

गुण-धर्म—

रस— तिक्त। **गुण—** पिच्छिल, स्निग्ध, तृषा, शोथहर आदि।
वीर्य— समशीतोष्ण। **विपाक—** मधुर।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— वात पित्तशामक।
रोग प्रभाव— मसूरिका, जीर्ण ज्वर, आँत्रिक ज्वर, दौर्बल्य, तृषा।
मात्रा— 2 से 3 ग्राम।
विशिष्ट योग— मन्थरज्वरहर कषाय।

लहसन

पर्याय— संस्कृत— रसोंन, म्लेच्छकन्द, उग्रगन्ध।
हिन्दी— लहसुन।
लेटिन— Allum sativum
अंग्रेजी— Garlic

वानस्पतिक परिचय—

हमारे देश के लगभग सभी गरम प्रान्तों में इसकी खेती की जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पत्र— मुलायम, पतले, चपटे, लम्बे होते है।

पुष्प— मध्यवर्ती दण्ड से सफेद गुलाबी गुच्छों में लगते है जिनमें से भीनी-भीनी गन्ध आती है।

कन्द— इसकी जड़ों में गोल, सफेद रगं के कन्द लगते है जिन पर कुछ लाल रंग के आवरण चढे होते है। इसमें कई कलिकाएं होती है। एक अन्य प्रकार की जाति में एक ही कलिका बनती है, जिसे एक पुथिया लहसन कहते है।

रासायनिक संगठन—

उड़नशील पीले रंग का तैल, गन्धक, शर्करा एल्ब्यूमिन, केल्शियम, आयरन, स्टार्च तथा एसकार्बिक एसिड पाया जाता है।

गुण-धर्म—

रस— अम्ल को छोड़कर शेष पाँच रस होते है।

गुण— तीक्ष्ण, सर, स्निग्ध, गुरु, शूलहर, अनुलोमन, मूत्रल, कृमिघ्न, हृद्य, शुक्रार्तव जनन।

वीर्य— उष्ण। **विपाक**— कटु।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— वात कफशामक।

रोग प्रभाव— आमवात, गृध्रसी आदि वातव्याधि, गुल्म, उदावर्त, कृमि, क्षय, कास, श्वास, जीर्ण ज्वर, नाडीव्रण आदि।

मात्रा— 2 से 5 ग्राम।

विशिष्ट योग— रसोनादिवटी, रसोंनपिण्ड, रसोंनादि तैल, रसोंनसिद्ध क्षीर।

प्याज

पर्याय— संस्कृत— पलाण्डु, यवनेष्ट।
हिन्दी— कांदा।
लेटिन— Allium cepa
अंग्रेजी— Onion

वानस्पतिक परिचय—

हमारे दैनिक व्यवहार में आने वाले प्याज के क्षुप की देश के लगभग प्रदेशों में खेती की जाती है।

पत्र— मोटा, चिकना, पोला (छिद्र युक्त) तथा लम्बा होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्प— पत्तों के बीच से निकलते हुए लम्बे पुंष्प दण्ड पर सफेद रंग के गुच्छों में लगते है।

बीज— काले रंग के त्रिकोणाकार होते है।

कन्द— गोल सफेद या लाल रंग के पतली झिल्ली से अनेक स्तरों में ढके हुए होते है।

रासायनिक संगठन—

कन्द की बाहरी त्वचा में रंजक तत्व, कन्द में उड़नशील तैल, गन्धक के सेन्द्रिय योग, शर्करा, पिच्छल द्रव्य श्वेतसार खनिज द्रव्य एवं कार्यकारी जैसे— Scillapicrine, Scillamarine, Scillinine पाये जाते है।

गुण-धर्म—

रस— कटु। **गुण**— तीक्ष्ण, गुरु, स्निग्ध।

वीर्य— समशीतोष्ण। **विपाक**— मधुर।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— वात कफशामक।

रोग प्रभाव— व्रणशोथ, विसूचिका, तिमिर, वमन, अर्श, श्वास, मूत्रकृच्छ्र, क्लैब्य, अंशुघात।

मात्रा— स्वरस 10 मिलि. से 30 मिलि.। बीजचूर्ण— 1 से 3 ग्राम।

रेवन्द चीनी

पर्याय— लेटिन— Rheum emodi

वानस्पतिक परिचय—

लगभग 4000 से 12 हजार फीट ऊंची पहाड़ियों पर रेवन्द चीनी के क्षुप पाये जाते है। आधे से 2 मीटर ऊंचा मध्यमाकार होता है। इसकी मोटी चिकनी तथा पिलापन लिये हुये धूसर रंग की होती है। अत: इसको पीतमूला भी कहते है।

पत्र— हृदयाकृति पत्र स्वाद में खट्टे होते है।

पुष्प— पत्र वृन्त के कोण में मंजरियों में छोटे-छोटे पीलापन लिये हुए लगते है।

रासायनिक संगठन—

इसक जड़ों में एमोडिन, पेक्टिन, स्टार्च रियोटेनिक एसिड, राल तथा शर्करा पाई जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण-धर्म—

रस— तिक्त, कटु। **गुण—** लघु, रुक्ष, तीक्ष्ण, यकृदुत्तेजक।
वीर्य— उष्ण। **विपाक—** कटु।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— पित्त कफशामक।
रोग प्रभाव— कामला, मूत्राघात, यकृत शोथ, जलोदर, विबन्ध।
मात्रा— 500 मि. ग्रा. से 2 ग्राम।
विशिष्ट योग— पीतमूलादि क्वाथ, रेवन्द चीनी चूर्ण।

जलापा

पर्याय— लेटिन— Ipomoea convolvulus

वानस्पतिक परिचय—

निशोथ की लता के समान जलापा की भी लता होती है जो उत्तरी अमेरिका के जलापा नामक प्रदेश में अधिक पाई जाती है।

मूल— सलगम के समान पुष्ट, दृढ, भारी एवं रेखाओं वाली होती है।

रासायनिक संगठन—

जलापिन तथा जलापोज रेजिन पाया जाता है।

गुण-धर्म—

रस— तिक्त, मधुर। **गुण—** रुक्ष, तीक्ष्ण, लघु, शोथहर।
वीर्य— उष्ण। **विपाक—** कटु।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— पित्त रेचन।
रोग प्रभाव— जलोदर, विबन्ध, वातव्याधियाँ, वृक्क शोथ, यूरीमिया।
मात्रा— 250 मि.ग्रा. से 1.5 ग्राम तक।

तालमखाना

पर्याय— संस्कृत— इक्षुरक, क्षुरक, ईक्षुगंधा, काण्डेक्षु।
लेटिन— Asteracantha longifolia

वानस्पतिक परिचय—

तालमखाना हमारे देश के सभी प्रान्तों में विशेषकर गोवा, बंगाल, बिहार के जलाशयों

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

एवं नदियों के किनारे पर पाया जाता हैं। इसका क्षुप 0.5 मीटर से 1 मीटर ऊंचा कांटों वाला होता है। इसके तने में पर्व बने होते है।

पत्र— पत्ते पर्वसन्धि पर भालाकृति पत्र जो लम्बे और नुकीले होते है, लगे रहते है। इसी स्थान पर लम्बे पीले कांटे लगे रहते है।

पुष्प— हुलहुल के समान तने की पर्व सन्धियों पर नीले या बैंगनी रंग के फूलों के गुच्छे लगते है।

बीज— सम्पुटित फलों में 4 से 8 संख्या तक रक्ताभ रोयेंदार बीज लगते है जिनको पानी में डालने पर वे लुबाब छोड़ते है। इन्हें ही तालमखाना कहते है।

रासायनिक संगठन—

एल्ब्यूमीनाइडस, लाईपेज, ईस्ट, पीले रंग का स्थिर तैल पाया जाता है।

गुण-धर्म—

रस— मधुर, तिक्त। **वीर्य**— शीत। **विपाक**— मधुर।

गुण— स्निग्ध, पिच्छिल, गुरु, मूत्रजनन, शुक्रल, वेदनास्थापन।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— वात पित्तशामक।

रोग प्रभाव— शुक्र दोष, शुक्रक्षय, मूत्रकृच्छ्र, वातरक्त कामला, शोथ, अश्मरी।

मात्रा— बीजं चूर्ण 2 से 4 ग्राम।

दरीयाई नारियल

पर्याय— लेटिन— Lodoicea seychellarum

वानस्पतिक परिचय—

दरियाई नारियल के वृक्ष नारियल के वृक्षों के समान आकृति वाले 15 से 30 मीटर तक ऊंचे होते । जो अमेरिका तथा अफ्रीका के तटवर्ती क्षेत्रों में अधिकतर पाये जाते है।

पत्र— नारियल के समान।

पुष्प— छोटे-छोटे होते है।

फल— नारियल के समान आकृति के होते है किन्तु भारी, कठिन एवं बड़े होते है। इसका औसत भार 18 से 23 किलोग्राम होते है। इसे तोड़ने पर सफेद ठोस गिरी निकलती हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण-धर्म—

रस— कटु, मधुर। वीर्य— उष्ण। विपाक— कटु।
गुण— रुक्ष, लघु, खर, मूत्रल, विषनाशक।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— वात कफशामक।
रोग प्रभाव— हृद्दौर्बल्य, मधुमेह, विसूचिका, तृषा, स्थावरविषविकार नाशक।
विशिष्ट योग— जवाहरमोहरा।

बिहीदाना

पर्याय— संस्कृत— बिही।
लेटिन— Pyruscydonia

वानस्पतिक परिचय—

बहुत सारी टेढी-मेढी शाखा प्रशाखाओं वाला विही का मध्यमाकार क्षुप, पश्चिमोत्तर राज्यों में अधिकतर पाये जाते है।

पत्र— कुछ गोलाई लिए हुए होते।

पुष्प— सेव के समान आकृति वाला, लालिमा लिये हुए पीले रंग के सुगन्धित होते है जिनमें से कई बीज निकलते है।

रासायनिक संगठन—

सीडीनिन, फासफोरस, लौह,मेगनेशियम, केल्शियम, सल्फ्यूरिक एसिड तथा एक प्रकार का तैल पाया जाता है।

गुण-धर्म—

रस— मधुर। वीर्य— शीत। विपाक— मधुर।
गुण— गुरु, स्निग्ध, हृद्य,.बृंहण, तृषा प्रशमन, नाड़ी बल्य।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— वात पित्तशामक।
रोग प्रभाव— पाण्डु, स्नायुदौर्बल्य, हृद्रोग, मूत्रकृच्छ्र, रक्तातिसार।
मात्रा— 3 से 5 ग्राम।
विशिष्ट योग— बादामपाक, सुपारीपाक, लउक्सपिस्ता।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तुख्म खस-खस

वानस्पतिक परिचय—

अफीम के डोडों के सूखने के बाद उनमें से सफेद, गोल, राई जैसे कई बीज निकलते है इनको ही खस-खस, तुख्म खस-खस या पोस्त के दाने कहते है। शेष विवरण अफीम के प्रकरण में देखें।

अंजीर

पर्याय— संस्कृत— फल्गु, राजोदुम्बर।
लेटिन— Ficuscarica

वानस्पतिक परिचय—

कश्मीर, गुजरात, पंजाब, तमिलनाडु आदि प्रदेशों में अंजीर के मध्यमाकार वृक्ष बागों में लगाये जाते हैं।

पत्र— बड़ के पत्ते के समान आकृति वाले किन्तु रोमश एवं कर्कश होते है।

फल— गूलर के समान माँसल, लाल रंग के स्निग्ध और सुषिर होते है। जिसमें कई छोटे-छोटे बीज होते है।

रासायनिक संगठन—

ग्लुकोज, एलब्यूमिन, वसा, फासफोरस, आइरन, केल्शियम, विटामीन ए. बी. सी. डी होते है।

गुण-धर्म—

रस— मधुर। **वीर्य—** शीत। **विपाक—** मधुर।

गुण— स्निग्ध, गुरु, बृंहण, मूत्रल स्रंसन, ज्वरघ्न॥

प्रभाव—

दोष प्रभाव— वात पित्तशामक।

रोग प्रभाव— विबन्ध, कामला, अर्श, अम्लपित्त, यकृतरोग, आन्त्रिकज्वर, मसूरिका, रक्तविकार।

मात्रा— 2 से 4 फल।

विशिष्ट योग— शर्बत अंजीर।

लिसौड़ा

पर्याय— संस्कृत— श्लेष्मांतक, उद्दाल, शैलू, भूतवृक्षक।
हिन्दी— लिसोड़ा, लेहसवा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लेटिन— Cordiamixa

वानस्पतिक परिचय—

लिसोडे के मध्यमाकार वृक्ष लगभग पूरे देश में मिलते है, यह वृक्ष 8 से 10 मीटर तक ऊंचा होता है।

पत्र— लट्वाकार, खुरदरे तथा उनमें 4 से 6 सिराओं के जोड़े होते है।

पुष्प— छोटे-छोटे सफेद रंग के गुच्छों में लगते है।

फल— गोल, मांसल एवं पकने पर पीले रंग के होते है। जिसमें एक बड़े बीज के ऊपर मीठा, पिच्छिल लुबाब होता है।

रासायनिक संगठन—

फल मज्जा में म्यूसीलेज पाया जाता है।

गुण-धर्म—

रस— मधुर। **वीर्य**— शीत। **विपाक**— मधुर।

गुण— स्निग्ध, गुरु, रक्त पित्तसारक, मूत्रल, श्वसनिकागत उद्वेष्टनशामक, कफ निस्सारक।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— वात पित्तशामक।

रोग प्रभाव— कास, श्वास, प्रतिश्याय, श्वसनिकाशोथ, विबन्ध, मूत्रकृच्छ्र।

मात्रा— 10 से 20 ग्राम।

विशिष्ट योग— लउक सपिस्ता।

उन्नाब

पर्याय— संस्कृत— सौवीर, सौवीरबदर, राजबदर।
लेटिन— Zizyphus vulgaris

वानस्पतिक परिचय—

बेरी के समान कांटों वाला इसका गुल्म लगभग छः हजार फीट ऊंचे प्रदेशों में विशेषकर पंजाब, उत्तर प्रदेश, बंगाल तथा अफगानिस्तान में पाये जाते है।

पत्र— मौटे, गोल, रोमश तथा मुलायम होते है।

फल— गोल लाल रंग के मांसल होते है।

रासायनिक संगठन—

शर्करा एवं पिच्छिल द्रव्य फल में पाये जाते है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण-धर्म—

रस— मधुर। वीर्य— शीत। विपाक— मधुर।

गुण— गुरु, स्निग्ध, पिच्छिल, दाहशमन, सर, मूत्रल, रक्तशोधन।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— वात पित्तशामक।

रोग प्रभाव— प्रतिश्याय, अरुचि, विबन्ध, रक्तविकार, मूत्रकृच्छ्र, वातजकास।

मात्रा— 5 से 7 फल।

विशिष्ट योग— लउक सपिस्ता, शर्बत उन्नाब।

मुनक्का

पर्याय— संस्कृत— द्राक्षा, मृद्विका, गोस्तनी।

हिन्दी— दाख, मुनक्का, अँगूर।

लेटिन— वाइटिस विनीफेरा (Vitis vinifera)

वानस्पतिक परिचय—

इसकी आरोही लता होती है।

पत्र— हृदयाकृति में 6 से 8 इन्च लम्बे-चौडे, 3 से 7 कोण युक्त या खण्डित रोमश होते हैं।

पुष्प— हरित वर्णी गुच्छों में लगते हैं।

फल— गोस्तनाकार गुच्छे होते हैं। प्रत्येक फल में 3 से 5 बीज होते है जो हरे रंग के तथा पकने पर पीताभ वर्ण क हो जाते है। इन्हें ही सुखाने पर मुनक्का कहते हैं।

रासायनिक संगठन—

ग्लूकोज, गोंद, टार्टरिक, रेसेमिक एसिड, सोडियम और पोटेशियम क्लोराइड, कैल्शियम, मैग्नेशियम, फास्फोरस और लौह।

गुण-धर्म—

रस— मधुर। वीर्य— शीत। विपाक— मधुर।

गुण— स्निग्ध, गुरु, मृदु।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— वात पित्तशामक।

रोग प्रभाव— हृद्य, रक्तप्रसादन, मूत्रल, वृष्य, जीवनीय, रक्तपित्त, तृष्णा शामक।

विशिष्ट योग— द्राक्षावलेह, द्राक्षारिष्ट।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उलटकम्बल

पर्याय— संस्कृत— पिशाच कार्पास, पिवरी।
हिन्दी— उलटकम्बल।
लेटिन— एब्रोमा आगस्टा (Abroma augusta)

वानस्पतिक परिचय—

उलटकम्बल का लगभग 10 फीट ऊंचा रोमश क्षुप होता है।

पत्र— 4-5 इंच लम्बे-चौडे दन्तुर धार युक्त होते हैं।

पुष्प— दो इंच व्यास के बैंगनी रंग वाले पुष्प गुच्छ होते हैं।

फल— पंच कोणीय या पंच कोष्ठीय फल में मूली के बीज के समान आकृति वाले काले बीज होते हैं।

रासायनिक संगठन—

मूलत्वक् में निर्यास, राल, एवं एक प्रकार का स्थिर तैल होता है।

गुण-धर्म—

रस— कटु, तिक्त। **वीर्य**— उष्ण। **विपाक**— कटु।

गुण— लघु, रुक्ष, तीक्ष्ण, गर्भशयोत्तेजक, आंर्तवसंर्जनन।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— कफ वातशामक, पित्तवर्धक।

रोग प्रभाव— कष्टार्तव, रजोरोध नाशक।

उस्तखुदूस

पर्याय— अरबी— आनिशुल, हाफिजुल।
हिन्दी— धारू, उस्तखुद्स, अल्फाजन।
लेटिन— लेबिन्डुलास्टिकस

वानस्पतिक परिचय—

तीव्र कर्पूर जैसी गन्ध वाला उस्तुखूदूस का दो से तीन इंच ऊंचा क्षुप होता है। जिसके पत्ते वृन्त रहित, आयातकार एवं रेखांकित होते हैं।

पत्र— बैंगनी रंग के सघन सूक्ष्म रोमयुक्त, सुगन्धित मंजरियों में लगते है इन्हें सूंघने पर छींक आती है।

बीज— ज्योतिष्मति के बीज के समान छोटे, चपटे, कृष्णाभ होते हैं। भूमध्य सागर के क्षेत्र में यह क्षुप अधिक मिलता है। फारस की खाड़ी से इसका आयात किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रासायनिक संगठन—

पुष्पों में लालिमा लिया हुआ पीतवर्णीय सुगन्धित तैल।

गुण-धर्म—

रस— कटु, तिक्त। **वीर्य—** उष्ण। **विपाक—** कटु।
गुण— तीक्ष्ण, रुक्ष।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— कफ वात शामक।
रोग प्रभाव— अग्निमांद्य, विबन्ध, हृद्‌दौर्बल्य नाशक।
विशिष्ट योग— शर्बत, अर्क।

कबाब चीनी

पर्याय— संस्कृत— कंकोल, गंधमरिच।
हिन्दी— कबाबचीनी, शीतल चीनी।
फारसी— कबावचीनी।
लेटिन— पाइपर क्यूबेवा (Piper cubeba)

वानस्पतिक परिचय—

वृक्षों पर चढ़ने वाली लता होती है। जिसके पत्र 5 से 6 इंच लम्बे आयतांकार पान के समान तीक्ष्णाग्र होते हैं।
पुष्प— छोटे, गुच्छों में एकलिंगी होते हैं।
फल— गोल, मरिच के समान 6 से 8 मिलीमीटर घास वाले उग्रगन्धि, कटु वृन्त होते हैं। इन्हें मुँह में रखने से ठण्डक का अनुभव होता है। इसलिए शीतलचीनी कहते हैं।

रासायनिक संगठन—

हरिताभ तैल, राल, क्यूबेबिन, क्यूबेबिक अम्ल।

गुण-धर्म—

रस— कटु, तिक्त। **वीर्य—** उष्ण। **विपाक—** कटु।
गुण— लघु, रुक्ष, तीक्ष्ण।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— कफवात शामक।
रोग प्रभाव— वाजीकरण, आर्तव जनन, मूत्रल, रोचन, दीपन।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुडहल

पर्याय— संस्कृत— जपा, औण्ड्रपुष्प।
हिन्दी— गुडहल, जवा।
लेटिन— हिविसकस रोजा साइनेन्सिस (Hibiscus-Rosa-Sinensis)

वानस्पतिक परिचय—

गुडहल का शाखा-प्रशाखा युक्त 5 से 8 फीट ऊंचा गुल्म होता है। जिसके पत्ते शहतूत के पत्तों के समान लट्वाकार, चिकने और चमकीले होते हैं।

पत्र— लाल रंग के घंटाकृति एवं एकल होते हैं।

फल— लम्ब गोल, अनके बीज युक्त। यह समस्त भारत में पायां जाता है तथा चीन इसका मूल देश माना जाता है।

रासायनिक संगठन—

पुष्प में नाइट्रोजन, वसा, कैल्शियम फास्फोरस, लौह, तथा विटामिन बी. एवं सी. होते हैं।

गुण-धर्म—

रस— कषाय, तिक्त। **वीर्य—** शीत। **विपाक—** कटु।
गुण— लघु, रुक्ष।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— कफपित्त शामक।

रोग प्रभाव— रक्तातिसार, रक्तार्श, रक्तपित्त, रक्तप्रदर नाशक। इसके फूलों का प्रयोग गर्भ निरोधन के लिए भी किया जाता है।

रूमी मस्तगी

पर्याय— संस्कृत— मस्तगी, रूमीमस्तगी।
अरबी— मस्तकी, उन्दररूमी
लेटिन— पिस्टेशिया लेन्टिशकस (Pistacia lentiscus)

वानस्पतिक परिचय—

मस्तगी का पेड लगभग 15 फीट ऊंचा एवं सदा हरा-भरा रहता है। पत्र— पक्षवत फैले रहते हैं। इसकी शाखा-प्रशाखाओं से एक गाढा जमा हुआ गोंद निकलता है जिसे रूमीमस्तगी कहते हैं। इसमें से मन्द सुगन्ध तथा स्वाद मधुर होता है। यह वृक्ष भूमध्य सागर के निकट एवं उत्तरी अफ्रीका में अधिक पाये जाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रासायनिक संगठन—

मेस्टीकोरेसीन, मेस्टीकोलिक एसिड तथा एकतिक्तपदार्थ।

गुण-धर्म—

रस— मधुर, कषाय। **वीर्य—** उष्ण। **विपाक—** मधुर।
गुण— लघु, रुक्ष॥

प्रभाव—

दोष प्रभाव— वात पित्त शामक, कफ निःसारक।
रोग प्रभाव— शोथहर, रक्तरोधक, वातानुलोमन, यकृत् उत्तेजक।

सनाय

पर्याय— संस्कृत— स्वर्ण पत्री।
हिन्दी— सनाय।
लेटिन— केसिया एंगुस्टीफोलिया (Cassia angustifolia)

वानस्पतिक परिचय—

सनाय का 2 से 3 फीट ऊँचा गुल्म होता है।
पत्र— भालाकृति, पीताभ हरे रंग के होते हैं।
फली— सीधी आयताकार एवं भूरे रंग की होती है। जिसमें 5 से 7 गहरे भूरे रंग के चिकने बीज होते हैं। लगभग 4-5 महीने के पौधे के पुष्प दंडों को काट देने से शाखाओं की संख्या बढ़ जाती है। इसकी पतियों को प्रोंढ हो जाने पर तोड़कर छाया में सुखा दिया जाता है।
एक मास के बाद पुनः पत्र तोड़े जा सकते है। सनाय अफ्रीका एवं अरब का मूल पौधा होता हुआ भी भारत के मद्रास एवं मैसूर में भी पाया जाता है।

रासायनिक संगठन—

पत्तियों में फ्लेवेनोर ..इसो रेमेटिन, कैम्फ्रोन, सिनोसाइर, सेलीसिलिक एसिड, क्राइसोफेनिक एसिड पाये जाते है।

गुण-धर्म—

रस— कटु, तिक्त, मधुर, कषाय। **वीर्य—** उष्ण। **विपाक—** कटु।
गुण— लघु, रुक्ष, तीक्ष्ण।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रभाव—

दोष प्रभाव— पित्त शोधक, वातानुलोमक।

रोग प्रभाव— अनुलोमन एवं स्रंसन होने से कोष्ठ बद्धता, रक्तदुष्टि, आनाह, गुल्म, आमवात, वातरक्त में उपयोगी है।

विशिष्ट योग— पंच सकार चूर्ण, स्वादिष्ट विरेचन चूर्ण।

सुरंजान

पर्याय— हिन्दी— सुरंजान

लेटिन— कालचिकम ल्युटियम (Colchicum luteum)

वानस्पतिक परिचय—

इस वनस्पति के पत्र थोड़े लगते हैं। जो 6 से 12 इंच लम्बे आधा इंच चौड़े, गोलाग्र होते हैं।

पुष्प— एक इंच व्यास के पीले पराग युक्त होते हैं।

फल— आधा से एक इंच लम्बा चंचु युक्त होते हैं। इसका मूल औषधि प्रयोग में काम आता है।

रंग के आधार पर इसके मूल तीन प्रकार के होते हैं—

1. **श्वेत—** जिसका रस मीठा होने से मीठा सुरंजान या सुरंजाने शिरी कहते हैं।
2. **पीत सुरंजान—** जो कुछ छोटा और तिक्त होता है। अतः कड़ुवा सुरंजान या तलक सुरंजान कहते हैं।
3. **कृष्ण सुरंजान—** यह काला एवं विषाक्त होता है। अतः हकीम लोग इसे बाह्य प्रयोग में लेते हैं। किन्तु आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में इसका प्रयोग आभ्यन्तर रूप में किया जाता है। क्योंकि यह अधिक प्रभावी होता है। कश्मीर, पंजाब, अफगानिस्तान में 2 से 3 हजार फीट की ऊँचाई पर पाया जाता है।

रासायनिक संगठन—

कोलाचिकिन नामक क्षार, स्टार्च पाया जाता है। सुरंजान का घनसत्व गहरे भूरे रंग का "हरण तूतिया" के नाम से उत्तर भारत में प्रसिद्ध है।

गुण-धर्म—

रस— तिक्त, कटु। **वीर्य—** उष्ण। **विपाक—** कटु।

गुण— लघु, रुक्ष।

प्रभाव—

दोष प्रभाव— कफ वात शामक।

रोग प्रभाव— आमवात, ग्रधसी, सन्धिवात, वातरक्त, नाशक।

विशिष्ट योग— हब्बे सुरंजान, माजून सुरंजान।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चतुर्थ अनुच्छेद

रस तन्त्र

प्रथम प्रकरण-यन्त्र एवं पुट परिचय

रस तन्त्र में पारद, उपरस, धातु आदि के मारण, शोधन आदि प्रक्रियाओं को सम्पादन के लिए जिन उपकरणों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें यन्त्र कहते है। यथा—''**यन्त्र्यते नियम्यते वध्यते रक्ष्यते वा पारदादिरनेनोपायेन तत् यन्त्रम्।**'' रस शास्त्र के औषध निर्माण क्रम में कई प्रकार के यन्त्रों का उपयोग किया जाता है। उनमें से दैनिक व्यवहार में आने वाले मुख्य यन्त्रों का परिचय नीचे दिया जा रहा है।

1. दौला यन्त्र

दौला का अभिप्राय लटकाना होता है। इस यन्त्र के द्वारा सम्बन्धित द्रव्य को लटकाया जाता है। इसके लिए अभीष्ट द्रव्य को तीन स्तर वाले कपड़े में बांधकर किसी सलाई के बीच में फीते से बांध दिया जाता है, तदनन्तर किसी पात्र के मुख पर सलाई को इस तरह रखा जाता है कि उससे बंधी हुई पोट्टली अन्दर लटकती रहे। यह उपकरण दौला यन्त्र कहलाता है। जो स्वेदन के काम में लिया जाता है।

2. डमरु यन्त्र

कांच या मिट्टी की दो स्थालिकाओं के मुंह को परस्पर मिलाकर कपडमिट्टी कर देने पर इस यन्त्र की आकृति डमरु के समान हो जाती है। अत: इसे डमरु यन्त्र कहते है। यह पारद, संखिया को उड़ाने तथा गन्धक शोधन के लिए प्रयुक्त होता है।

3. बालुका यन्त्र

एक आतसी शीशी पर विधिवत् सात कपड़ मिट्टी करके सूखाली जाती है। उसके बाद लौहे के नंगाड़े के तल में कनिष्ठिका अंगुली प्रमाण का छिद्र कर भट्टी पर रख दिया जाता है। इस छिद्र पर अभ्रपत्रक रखकर लगभग आधे इन्च मोटे स्तर में नमक बिछा दिया जाता है जिस पर कपड़ मिटी की हुई शीशी रखकर गले तक रेत भर दी जाती है। इसे बालुका यन्त्र कहते है, यह कूपींपक्व रसायन बनाने के लिए काम में लिया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विशेष— बालु के स्थान पर लवण भरने पर लवण यन्त्र (मृगाङ्क रस के लिए) कहलाता है।

4. खल्व यन्त्र

गोल प्याले की तरह अथवा नौकाकृति प्यालों को जो चिकने (श्लक्ष्ण) तथा दृढ पत्थर या धातु के बने होते है, खल्व यन्त्र कहलाते है। इनमें पिष्टियां तथा खरलीय रसायनों का मूसल की सहायता से मर्दन किया जाता है।

5. ऊर्ध्वपातन यन्त्र

दो स्थालिकाओं के मुँह को परस्पर जोड़कर डमरु यन्त्र बनाया जाता है। इसके नीचे वाले पात्र में हिंगुल या अन्य अपेक्षित द्रव्य रख दिया जाता है। ऊपरी पात्र के बाहर ऊपर की ओर डेढ इन्च ऊंची आलबाल बनाकर पानी भर दिया जाता है। इसे ऊर्ध्व पातन यन्त्र कहते है। यह हिंगुल से पारद निकालना तथा पारद के संस्कारों में काम में लिया जाता है।

6. अधः पातन यन्त्र

डमरु यन्त्र के ऊप[illegible]ी स्थालिका में पारद आदि मर्दित द्रव्य का लेप कर दिया जाता है तथा नीचे की स्थालिका में आधी या कण्ठ तक पानी भर दिया जाता है। इसके बाद जमीन में इतना लम्बा चौड़ा खड्डा बनाया जाता है कि नीचे वाली स्थालिका उसमें पूरी समा जाय। तदनन्तर ऊपर काण्डों की अग्नि देकर पकाया जाता है। इसे अधः पातन यन्त्र कहते है।

7. तिर्यक् पातन यन्त्र

पारद के संस्कारों में अथवा अर्क निकालने के लिए तिर्यक् पातन यन्त्र का उपयोग किया जाता है किसी स्थालिका के मुख को नलिका से जोड़ दिया जाता है एवं इस नली को ठण्डे पानी में रखते हुए अन्य पात्र में छोड़ी जाती है। जिससे प्रथम पात्र को गरम करने पर उत्पन्न वाष्प नली में आने पर पुनः ठण्डी हो जाती है तथा अन्य पात्र में संग्रहीत किया जाता है। इसे तिर्यक् पातन यन्त्र कहते है।

8. पाताल यन्त्र

जमीन में लगभग डेढ फीट गहरा खड्डा खोदकर उसमें एक प्याला रख दें, फिर खड्डे के ऊपर एक ऐसा चौडे मुँह का पात्र रखें कि उसके बीच में छिद्र हो तथा खड्डे पर अच्छी प्रकार से जम जाय। अब कपड़ मिट्टी की हुई शीशी में भिलावा या अन्य कोई द्रव्य जिसका तैल निकालना है, को भर कर उसके मुँह को छेद से नीचे निकाल देना चाहिए, तदनन्तर ऊपर ऊपलों की आंच दी जाती है। जिससे शीशी के अन्दर रखे द्रव्य में से तैल निकलकर नीचे चूने लगता है। इसे पाताल यन्त्र कहते है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुट परिचय— प्रत्येक रस-उपरस, एवं धातु आदि की ताप सहन करने की अलग-अलग शक्ति होती है उसी के अनुसार औषध निर्माण प्रक्रियाओं में स्थान-स्थान पर दी जाने वाली अग्नि की मात्रा के अनुसार विविध प्रकार के पुटों का निर्देश दिया गया हैं। उनमें से कुछ पुटों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है—

महापुट— आधा बाम (लगभग 3 फीट) गहरा तथा 2 हाथ (6 फीट) व्यास वाले गोल गड्डे को महापुट कहते है। इस गड्डे को आधे भाग में ऊपले भरकर शराब सम्पुट रख दें, उसके बाद शेष आधे भाग को भी ऊपलों से भरकर अग्नि देना महापुट कहलाता है।

गजपुट— एक गज (3 फीट) गहरे और चौड़े गड्डे में ऊपले डाल कर आंच देना गजपुट कहलाता है। यही पुट साधारणतया भस्म निर्माण क्रम में प्रयुक्त किया जाता है।

वाराह पुट— 1 अरत्नि प्रमाण में लम्बाई, चौड़ाई व गहराई वाले गड्डे में ऊपले डालकर आँच देना वाराह पुट कहलाता है।

कुक्कुट पुट— दो बालिश्त गहरे एवं चौड़े गड्डे में ऊपले भरकर आंच देना कुक्कुट पुट कहलाता है।

कपोत पुट— जमीन के ऊपर ही आठ जंगली कण्डो में आंच देना कपोत कुट कहलाता है।

विशेष— किसी औषध योग में पुट निर्देश दिया जाने पर भी पुट विशेष का नाम प्राप्त नहीं होने पर औषध द्रव्य की प्रकृति के आधार पर उक्त पुटों में से किसी पुट का निर्णय कर लेना चाहिये।

द्वितीय प्रकरण — रस परिचय

रस तन्त्र में रस शब्द का प्रयोग बहुत ही व्यापक रूप से किया गया है प्रधान रूप से पारद के लिए रस शब्द का प्रयोग होने पर भी महारस, रस एवं उपरसों के लिए भी व्यवहरित किया जाता है जैसे—

१- **साधारण रस**— कम्पिल्ल, गौरीपाषाण, नवसादर, कपर्द, अग्निजार, गिरि सिन्दुर, हिंगुल, मृद्धारशृंग।

२- **महारस**— अभ्रक, वैक्रान्त, माक्षिक, विमल, अद्रिज, शस्यक, चपल और रसक।

३- **उपरस**— गन्धक, गैरिक, काशीस, कांक्षी, हरताल, मनः शिला, अञ्जन, कंकुष्ठ।

प्रस्तुत प्रकरण में पारद का विवेचन किया जायेगा।

पारद— पर्याय— रस, रसेन्द्र, सूत, रसेश्वर, चपल, रस राज, पारद, इत्यादि।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अंग्रेजी— Mercury (Hg.) या quick Silver.

सामान्य परिचय— पारद एक प्रसिद्ध द्रव, चंचल तथा चांदी की तरह चमकीला एवं सफेद रंग का खनिज है, जिसमें किसी प्रकार का स्वाद या गन्ध नहीं होती है। यह लौहे के अतिरिक्त अन्य सभी धातुओं को न्यूनाधिक घुला लेता है। अतः इसे काँच, लौह, पत्थर या मिट्टी के बर्तनों में रखा जाता है। पारद का हिमाङ्क (जमाव बिन्दु) 39^0 से. ग्रे. तथा वाष्पीभवन 360 डिग्री से. ग्रे. पर होता है।

स्वरूप— शुद्ध पारद स्वच्छ, उज्वल, श्वेत रंगवाला किन्तु नीलाभ होता है जिसकी चमक से सूर्य की उपमा दी जाती है, इसके वर्ण में पाण्डुता या धुन्धलापन होने पर इसमें मिलावट की संभावना रहती है।

पारद खानों से निकाला जाता है। अतः उस स्थान पर पाई जाने वाली नाग, वङ्गादि धातुओं का मिश्रण हो जाता है, इस प्रकार के पारद का आभ्यन्तर प्रयोग करने से कई प्रकार की व्याधियाँ या अपाय जैसे वृक्क शोथ, यकृत शोथ, अजीर्ण, अतिसार, त्वक् रोग आदि हो जाते है। अतः पारद को शुद्ध करके ही औषध प्रयोग में लेना चाहिए।

पारद के नैसर्गिक दोष—

दोष	शरीर पर हानिकारक प्रभाव
१– नाग—	व्रण
२– वङ्ग—	कुष्ठ
३– मल—	जड़ता
४– वह्नि—	उच्च ताप
५– चापल्य—	शुक्रक्षय
६– विष—	मृत्यु
७– गिरि—	स्फोट
८– असह्याग्नि—	मूर्च्छा

पारद कंचुक— पारद में मिश्रित नागवङ्गादि धातुओं तथा वातावरणगत आक्सीजन के संयोग से सम्पन्न औषजनीकरण (Oxidation) की क्रिया से उस पर एक आवरण आ जाता है इन्हें ही कंचुक दोष कहते है। कभी-कभी व्यापारी द्वारा कृत्रिम रूप से मिलावट कर देने पर भी इस तरह के आवरण मिलते है। अतः इन्हें औपाधिक दोष भी कहा जाता है। शास्त्रोक्त सप्त कंचुक निम्नोक्त है— भेदी, द्रावी, मलकारी, ध्वांक्षी, पर्पटिका, अन्धकारी, पौटनिका।

हिंगुल से पारद निकालना— हिंगुल, पारद एवं गन्धक का यौगिक है जो प्राकृतिक रूप से खनिज रूप से प्राप्त किया जाता है। इसको म्लेच्छ, चित्राङ्ग, दरद, सिंगरफ

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(Cinnabar) आदि नामों से जाना जाता है। इसमें गन्धक एवं पारद 8 : 42 के अनुपात में मिलने से आजकल कृत्रिम रूप से भी बनाया जाने लगा है। हिंगुल से निकाला हुआ पारद सामान्यतया दोषों से रहित होने के कारण हम प्रायः उसका अधिक प्रयोग करते है। उसकी विधि निम्नांकित है—

रस तरङ्गिणी—

१- **प्रयोगीय उपकरण—** कुट्टक यन्त्र (इमाम दस्ता) खल्व यन्त्र, ऊर्ध्वपातन यन्त्र, दो धामे।

२- **द्रव्य—** हिंगुल, निम्बू स्वरस।

३- **विधि—** सर्व प्रथम हिंगुल को कुट्टक यन्त्र की सहायता से बारीक चूर्णकर खरल में डाल देवें। तदनन्तर निम्बू के रस में एक दिन तक मर्दन कर चक्रिका बना लेवें, उनके शुष्क होने पर ऊर्ध्वपातन यन्त्र में रख कर आंच देने से हिंगुल में से पारद उड़कर ऊपरी स्थालिका में चिपक जाता है, जिसे यन्त्र के ठण्डा (स्वाङ्ग शीत) होने पर खुरच कर कपड़े में छान लेना चाहिये।

पारद शोधन— पारद का विभिन्न प्रयोगों के आधार पर शोधन प्रकार अलग-अलग होते है जैसे— देहसिद्धि के लिए।

१– सामान्य खरलीय योगों के लिए।

२– रसायन प्रयोग के लिए।

३– धातु सिद्धी के लिए।

१- सामान्य शोधन—

१- **उपकरण—** खल्व यन्त्र, धामै, वस्त्र।

२- **द्रव्य—** पारद, चूना, (सम भाग) निस्तुष लहसुन (सम भाग) नमक आधा भाग, ठण्डा पानी या कांजी।

३- **विधि—** सर्व प्रथम पारद को खल्व यन्त्र में लेकर समभाग चूने के साथ 3 दिन तक मर्दन करना चाहिये उसके बाद वस्त्र से छानकर पुनः लहसुन और नमक के साथ तक मर्दन करना चाहिये जब तक कि पिष्टी का रंग काला हो जाय। तदनन्तर ठण्डे पानी या कांजी से अच्छी तरह धोकर पारद संग्रहीत कर लेना चाहिये। इस प्रकार से शुद्ध पारद को सामान्य खरलीय योगों के लिये उपयोग में लिया जाता है।

विशिष्ट शोधन— पारद का विशिष्ट शोधन देह सिद्धि के लिये रसायन प्रयोगों में तथा लौह सिद्धि के लिये किया जाता है। इसके लिये 18 संस्कार किये जाते है जो अधोनिर्दिष्ट है—

१– स्वेदन,	२– मर्दन,	३– मूर्च्छन,	४– उत्थापन
५– त्रिविधि पातन	६– रोधन,	७– नियमन,	८– संदीपन,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

९– गगनभक्षण   १०– संचारण,   ११– गर्भद्रुति,   १२– बाह्यद्रुति,
१३– जारण,   १४– ग्रास,   १५– सारण,   १६– संक्रामण,
१७– बेधन,   १८– शरीर योग।

देह सिद्धि के लिये केवल आठ संस्कार किये जाते है।

तृतीय प्रकरण - गन्धक परिचय

पर्याय— गन्धक, गन्धपाषाण, गन्ध, बलि, नवनीत, लेलितक Sulphur, (S)

परिचय— रस शास्त्र में पारद के बाद सर्वाधिक उपयोगी द्रव्य गन्धक है यहाँ तक कि सामान्यतया पारद का प्रयोग भी गन्धक के बिना नहीं किया जाता है। यह अन्य खनिजों की तरह खानों से प्राप्त किया जाता है जो स्वतन्त्र रूप में मिलने के अतिरिक्त स्वर्णमाक्षिक, नीला थोथा, हिंगुलु, काशीश आदि खनिज यौगिकों के रूप में निकाला जाता है। जंगम द्रव्यों में से अण्डे की जर्दी, रक्त, दूध में तथा उद्‌भिज वर्ग में राई, गाजर, प्याज, लहसन, तुलसी आदि में गन्धक की मात्रा पाई जाती है।

प्रकार एवं स्वरूप— गन्धक दो प्रकार का होता है— १– आंवलासार गन्धक हल्दी के समान पीला, चमकीला तथा कोमल होता है जो डलों के रूप में प्राप्त होता है, इसका आभ्यन्तर प्रयोग किया जाता है। २– दण्डीया गन्धक दण्डे के समान आकृतिवाला चमक रहित गन्धक होता है जो केवल बाह्य उपचार के लिए प्रयोग किया जाता है।

शोधन विधि— (रस तरङ्गिणी) उपकरण— हसन्तिका (सिगड़ी) १.पतीली १, भगोना १, दर्विका (चम्मच) २, कपडा आधा मीटर, धामे २।

द्रव्य— आंवला सार गन्धक, घी समभाग, दूध तिगुना।

विधि— सबसे पहले सिगड़ी पर पतीली में घी को गरम करें, अच्छी तरह गरम हो जाने पर गन्धक उसमें डाल देवें। घी में गन्धक भली प्रकार पिघल जाने पर दूध से भरे हुए भगौने में, जिसके ऊपर कपड़ा बन्धा हुआ हो उसमें डाल दें। जिससे पिघला हुआ गन्धक छनता हुआ दूध में गिरने से बारिक डलियों में जम जाता है। इस प्रकार ३ बार करने से गन्धक शुद्ध हो जाता है।

गुण— गरविष नाशक, कुष्ठ नाशक, कास-श्वास, दद्रुनाशक, आमघ्न, चक्षुष्य, दीपन, रसायन, शुक्रल, पारद-दोषनाशक, कटुरस एवं उष्ण वीर्य होता है।

मात्रा— 125 मि.ग्रा. से 1 ग्राम तक।

चतुर्थ प्रकरण — धातु परिचय

धातुओं के लिये वैदिक एवं संहिताकालीन वाङ्मय में लौह शब्द का प्रयोग हुआ है किन्तु कालान्तर में लौह शब्द केवल अयस् के लिये योगरूढ हो गया है। जिन द्रव्यों में निम्नाङ्कित विशेषतायें होती है उन्हें धातु कहा जाता है—

१- गुरुत्त्व— धातु, अधातु की अपेक्षा भारी होते है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२- **चमक**— धातुओं में अपनी-अपनी विशिष्ट चमक होती है।

३- **तन्यता**— धातुओं को खींचने पर तार बन जाते है तथा टूटते नहीं है। यदि उन्हें पीटा जाय तो पत्र के समान फैल जाते है।

४- **सुचालक**— धातु के एक शीर्ष पर ताप या विद्युत स्पर्श करने पर क्रमशः दूसरे शीर्ष तक पहुंच जाते है। अधातु इनका कुचालक होते है।

आयुर्वेदीय रस शास्त्र में सात प्रकार के लौह प्रतिपादित किये गये है। जिन्हें 4 वर्गों में इस प्रकार किया गया है—

१– शुद्ध लौह =	१– सुवर्ण,	२– रजत,
२– साधारण लौह =	३– ताम्र,	४– अयस्,
३– पूर्ति लौह =	५– नाग,	६– वङ्ग,
४– मिश्रलौह =	७– पीतल।	

धातुओं का सामान्य शोधन

आभ्यन्तर प्रयोग से पूर्व धातुओं का शोधन करना आवश्यक होता है। शोधन से—

१– विजातीय द्रव्य पृथक हो जाते है।

२– विषाक्त प्रभाव नष्ट हो जाते है।

३– गुणोत्कर्ष होता है।

४– भस्मीकरण के लिये अनुकूलता पैदा होती है, अतः धातुओं के दो प्रकार से शोधन किये जाते है।

1– सामान्य— स्वर्ण, रजत, ताम्र और लौह धातुएं उच्च तापक्रम पर द्रवित होने से उनके पत्रों को तपाकर एवं अन्य धातुएं अल्प तापक्रम पर ही पिघल जाने से उन्हें द्रवित कर क्रमशः तैल, तक्र, गौमूत्र, कुलत्थ क्वाथ एवं कांजी में सात-सात बुझावे देने से शुद्ध हो जाते है।

2– विशिष्ट शोधन— सम्बन्धित धातु प्रकरण में दिये गये हैं।

स्वर्ण

पर्याय— सुवर्ण, कनक, हेम, हाटक, हिरण्य, सोना, कञ्चन।

अ. Gold, ले. Aurum,

सभी धातुओं में सर्वश्रेष्ठ धातु स्वर्ण है। यह बहुमूल्य, मृदु, स्निग्ध तथा चमकीला पीला धातु है। यह किसी स्थिति में रखने पर खराब नहीं होता है।

विशिष्ट गुरुत्व— 19.4, द्रवणांक— 1064^0

स्वरूप— तपने पर पीतवर्णी एवं कसौटी पर घिसने पर केशरवर्णी परिखा वाला मृदु, स्निग्ध तथा गुरु स्वर्ण प्रशस्त होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विशिष्ट शोधन— स्वर्ण पत्रों पर सैंधा नमक एवं निम्बु स्वरस का लेपकर सातबार कपोत पुट में देने से स्वर्ण शुद्ध हो जाता है।

मारण— ग्रन्थाधार— रसतरङ्गिणी।

उपकरण— खरल, धामे-२, शराव-२, कपड़ मिट्टी।

द्रव्य— स्वर्ण पत्रक, पारद, निम्बू का रस, शुद्ध हिंगुल, शु. गन्धक, शु. मनःशिला, नवसादर प्रत्येक समभाग, कण्डे।

विधि— शुद्ध स्वर्ण पत्र एवं शु. पारद को अच्छी तरह खरल कर निम्बु स्वरस में मर्दन करें, उसके बाद अच्छी तरह धोकर शु. हिंगुल, शु. गन्धक शु. मनःशिला तथा नवसादर मिलाकर सम्पुटित कर लघु पुट देवें। इस प्रकार तब तक पुट देते रहें जब तक कि निश्चन्द्र भस्म तैयार हो जावे।

गुण— मधुर, वृष्य, हृद्य, नैत्र्य, मेध्य, रसायन, प्रसवोपयोगी, विषघ्न, कान्तिकारक।

मात्रा— 015 मि.ग्रा. से 030 मि.ग्रा.।

रज़त

पर्याय— रोप्य, तार, कलधौत, चांदी।

अ. Silver, ले. Argentum.

यह खुली वायु जल आदि से अप्रभावित होने वाली धातु है, जो सफेद रंग की चमकीली एवं भारी होती है।

विशिष्ट गुरुत्व— 105, **द्रवणाङ्क**— 760^0 C

स्वरूप— अग्नि पर तपाने से, काटने से, या कसौटी पर घिसने से स्वच्छ सफेद रंग बना रहे, मृदु, स्निग्ध तथा भारी रजत औषधि प्रयोग के लिये ग्राह्य है।

विशिष्ट शोधन—

उपकरण— सिगड़ी, चिमटा, धामा।

द्रव्य— अगस्त्य पत्र स्वरस, रजत पत्र।

विधि— रजत पत्रों को सिगड़ी पर अग्नि तप्त करके पत्र स्वरस में 3 बार बुझाने से विशेष शोधन हों जाता है।

मारण— ग्रन्थाधार— रस तरङ्गिणी।

उपकरण— खल्व यन्त्र, दो धामे, लघु पुट, शराव 2 कपड़ मिट्टी।

द्रव्य— शु. रजत पत्र, शु. पारद, शु. गन्धक, प्रत्येक सम भाग, शु. हरताल आधा भाग, कण्डे आदि।

विधि— शु. रजत पत्रों को पारद के साथ अच्छी तरह खरल कर निम्बू के स्वरस से मर्दन करें, फिर पानी से धोकर शु. गन्धक तथा शु. हरताल के साथ मर्दन कर टिकिया को शराव सम्पुटित कर देना चाहिये। इस शराव सम्पुट को लघु पुट देना चाहिए। इस तरह तीन लघु पुट देने पर चांदी की

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कमल के समान लाल रंग की भस्म तैयार हो जाती है।

गुण— शीत, कषाय, स्निग्ध, रुचि कारक, मेधा वर्धक, वर्ण्य, वात शामक, कफ शामक, लेखन, मूत्रल, नाड़ी सांस्थानिक रोगों तथा गर्भाशय तक। विकारों में विशेष प्रभावी।

मात्रा— 030 मि. ग्रा. से 125 मि. ग्रा. तक।

ताम्र

पर्याय— म्लेच्छमुख, शुल्व, रवि संज्ञा, नेपाली, त्र्यम्बक, उदुम्बर, ताम्बा।

अ. Copper, ले. Cuprum

ताम्र धातु एक लाल रंग का चमकीला खनिज है जो वातावरण की आर्द्रता, पानी, नमक तथा अम्ल से प्रभावित होती है। प्रकृति में स्वतन्त्र रूप से मिलने के अतिरिक्त मल्ल, लौह, आदि से संयुक्त भी पाया जाता है। सजीव सृष्टि में भू नाग, मयूर पिच्छ, तथा त्रिफला में भी पाया जाता है।

द्रवणाङ्क— 1080^0 C.

ग्राह्य ताम्र का स्वरूप— जिसे पीटने पर बिना फटे ही चपटा हो जाय, श्लक्ष्ण स्पर्श वाला, स्वच्छ, गुड़हल के फूल के समान लाल तथा मृदु ताम्र ग्राह्य होता है।

प्रकार— नेपाली ताम्र एवं म्लेच्छ ताम्र।

उपर्युक्त ग्राह्य ताम्र के गुण नेपाली ताम्र में होते हैं। इसके विपरीत अर्थात् कालापन लिये हुए या सफेदी लिये हुए कठिन एवं बार-बार धोने के बाद भी काला हो जाने वाला ताम्र म्लेच्छ होता है जो अग्राह्य है।

विशिष्ट शोधन— **ग्रन्थाधार**— रस तरङ्गिणी।
उपकरण— सिगड़ी, चिकटा, धामा।
द्रव्य— ताम्र पत्र, चाँगेरी पत्र स्वरस।

विधि— ताम्र पत्रों को चिमटे से पकड़ कर सिगड़ी पर तपाना चाहिये, अग्नि प्रतप्त होने पर चाङ्गेरी पत्र स्वरस में बुझावा देवें इस प्रकार 21 बार बुझाने से ताम्र शुद्ध हो जाता है।

मारण— **ग्रन्थाधार**— रस तरङ्गिणी।
उपकरण— गज पुट, कण्डे, शराव, कपड़ मिट्टी खरल।
द्रव्य— शुद्ध ताम्र, कज्जली दो भाग, निम्बू स्वरस।

विधि— सर्वप्रथम कज्जली को निम्बु के स्वरस में मर्दन कर ताम्र पत्र पर लेप कर उन्हें शुष्क होने पर शराव सम्पुटित करें। फिर गज पुट लगाना चाहिये। इस प्रकार तीन से सात बार गज पुट से ताम्र भी भस्म बन जाती है।

अमृतीकरण— **ग्रन्थाधार**— रस तरङ्गिणी।
उपकरण— खल्व यन्त्र, शराव दो, कपड़ मिट्टी, गज पुट।
द्रव्य— शु. गन्धक आधा भाग, पंचामृत, ताम्र भस्म एक भाग।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विधि-ताम्र भस्म एवं शुद्ध गन्धक को पंचामृत के साथ अच्छी तरह मर्दन कर टिकियां बना लें, जिन्हें सूखने पर शराव सम्पुटित करें, उसके बाद गज पुट देवें। इस प्रकार 3 गज पुट देने से अमृतीकरण हो जाता है। अमृतीकरण करने से ताम्र में वान्ति, भ्रान्ति आदि दोष नष्ट हो जाते हैं।

भस्म परीक्षा-अंगुलियों की रेखाओं में प्रविश्य, निश्चन्द्र, तथा वारितर ताम्र भस्म को निम्बू के स्वरस या खट्टे दही में 12 घण्टे रखने पर भी हरापन या नीलापन पैदा न होने पर उत्तम भस्म समझी जाती है।

गुण— तिक्त, कषाय, मधुर रस, तथा कटु विपाकी एवं उष्ण वीर्य ताम्र भस्म विषध्न, सर, लेखन, पित्त कफध्न होती है। दीपन, पाचन, कृमिघ्न, कुष्ठघ्न, कास, श्वास, पाण्डु ग्रहणी, उदर रोग, हिक्का, वातव्याधि एवं छर्दि में प्रभावकारी है।

मात्रा— 015 मि.ग्रा. से 060 मि.ग्रा. तक।

लौह

पर्याय— शस्त्र, कृष्ण लौह, अयस्, तीक्ष्ण। अ. Iron ले. Ferrum

प्रकृति में अनेक प्रकार के खनिज तत्वों के साथ मिला हुआ, काला चमकीले धातु के रूप में पाया जाता है इसका द्रवणांक 1500 डिग्री से.ग्रे. होता है।

प्रकार— **1. मुण्ड लौह**— इसे मुण्ड, कृषिलौह, शिलात्मज, कृष्णायस भी कहते है। जिससे कटाह, खरल, फावडे आदि कृषि यन्त्र बनाये जाते है।

2. तीक्ष्ण लौह— लौह, लौहक, शस्त्र लौह, तीक्ष्णक, सार लौह, फौलाद, काल लौह भी कहते है। इस प्रकार के लौह से कृपाण, तलावार, बन्दूकें, आदि शस्त्र बनाये जाते हैं।

3. कान्त लौह— इसे कान्त, कान्ताअयस और महालौह भी कहते है। यह दुर्लभ-प्रकार का लौह है। कुछ मात्रा में चुम्बक से प्राप्त किया जा सकता है।

ग्राह्य लौह— तीक्ष्ण लौह अर्थात् फौलाद के पत्रों को रेती से सूक्ष्म चूर्ण बना लेना चाहिये अथवा तलवार, चाकू या बन्दूक आदि शस्त्र बनाने वाले कारखाने से प्राप्त लौह चूर्ण को शोधन मारण के लिये प्रयोग करना चाहिये।

शोधन— **ग्रन्थाधार**— रस तरङ्गिणी।

उपकरण— सिगड़ी, लौंहे का बड़ा चम्मच (दर्विका), धामे दो।

द्रव्य— तीक्ष्ण लौह चूर्ण कम से कम 5 पल या 250 ग्राम, अधिक से अधिक 13 पल या 625 ग्राम एक बार, त्रिफला चूर्ण।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विधि— त्रिफला चूर्ण आठ गुणे जल में पकाकर चतुर्थांश रखलें, इस प्रकार निर्मित क्वाथ में अग्नि प्रतप्त तीक्ष्ण लौह चूर्ण सात बार बार बुझाने से लौह शुद्ध हो जाता है।

मारण— लौहे की भस्म बनाने के लिये तीन प्रकार के पाक किये जाते है।

1. भानुपाक— त्रिफला क्वाथ में लौह चूर्ण को धूप में सात बार सूखाने को भानुपाक कहते है।

2. स्थाली पाक— भानुपाक किये हुए लौह चूर्ण को अच्छी तरह धोकर स्थालिका में त्रिफला कषाय के साथ भट्टी पर पकावें अथवा शतावरी, भृंगराज, हस्तीकर्ण पलाश आदि के रस में अपेक्षित दोष शमन के लिए पाक करें।

3. पुटपाक— स्थाली पाक किये हुए लौह चूर्ण को अच्छी तरह धोकर अभीष्ट दोष हर औषधियों के रस में मर्दन कर टिकियां बना लेवें। इनके सूखने पर शराव सम्पुटितं करें, अब गजपुट में दें। इस प्रकार 1000 बार या 100 बार या 60 बार गज पुट देने से लौह की भस्म बन जाती है। जितने पुट दिये जावेंगे, भस्म उतनी ही अधिक गुणकारी होगी।

लौह भस्म का निरुत्थिकरण— लौह भस्म को गौघृत एवं शुद्ध गन्धक समभाग मिलाकर कुमारी स्वरस में मर्दन करें, शुष्क हो जाने पर शराव सम्पुटित कर गजपुट में देवें। जिससे लौह भस्म निरुत्थित हो जाती है।

गुण— रुक्ष, तिक्त, कषाय एवं मधुर विपाकी, लौह भस्म, शीत वीर्य वाली एवं गुरु लेखन होती है। वल्य, वृष्य, उदर रोग, श्लेष्म, पित्तज रोग, वर्ण्य, मेध्य होती है, गुल्म, प्लीहा, कृमि, पाण्डु, अर्श, क्षय, शूल रोगनाशक।

मात्रा— 030 मि.ग्रा. से 250 मि.ग्रा. तक।

पित्तल

पर्याय— पित्तल, पीत लौह, कपि लौह, रीतिका, क्षारकूट। अ. Brass.

पित्तल एक मिश्र धातु है जो ताम्र एवं यशद को 2:1 के अनुपात में मिलाकर तैयार की जाती है। यह चमकीले पीले रंग के श्लक्ष्ण तथा आधात को सहन करने वाली धातु होती है। आर्द्रवायु से मलिन एवं अम्ल द्रव्यों से विकृत हो जाती है।

ग्राह्य पित्तल— पित्तल को अग्नि में तपाकर कांजी में बुझाने से ताम्र वर्ण हो जाने पर उसे उत्तम पित्तल समझना चाहिये। यह काले लौहे के समान रंग का हो जाने पर अग्राह्य होती है।

विशिष्ट शोधन— ग्रन्थाधार— रस तरङ्गिणी।

उपकरण— चिमटा, सिगड़ी, धामा।

द्रव्य— पित्तल पत्र, निर्गुण्डी स्वरस, हरिद्रा चूर्ण।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विधि— पित्तल के पत्रों को चिमटे से पकड़कर सिगड़ी में अग्नि प्रतप्त करें। तदनन्तर हरिद्रा चूर्ण युक्त निर्गुन्डी स्वरस में बुझावा देवें। इस प्रकार सात वार बुझावे देने से पित्तल शुद्ध हो जाता है।

मारण— ग्रन्थाधार— रस तरङ्गिणी।

उपकरण— खल्व यन्त्र, शराव दो, कपड़ मिट्टी, गजपुट।

द्रव्य— शु. पित्तल चूर्ण, शु. गन्धक समभाग, अर्कदुग्ध।

विधि— शु. पित्तल चूर्ण, शु. गन्धक को अर्कदुग्ध में अच्छी तरह मर्दन कर टिकियाँ बनाकर सूखा लेना चाहिये। उसके बाद शराव सम्पुटित कर गंजपुट देना चाहिये। इस प्रकार तीन गजपुटं देने से पित्तल की काले रंग वाली भस्म बन जाती है।

गुण— रुक्ष, तिक्त, आंशिक लेखन, कृमिघ्न, कुष्ठघ्न, पाण्डुघ्न।

मात्रा— 060 मि.ग्रा. से 125 मि.ग्रा. तक।

यशद

पर्याय— यशद, खर्पर, सत्व, रीतिहेतु, जस्ता।

अ. Zinc ले. Zincum.

यशद नीलाभ श्वेत वर्णी मल लौह है जो खर्पर से प्रायः निकाला जाता है। यही कारण है कि प्राचीन रस ग्रन्थों में रसक सत्व या खर्पर सत्व के नाम से वर्णन मिलता है। यशद के नाम के वर्णन सर्वप्रथम भाव प्रकाश में मिलता है।

अणुभार— 65, **आपेक्षिक घनत्व—** 7, **द्रवणाङ्क—** 410 डिग्री से.ग्रे.

ग्राह्य यशद— भारी, चमकीली, नीलाभ, श्वेत, श्लक्ष्ण, मृदु, स्वच्छ एवं आशुद्रवणशील यशद ग्राह्य होती है।

विशिष्ट शोधन— ग्रन्थाधार— रस तरङ्गिणी।

उपकरण— नाग के विशिष्ट शोधन के समान।

द्रव्य— यशद, चूने का पानी।

विधि— वङ्ग शोधन की तरह।

मारण— ग्रन्थाधार— रस तरङ्गिणी।

उपकरण— लौह, कटाही, सिगड़ी, खल्वयन्त्र, धामे २, शराव २, कपड़ मिट्टी एवं गजपुट।

द्रव्य— शु. यशद, शु. पारद, शु. गन्धक समभाग, मूसली, निम्बु स्वरस, जल।

विधि— सर्व प्रथम लौह की कढाई में यशद लेकर सिगड़ी पर पिघलावें। तदनन्तर खरल में रखे समभाग पारद में द्रवित यशद को डालकर मूसली से रगड़कर पिष्टी बना लेवें। उसके बाद निम्बु स्वरस में अच्छी तरह मर्दन कर पानी से धो लेवें। फिर समभाग शु. गन्धक मिलाकर शराव सम्पुटित करें। शुष्क हो जाने के बाद गजपुट देवें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विशेष— सामान्यतया 7 से 10 पुट दिये जाते है।

गुण— कषाय, कटु, शीत, कफ, पित्तशमन, नैत्ररोग, पाण्डु रोग, बहुमूत्र रोग, कास, श्वास, राजयक्ष्मा, जीर्ण, ज्वर, रात्रि स्वेद व्रण, अत्यार्तव, वातव्याधिनाशक।

मात्रा— 060 मि.ग्रा. से 125 मि.ग्रा.।

नाग

पर्याय— नाग, शीशक, सीस, नागक, कुवङ्गक, कुवङ्ग।

अ. Lead, ले. Plumbum.

नाग धातु शीघ्र ही द्रवित होने वाली ऊपर से काली एवं काटने पर अन्दर से चमकीला श्वेताभ, नील वर्ण होता है। आंशिक रूप से जल में घुलनशील है।

आपेक्षिक गुरुत्व- 11.3; **आवणिक भार**- 207, **द्रवणाङ्क**- 326^{06}

ग्राह्य नाग— भारी, मुलायम, स्निग्ध, आशु-द्रावी काटने पर चमकीला नील वर्ण वाला नाग प्रशस्त होता है।

अग्राह्य नाग— बाहर से सफेद, हल्का, काटने पर चमक रहित, अपेक्षाकृत कठिनाई से पिघलने वाला, अन्य धातु युक्त अग्राह्य है।

शोधन— **आधार**— रस तरङ्गिणी।

उपकरण— दर्विका, सिगड़ी, ढक्कनदार लौहे का खरल, कीप।

द्रव्य— नाग, निर्गुण्डीमूल स्वरस।

विधि— सर्वप्रथम निर्गुण्डीमूल स्वरस या क्वाथ को लौहे की खरल में लेकर ढक्कन लगावें तथा उस पर पाँच या छ: किलो वजन वाला उपकरण या भार रख देवें। ढक्कन के नूसल वाले छेद में कीप लगा देनी चाहिये। दर्विका में नाग को सिघड़ी पर पिघला कर कीप के रास्ते से निर्गुण्डी स्वरस में बुझावा देवें। इस प्रकार सात बार बुझावा देने से नाग शुद्ध होता है।

विशेष— बन्द खरल या पात्र में नाग का बुझावा नहीं देने पर उसके उछलने से कार्यकर्त्ताओं को छीटें लग सकते हैं।

मारण— **उपकरण**— कटाह, अङ्गारधानिका, चम्मच, सराव ३, कपड़ मिट्टी, धामे २, गजपुट।

द्रव्य— शु. नाग, अश्वत्थ त्वक् चूर्ण, जल, शु. मेनसिल, निम्बू स्वरस।

विधि— सर्वप्रथम कटाह में शु. नाग लेकर पिघलावें बाद में अश्वत्थ त्वक् चूर्ण डालते हुए, तब तक चलाते रहें, जब तक की सीशे का चूर्ण नहीं बन जाय। चूर्ण रूप

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

में बनने के बाद सबको एकत्र कर सराव में ढककर तेज अग्नि देवें। ठण्डा हो जाने पर पानी से अच्छी तरह धोखर क्षार रहित करें। तदनन्तर उस नाग चूर्ण को समभाग मनःशिला तथा यथेष्ट निम्बू स्वरस सम्पुटित कर गजपुट देवें। इस प्रकार तीन पुट देने से नाग की भस्म बन जाती है।

गुण— तिक्त, मधुर, स्निग्ध, उष्ण, गुरु, दीपन, प्रमेह, वात व्याधि, संग्रहणी अर्श, प्रतिश्याय, श्लैष्मिक रोग नाशक एवं व्रण रोपक।

वङ्ग— 030 मि.ग्रा. से 125 मि.ग्रा. तक।

वङ्ग

पर्याय— वङ्ग, वङ्गक, रंग, रंगक, त्रपु।

अ. Tin ले. Stannum.

रांगा या कलई के नाम से हम लोग वङ्ग को व्यवहार में लेते है। यह चांदी के सामन सफेद रगं वाली मुलायम आशुद्रवणशील धातु हैं।

विशिष्ट गुरुत्व— 7.3, **द्रवणाङ्क** 232^0 C

वङ्ग के प्रकार—

(i) **खुरक वङ्ग**-कलई के काम में आने वाला निःशब्द द्रवणशील तथा चमकिला होता है। इसे ही औषधि प्रयोग में लिया जाता है।

(ii) **मिश्रक वङ्ग**-अन्य धातुओं के मिश्रण से कठिनता से पिघलने वाला चमक रहित रुक्ष, कठिन वङ्ग मिश्रक कहलाता है। यह औषध प्रयोग के लिये अग्राह्य है।

विशिष्ट शोधन— उपकरण— नाग शोधन विधि के समान।

द्रव्य— खुरक वंग, चूने का पानी।

विधि— नाग शोधन की तरह ही वङ्ग को द्रवित कर चूने के पानी में सात बार बुझावा देने से शोधन हो जाता है।

विशेष— बुझावा देते समय वङ्ग, नाग की अपेक्षा अधिक उछलता है, अतः पूर्ण सावधानी अपेक्षित है।

मारण— उपकरण— कटाही, अंगारधानिका, शराव।

द्रव्य— शु. वंग, शु. पारद, हरताल चूर्ण।

विधि— कढाही में वंग एवं 1/16 भाग पारद डालकर तेज अग्नि देवें वंग के पिझलने पर हरताल चूर्ण डालते हुये, जंगली कपास की गीली लकड़ी से चलाते जावें। वंग का चूर्ण बन जाने पर सकोरे से ढक कर तेज आंच देनी चाहिये अग्नि प्रतप्त होने पर स्वांग शीत होने दें। इस प्रकार वंग की भस्म बन जाती है।

गुण— लघु, शीत, रुक्ष, तिक्त, कषाय, रुच्य, रसायन, कफशामक, प्रमेह, मेदोरोग, क्षय, श्वेत प्रदर, उदर कृमि, व्रण नाशक।

मात्रा— 125 मि.ग्रा. से 225 मि.ग्रा. तक।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पंचम अनुच्छेद

मात्रा परिचय

औषधियों के प्रयोग में उनकी मात्रा का महत्वपूर्ण स्थान है जैसे—

1. अवस्था के अनुसार मात्रायें पृथक्-पृथक् होती है। कम या अधिक देने पर प्रभावहीनता या दुष्प्रभाव भी हो सकते हैं।
2. एक ही औषधि कम या अधिक मात्रा में अलग-अलग प्रभाव दिखा सकती है। औषधि बनाते समय निर्दिष्ट मात्रा में नहीं मिलाने पर गरविषता या रासायनिक प्रतिक्रिया हो सकती है। अत: सावधानी पूर्वक मात्रा निरुपण करना चाहिये।

प्रयोग की जाने वाले औषधियों का स्वरूप चूर्ण, गोली, मोदक, अवलेह, द्रव, केपसूल, सूचिवेध आदि हो सकते हैं।

* गुटिका, केपसूल या मोदक की मात्रा बनाने में सुविधा रहती है। किन्तु अन्य कल्पनाओं में सावधानी अपेक्षित है।
* द्रव औषधियों को मापने के लिये मापक ग्लास (Measuring Glass) या चम्मच का प्रयोग किया जाता है।
* चूर्ण या शुष्क दवाईयों को तौलने के लिये भौतिक तुला या अन्य साधारण तराजू का प्रयोग किया जाता है।
* मापक ग्लास 4 ओंस (oz) तथा 2 ड्राम (Drm) के दोनों रखने चाहिये। जहाँ ड्राम या बूंद मापना हो वहाँ 2 ड्राम वाले ग्लास से तथा जहाँ औंस में मापना हो वहाँ 4 औंस वाले ग्लास का प्रयोग करना चाहिये।
* मापक ग्लास का प्रयोग करते समय उसे अपनी आँखों की ऊँचाई के बराबर रखते हुये, बांटे हाथ में पकड़ें। बांये हाथ के अंगूठे को जितनी दवा लेनी हो उस निशान पर रखना चाहिये। फिर दाहिने हाथ से उसमें दवा भरें। उसी में दूसरी दवा मिलाई जाने पर पहले वाली शीशी को बन्द कर यथा स्थान रख देना चाहिये, जिससे गलती से दुबारा नहीं मिलाई जा सके।
* बूंदों में दवाई लेनी हो तब अच्छे ड्रापर का प्रयोग करना चाहिये।
* कम मात्रा में या बहुमूल्य दवाईयों को भौतिक तुला, जो कि कॉच के बक्से में बन्द होती है, से तौलना चाहिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

* जिन दवाईयों के स्पर्श से धातु पर जंग लग जाता है, उन्हें तौलते समय स्टील या शीशे की थाली का प्रयोग करना अपेक्षित है।
* दी जाने वाली दवाई की मात्रा का परिज्ञान आपको भी होना आवश्यक है। चिकित्सक द्वारा भूल से गलत मात्रा निर्देश करने पर या आपको शंका होने पर उनसे जरुर परामर्श कर लेना चाहिये।

मान— जिसके द्वारा तोला या मापा जाय उसको मान कहते है, प्रारम्भिक काल में अनेक प्रकार के मान प्रचलित थे। किन्तु संहिता ग्रन्थों में दो प्रकार के मानों का उल्लेख हैं— (i) मागध मान (चरकोक्त) (ii) कालिङ्ग मान (सुश्रुतोक्त)।

चरक द्वारा प्रतिपादित योगों के निर्माण में मागध मान तथा सुश्रुतोक्त परिमाणों की व्याव्या में कालिङ्ग मान का प्रयोग किया जाता है। उक्त मानों में मागध मान को श्रेष्ठ माना गया है।

I मागध मान—

6	वंशी (ध्वंसी या त्रसरेणु)	—	1	मरीचि
6	मरीचि	—	1	सर्षप
8	सर्षप	—	1	तण्डुल
2	तण्डुल	—	1	धान्यमाष
2	धान्यमाष	—	1	यव
4	यव	—	1	अण्डिका
4	अण्डिका	—	1	माषक, हेम, धानक
3	माषक	—	1	शाण
2	शाण	—	1	द्रंक्षण, कौल, बदर
2	द्रंक्षण	—	1	अक्ष, कर्ष, सुवर्ण
2	कर्ष	—	1	पलार्द्ध, शुक्ति, अष्टमिका
2	पलार्द्ध	—	1	पल, मुष्ठि, प्रकुञ्च
2	पल	—	1	प्रसृत
4	पल	—	1	कुड़व, अञ्जलि
2	कुड़व	—	1	मानिका
4	मानिका	—	1	प्रस्थ
4	प्रस्थ	—	1	आढक, वट, अष्टशराव, पात्री, पात्र, कंस
4	आढक	—	1	द्रोण, कलश, घट, उन्मान

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

2	द्रौण	—	1	सूर्प
2	सूर्प	—	1	गौणी, खारि, भार
32	सूर्प या 16 गौणि	—	1	वाह
100	पल	—	1	तुला

II कालिङ्गमान—

12	पीली सरसों	—	1	यव
2	यव	—	1	रत्ति या गुंजा
8	रत्ती	—	1	माषा
4	माषा	—	1	षाण, निष्क, टंक
6	माषा	—	1	गणाद्य
10	माषा	—	1	कर्ष
4	कर्ष	—	1	पल
4	पल	—	1	कुड़व
12	मध्यम निष्पाव	—	1	सुवर्ण माषक
16	सुवर्णमाषक	—	1	सुवर्ण
19	सुवर्ण माषक	—	1	धरण
5	धरण	—	1	कर्ष
6	16 (माषक)	—	1	कर्ष
4	कर्ष	—	1	पल
4	पल	—	1	कुड़व
4	कुड़व	—	1	प्रस्थ
4	प्रस्थ	—	1	आढक
4	आढक	—	1	द्रोण
2	द्रोण	—	1	शुर्प
2	शुर्प	—	1	द्रोणी
4	द्रोणी	—	1	खारी (4096 पल)
100	पल	—	1	तुला
20	तुला	—	1	भार (2000 पल)

III मध्यकालीन मान—

8	रत्ती	—	1	माषा
12	माषा	—	1	तोल
5	तोला	—	1	छटांक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

4	छटांक	—	1	पाव
4	पाव	—	1	सेर
40	सेर	—	1	मन
27	मन	—	1	टन

IV इम्पीरीयल मान—

द्रव पदार्थों के लिये—

1	मिनिम	—	1	बूंद
60	बूंद	—	1	ड्राम
8	ड्राम	—	1	पौण्ड
16	औंस	—	1	पौण्ड
20	पौण्ड	—	1	पाइण्ट
8	पाइण्ट	—	1	गैलेन

ठोस पदार्थों के लिये—

1	ग्रेन	—		आधी रती के लगभग
1	ग्रेन, 437.5 ग्रेन	—	1	ओंस 2.25 तोला लगभग
16	औंस या 700 ग्रेन	—	1	पौण्ड 7.5 छटाक लगभग
14	पौण्ड	—	1	स्टोन 6 सेर 9 छटाक लगभग
28	पौण्ड	—	1	क्वार्टर 13 सेर 4 छटाक लगभग
4	क्वार्टर	—	1	हण्डर 1 मन 14 सेर लगभग
20	हण्डर	—	1	टन 27 मन

V मिट्रिक मान—

ठोस पदार्थों के लिए—

1000	मा. ग्राम (mc)	—	1	मि.ग्रा.
10	मि.ग्रा. (mg)	—	1	से.ग्रा.
10	से.ग्रा. (cg)	—	1	डे.ग्रा.
10	डे.ग्रा. (dg)	—	1	ग्राम
1000	ग्राम (g)	—	1	कि.ग्रा.

द्रव पदार्थों के लिये—

10	मि.लि. (ml)	—	1	से.लि.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

100				
10	से.लि. (cl)	—	1	डे.लि.
10	डे.लि. (dl)	—	1	लि. (41)

यूनानी मान

ठोस पदार्थों के लिये—

2	खस-खस	—	2	खरदल (राई)
4	खरदल	—	1	उरुज्जह (चांवल)
4	उरुज्जह	—	1	शईरह (जौ)
2	शईरह	—	1	सुर्ख (रत्ती)
2	सुर्ख	—	1	किरात
6	सुर्ख	—	1	दाँग
8	सुर्ख	—	1	मासा
3.5	मासा	—	1	दिरहम (लगभग एक ग्राम)
4.5	मासा	—	1	मिष्काल
20	किरात (40 रत्ती)	—	1	दिनार
20	मासा	—	13	स्तार
23	मासा	—	1	औकिय्यह (लगभग एक औंस)
90	मिष्काल	—	1	रतल तिब्बि
2	रतल तिब्बि	—	1	मन तिब्बि
64	तोला	—	1	सेर आलमगिरि
84	तोला	—	4	सेर शाहि

द्रव पदार्थों के लिये

4.5	मासा	—	1	चमचह (चम्मच)
12.5	तोला	—	1	पियाली (प्याली)
20	तोला	—	1	पियाला (प्याला)

भैषज्य कल्पना

जिस प्रकार रोगी की चिकित्सा में औषधियों का महत्वपूर्ण स्थान हैं उससे भी महत्वपूर्ण तथ्य उसके स्वरूप का है। रोगी को दी जाने वाली औषधि का स्वरूप, मनः प्रसादक होने के साथ ही साथ सरलता से खाया जा सकने वाला होना चाहिये। इसी दृष्टिकोण को समुख रखते हुये आचार्यों ने निम्नाङ्कित भैषज्य कल्पनाओं का उल्लेख किया है—

1. स्वरस　　2. कल्क　　3. चूर्ण
4. क्वाथ　　5. फाण्ट　　6. हिम

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्वरस— (Juices) **परिभाषा—** यन्त्र द्वारा दबाकर निचोडने से जो रस या द्रव्य निकलता है उसे स्वरस कहते हैं।

विधि— ताजी हरी स्वस्थ (कीटाणु रहित) वनस्पति को स्वच्छ जल से धोकर छोटे-छोटे टुकड़े काट लेना चाहिये। उसके बाद ओखली में दरगज कर सिल पट्टे पर बारीक पीसा जाता है इस प्रकार तैयार कल्क को कपड़े में लेकर निचोड़ते हुये रस निकाल लेवें।

ब्राह्मी का स्वरस निकालना—

उपकरण— खल्व यन्त्र, स्वच्छ, दृढ, महीन वस्त्र २, प्याले २।

द्रव्य— ब्राह्मी क्षुप, पानी।

विधि— पूर्वकर्म-सर्वप्रथम खल्वयन्त्र, प्याले एवं वस्त्रों को अच्छी प्रकार से धोकर स्वच्छ कर लेना चाहिये। तदनन्तर ब्राह्मी के क्षुप को भी स्वच्छ पानी से इस तरह धोवें की उस पर से मिट्टी जीवाणु आदि साफ हो जाय किन्तु रस की क्षति नहीं होवें।

प्रधान कर्म— स्वच्छ ब्राह्मी को दृढ पत्थर के खल्व यन्त्र में डालकर महीन पीसें। कल्क तैयार हो जाने पर दुहरे वस्त्र में लेकर निचोड़ कर प्याले में रस निकाल लेवें।

पश्चात् कर्म— प्राप्त रस को स्वच्छ पात्र में संग्रहित करें, एवं यन्त्रोपकरणों को स्वच्छ धोकर यथा स्थान पर रखें।

सूखे द्रव्यों से स्वरस निकालना— हरी वनस्पतियों के अनुपलब्ध होने पर शुष्क अवस्था में उनका रस प्राप्त करने के लिये सूक्ष्म चूर्ण बना लेवें। फिर किसी मिट्टी, चीनी मिट्टी, कॉंच या स्टील के पात्र में सम या द्विगुण जल में 24 घण्टे तक डाले रखना चाहिये। दूसरे दिन अच्छी तरह मसल कर छान लेना चाहिये।

पुट पक्व स्वरस— कई वनस्पतियों जैसे निम्ब पत्र, वासा पत्र, बिल्व पत्रादि का स्वरस भलीभाँति नहीं निकल पाता हैं। अतः उनका पुट पाक विधि से स्वरस प्राप्त किया जाता है।

विधि— गीली वनस्पति को कूट पीस कर गोला बना लेवें। तदनन्तर उस गोले पर वट, जामून, गाम्भारी आदि के पत्ते लपेट कर धागे से बांध लेना चाहिये। अब इस पिण्ड पर 1'' इन्च मोटा चिकनी मिट्टी का लेप कर लेना चाहिये। तदनन्तर कण्डों की आंच में रक्त तप्त होने तक पकावें, फिर उसे निकाल कर आवरण हटाते हुये अन्दर के कल्क को कपड़े में निचोड़ कर स्वरस प्राप्त कर लेवें।

स्वरस में प्रक्षेप (शार्ङ्गधर) मधु, क्षार, गुड, मिश्री, नमक, जीरा, तैल, घृत एवं अन्य चूर्ण आवश्यकतानुसार चिकित्सक के परामर्श से डाले जाते है।

स्वरस की मात्रा— 10 मि.ली. से 15 मि.ली.।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्वरस का उपयोग—

1. स्वरस कल्पना गुरु एवं प्रभावी होने से रोगी एवं रोग की सबल स्थिति में प्रयोग किया जाता है।
2. कई औषधियों के अनुपान रूप में प्रयोग किया जाता है।
3. रसौषधियों के गुण वृद्धि के लिये विभिन्न स्वरसों की भावना दी जाती है।
4. औषधियों के दोषों के निवारण के लिये स्वरस की भावनायें भी दी जाती है।
5. धातुओं के भस्मीकरण में विविध वनस्पतियों के रसों की भावनायें दी जाती है।

2 कल्क कल्पना

आर्द्र वनस्पतियों को पीसने पर या शुष्क चूर्ण को जल के साथ पीसने पर बनने वाली लुगदी या पिण्ड को कल्क कहते है।

कल्क की विशेषतायें—

I. कल्क में प्रयोज्य औषध द्रव्यों के स्वरस के साथ काष्ठ भाग भी प्रयुक्त होता हैं। जबकि स्वरस कल्पना में काष्ठ भाग फेंक दिया जाता है।
II. स्वरस की अपेक्षा कल्क लघु होता है।
III. जिन वनस्पतियों के रस एवं काष्ठ दोनों ही भागों में कार्यकारी तत्व प्राप्त हों उनकी कल्क कल्पना उपादेय रहती है।
IV. कल्क को यूनानी में नुगदा कहते है।

कल्क की मात्रा— 2 ग्राम से 10 ग्राम तक।

प्रक्षेप— शहद, घृत, तैल, (कल्क से दुगना) शक्कर या गुड (कल्क के समान) जल या दुग्ध (कल्क से 4 गुना)।

3 चूर्ण कल्पना

अच्छी तरह सूखे हुये द्रव्य को बारीक पीसकर मैदे की छलनी या बारीक कपड़े से छानकर चूर्ण बनाया जाता है, इसे रज और क्षोद भी कहते है। यूनानी में इसे सफूफ अंग्रेजी में Powders, pulve, or Pulverata कहते हैं।

आवश्यक निर्देश—

I. जिन द्रव्यों का चूर्ण बनाना है उनमें धूल, कंकड़ आदि अशुद्धियाँ नहीं हों।
II. चूर्ण बनाने के लिये प्रयोज्य उपकरणों की स्वच्छता ठीक से की जावें।
III. चूर्ण बनाते समय औषधियों का अपव्यय नहीं होना चाहिये।
IV. उड़नशील द्रव्यों का चूर्ण सावधानीं पूर्वक बन्द उपकरणों में बनाना चाहिये।
V. औषध योग के प्रत्येक घटक द्रव्य का पृथक्-पृथक् चूर्ण बनाकर मिलावें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

VI. कम मात्रा वाले घटकों को आपस में मिलाकर अधिक मात्रा वाले घटकों को मिलाना चाहिये।

मात्रा— 2 से 10 ग्राम।

4 क्वाथ कल्पना

अग्नि पर औषध द्रव्य को पानी में उबालकर छने हुये द्रव भाग को क्वाथ कहते है। क्वाथ बनाने से पहले औषध द्रव्य को साफ कर यवकूट कर लिया जाता है। उसके बाद द्रव्य की प्रकृति के अनुसार चार गुना, आठ गुना, सोलह गुना जल मिला कर सामान्यतया चतुर्थांश रहने तक उबाला जाता है। तदनन्तर छानने से प्राप्त द्रव्य को क्वाथ, शृत, निर्यूह, Decoction, यूनानीं में तबीक, मुतबूक, मुगला और जोशांदा तथा हिन्दी में काढा कहते है।

प्रक्षेप— दोषानुसार अलग-अलग मात्रा में मिश्री, शक्कर, शहद, जीरा, नमक, क्षार, गुग्गुलु, सौंठ, हिंगु, मिरच, पीपल, घी, दूध, गुड़, गोमूत्र, तैल आदि प्रक्षेप रूप में डाले जाते है।

विशेष—

i. क्वाथ बनाते समय पात्र मिट्टी का, स्टील का या कलईदार होना चाहिये।
ii. क्वाथ बनाते समय पात्र को ढकना नहीं चाहिये। ऐसा करने पर क्वाथ गुरु हो जाता है।
iii. उड़नशील तैल वाले द्रव्यों का साधारणतया क्वाथ नहीं बनाया जाता है। यदि बनाना ही हो तो पात्र को ढककर उबालें।

मात्रा— 10 मि.लि. से 20 मि.लि.।

5 फाण्ट

उबले हुये चौगुने पानी में एक भाग जौ कूट औषध को डालकर ढक देवें। लगभग 5 से 10 मिनिट बाद मसलकर छान लेने से प्राप्त द्रवांश फाण्ट कहलाता है। यूनानी में मनकूअ, नकूअ, नकिअ तथा अंग्रेजी में Infusum या Infusion कहते है।

आवश्यक निर्देश—

1. फाण्ट बनाने के लिये यथासंभव परिस्रुत जल का ही प्रयोग करें। भारी पानी का उपयोग करने पर औषध द्रव्यों का सार अच्छी तरह नहीं धूल पाता है।
2. फाण्ट कल्पना करतें समय हर बार पानी का तापक्रम एक जैसा हो। फाण्ट में प्रयुक्त द्रव्य जौ कूट होना ही पर्याप्त है।
3. फाण्ट का उपयोग तत्काल ही करना चाहिये।

मात्रा— 50 मि.ली. से 80 मि.ली.।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

6 हिम

एक भाग यवकूट औषध द्रव्य को 6 भाग ठण्डे जल में डालकर 12 घण्टे बाद मसलकर छान लेनें। इस प्रकार प्राप्त द्रव हिम, शीत-कषाय या हिमकषाय, यूनानी में खिसान्दह, खिसान्दा या जलाल तथा अंग्रेजी में Infusion Cold कहते है।

आवश्यक निर्देश—

1. हिम कषाय के लिये यथा संभव परिस्नुत जल का ही प्रयोग किया जाना चाहिये।
2. पानी शीतल होना चाहिये।
3. हिम-कषाय के लिये औषधियों का सूक्ष्म चूर्ण नहीं लेकर यवकूट या दरदरा होना चाहिये।
4. जब भी हिम कषाय का सेवन करना हो तो ताजा ही प्रयोग करें।
5. भारी पानी में औषधियों का सार भाग अच्छी तरह नहीं धुल पाता है।

मात्रा— 50 मि.लि. से 80 मि.लि.।

अन्य कल्पनायें—

I– अवलेह— क्वाथ को पुनः औटाकर गाढा करने से औषधी का स्वरूप चाटने योग्य बन जाता है, इस कल्पना को अवलेह, रस क्रिया या लेह कहते है। अवलेह कल्पना दो विधियों से की जाती है—

1. ऊपर लिखे अनुसार क्वाथ को गाढा करना तथा उसमें प्रक्षेप द्रव्य मिलाकर तैयार करना।
2. इस विधि में क्वाथ द्रव्य में गुड़ या शक्कर मिलाकर तैयार किया जाता है। कई बार गुड़ या शक्कर की चासनी लेकर अवलेह द्रव्य मिला दिये जाते है।

परीक्षा—

1. तन्तुकत्व अर्थात् अवलेह में से चम्मच को उठाने पर तार या तन्तु बनता है।
2. जल मज्जन— अर्थात् अवलेह की 1 बूंद ठण्डे पानी में डालने पर वह डूब जाती है।
3. खरता— स्पर्श करने पर खरता प्रतीत होना।
4. अवलेह को अंगुली से स्पर्श करने पर रेखाङ्कन हो जाता है। किन्तु अंगुलियों पर नहीं लगता है।
5. अवलेह को सूंघने पर प्रयुक्त औषधियों की गन्ध आती है।

विशेष—

1. अवलेह का पाक न अधिक खर और न ही अधिक मृदु होना चाहिये।
2. शहद अवलेह को नीचे उतारनें के बाद ठण्डा होने पर मिलावें।

II– गुटिका— अपेक्षित औषधी द्रव्य के गुण को किन्हीं द्रव के साथ मिलाकर गोलियाँ बनाना गुटिका, वटिका, वटी, वटक, मोदक या वर्ति कहते है। यह दो प्रकार से बनायी जाती है—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

1. अग्नि पर पाक कर अर्थात् गुड़, शक्कर, गुग्गुलु आदि की चासनी बना कर अथवा अवलेह कल्पना कर खर पाक कर गुटिका बनाना।
2. निरग्नि अर्थात् औषध में जल, दुग्ध, शहद या मुनक्का के साथ पीस कर गुटिका निर्माण करना। गोल गोलियों को Pills तथा चपटी गोलियों को Tablets तथा यूनानी में हब्बु, हब्बुब या कुर्स कहते है।

आवश्यक निर्देश—

1. गुटिका के लिये योग बनाते समय कम मात्रा वाले घटकों को पहले मिलाना चाहिये।
2. विषाक्त द्रव्य जैसे संखिया आदि या क्षारादि को शुद्ध करके ही प्रयोग करें।
3. उड़नशील द्रव्यों को मिलाते समय आवश्यक सावधानी जरुरी है।
4. जिस छुर्री या चम्मच को मर्दन करते समय खुरचने के काम में लिया है उसे पुनः औषध पात्र में नहीं डाले।
5. गोलियों के सूखने पर टूटने की संभावना होने पर किसी गौंद, मुलैठी आदि मिलाना चाहिये।
6. गोलियाँ आपस में चिपके नहीं एतदर्थ दालचीनी, मुलैठी, स्टार्च या फ्रेञ्च चाक पाउडर पर उन्हें डालना चाहिये।
7. जिन गुटिकाओं में आर्द्रता को सोंखने की शक्ति हो अथवा उड़नशील द्रव्य हो उन पर कोटिङ्ग करना चाहिये।
8. जिन गुटिकाओं पर वर्क चढ़ा गा हों उनमें ग्लेसरीन नहीं डालें।
9. तीक्ष्ण द्रव्यों को सम्पूर्ण कल्क में अच्छी तरह मिलाने के लिये ग्लीसरीन मिलाया जाता है।

III– स्नेह— घृत, तैल आदि स्नेहों को क्वाथ, स्वरस, दुग्ध या जल आदि द्रव पदार्थों एवं औषध द्रव्यों के कल्क के साथ पकाकर घृत तैल आदि तैयार करना स्नेहपाक कहलाता हैं। साधारणतया कल्क, स्नेह एवं द्रव्य का अनुपात 1 : 4 : 16 होता है।

स्नेह सिद्ध के लक्षण—

1. स्नेह के कल्क को अंगुली से मलने पर वर्ति बन जाना।
2. स्नेह की बूंद अग्नि में डालने पर शब्दोत्पति नहीं होना।
3. पाक के समय तैल में फेनोत्पत्ति तथा घृत में फेनशान्ति होना।
4. उत्तम गन्ध, वर्ण और रस की उत्पत्ति। निर्दिष्ट मात्रा में ही घृत का पाक करना चाहिये।
5. क्षारों के साथ स्नेह पाक करने पर स्नेह के ऊफान या झाग बनते है अतः सावधान रहना चाहिये।
6. स्नेह पाक एक ही दिन में पूरा नहीं कर दूध के साथ दो दिन में, स्वरस के साथ 3 दिन में तथा तक्र, कांजी एवं जल के साथ 5 दिन में पाक पूरा करना चाहिये।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

7. स्नेह पाक से पहले घी या तैल को मूर्च्छित करना चाहिये।

मात्रा— 10 ग्राम से 30 ग्राम तक।

IV-V– आसव-अरिष्ट कल्पना—

क्वाथ जल आदि में औषध द्रव्यों को डालकर लम्बे समय तक संधान करना आसव या अरिष्ट कल्पना कहलाती है। सन्धान करने से कल्पना में मादकता या सुरा का अंश उत्पन्न हो जाता है। सीधु, वारुणी, अरिष्ट और आसव मद्य वर्ग में तथा तुषोदक, सौवीर और कांजिक शुक्त वर्ग में समाविष्ट किये जाते है। अपक्व औषध और जल को संधान करना आसव तथा पक्व औषध व जल को संधान करना अरिष्ट कहलाता है।

आसवारिष्ट को तैयार करने के लिये द्रव्य, पात्र, ऋतु स्थान तथा समय का विशेष ध्यान रखना चाहिये। अन्यथा संन्धान ठीक तरह से नहीं हो पाता है। एतदर्थ आवश्यक निर्देश निम्नांकित है—

1. सन्धान के लिये चीनी मिट्टी की पेचदार ढक्कन वाली बरनी या सागोन के ड्रम ठीक रहते है।
2. क्वाथ बनाने के लिये द्रव्य का चूर्ण बना लेना चाहिये।
3. जिस बर्तन में क्वाथ बनाया जाय वह स्टील या कलईदार होना चाहिये।
4. आसव का सन्धान शीत ऋतु में अपेक्षाकृत अच्छा होता है। अत: ग्रीष्म ऋतु में संधान करने पर शीत स्थान में पात्र रखें।
5. सन्धान पात्र के आस-पास मक्खी, मच्छर, गन्दगी, कूड़ा-करकट तथा सिरका नहीं होना चाहिये।

VI– अर्क— जिन द्रव्यों की कार्मुकता उनकी सुगन्ध अथवा उड़नशील तैलों में निहीत होती है उनका क्वाथ बनाने पर नष्ट होने की संभावना रहती है। अत: हिम या फाण्ट कल्पना की जाती है। किन्तु उक्त दोनों की कल्पनायें तत्काल सेवन की जाने से अधिक समय तक नहीं रख सकते है। एतदर्थ अर्क कल्पना अधिक उपयोगी सिद्ध होती है।

अर्क बनाने के लिये द्रव्यों को यव कूट कर दश गुने जल में 12 घण्टे भिगो देवें तदनन्तर अर्कयन्त्र में डालकर आंच देवें। पानी को गरम होने से वाष्प उड़कर नलिका से बाहर निकलना चाहती है। किन्तु मार्ग में यन्त्र गत शीत स्पर्श से पुन: द्रव रूप होकर बाहर निकलती है। यही अर्क कहलाता है। जिसमें सम्बन्धित औषध के रस गुण एवं सुगन्ध होती है।

-:o:-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मण्डूर

पर्याय— लोह किट्ट, लोह सिंघाणक, अंग्रेजी Iron oxide.

यह धातु गहरे भूरे रंग का कुछ कालिमा लिये भारी रुक्ष, खूरदरा एवं चमक रहित होती है। जो लोह शोधन के समय या कच्चे लोह की सफाई करते समय निकलने वाला किट्ट भाग होताहै। यही कारण है कि प्राचीन लोह खदानों एवं शस्त्र निर्माण स्थलों के आस-पास यह विप्रकीर्ण मिलता है। अधिक पुराना मण्डूर अधिक गुणकारी माने जाने से 100 वर्ष पुराना उत्तम, 80 वर्ष पुराना मध्यम एवं 60 वर्ष पुराना अधम माना जाता है।

जो मण्डूर गहरा काला, कोटर युक्त, हल्का, भंगूर, मिट्टी से युक्त तथा कन्टि रहित होता है वह औषध प्रयोग के लिए अग्राह्य माना जाता है।

शोधन— मण्डूर को बकुडे की अग्नि में तपाकर गौमूत्र एवं त्रिफला क्वाथ में 7-7 बार बुझावा देने से शुद्ध हो जाता है। इसके अतिरिक्त लोह शोधन कि विधियाँ भी उपयोगी रहती हैं।

मारण— मण्डूर में त्रिफला क्वाथ, गौमूत्र, जीवन्ती, नागरमोथा आदि द्रव्यों में से यथा प्राप्त द्रव्यों के क्वाथ या स्वरस की भखना देकर 15 से 20 गजपुट देने से भस्मीकरण हो जाता है।

गुण— कषाय, शीत, पाण्डु, शोथ, कामला, जीर्ण ज्वर तथा यकृत् प्लीहोदर में उपयोगी।

हिंगुल

पर्याय— हिंगल, हिंगलु, इंगुल, मलेच्छ, चित्रांग, चूर्णपारद, रस स्थान, दरद, सिनेबार (Cinnabar)

परिचय— लाल रंग का चमकीला, श्वेत रेखा युक्त, भारी, मृदु तथा ज्वलनशील यह द्रव्य पारद का खनिज स्रोत है। प्राकृतिक रूप से ज्वालमुखी पर्वतों में पाया जाता है। गंधक एवं पारद का मिश्रण होने से इसे कृत्रिम रूप से भी बनाया जा सकता है। हिंगुल से निकले हुए पारद को औषधि प्रयोग में सीधे ही लिया जा सकता है। किन्तु यथा सम्भव शोधन करना ही चाहिए। सामान्यतया हिंगुल खनिज एवं कृत्रिम दो प्रकार का होता है। इसके अतिरिक्त स्वरूप के आधार पर खनिज हिंगुल पुनः दो प्रकार का बतलाया गया है। (i) चर्मार, 2. हंसपाद

1. जो हिंगुल कुछ कृष्ण वर्णी तथा अल्प सत्व होता है, उसे चार्मार हिंगुल कहते हैं।
2. पृवाल के समान चमकीले लाल रंग वाला तथा यारद की श्वेत रेखाओं से युक्त हिंगुल हंसपाद कहलाता है। औषधि प्रयोग के लिए यही प्रकार अधिक उपयोगी रहता है।

अशुद्ध हिंगुल का प्रयोग करने पर भ्रम, प्रमेह, चित्त विभ्रम, नेत्रविकार, थकावट दुर्बलता आदि उत्पन्न होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शोधन विधि— आर्द्रक स्वरस, निम्बू स्वरस बड़हल स्वरस, की 7 भावना देकर हिंगुल को स्वच्छ जल से धो लेना चाहिए।

विशिष्ट योग— हिंगुलेश्वर रस, सिद्ध दरदामृत, मृत्युञ्जय रस, त्रिभुवन कीर्ति रस।

संखिया

पर्याय— गौरीपाषाण, भल्लः, फेनाश्म, सोमल, शंखविष।
अंग्रेजी (Arsenic) (आर्सेनिक)

परिचय— यह विष द्रव्य एक खनिज है। जो स्वतन्त्र एवं यौगिक रूप में भी प्राप्त होता है। स्वतन्त्र होने पर श्वेत चमकीला तथा पारदर्शक स्फटिक होता है, किन्तु कालान्तर में यारदर्शकता कम होकर शंख के समान श्वेत हो जाता है।

गंधक का मिश्रण होने पर यह पीत वर्ण का तथा लोह का मिश्रण होने पर रक्त वर्ण का होता है। लोह आदि अन्य खनिजों के साथ योग होने पर काले रंग का होता है। इस प्रकार संखिया, श्वेत, पीत, खत एवं कृष्ण वर्ण भेद से चार प्राकर का होता है।

शोधन— संखिया के टुकड़ों को दोला यंत्र विधि से गौदुग्ध, अजा दुग्ध या करेला स्वरस मे दो प्रहर तक स्वेदन करने से शोधन हो जाता है।

गुण— अव्यक्त रस, उष्ण वीर्य तथा कटु विपाकी संखिया बलवर्धक, रसायन, बाजीकर, पित्त प्रकोपक तथा वातकफ शामक होता है। श्वास, कास, फिरंग, श्लीपद, संधिवात तथा कुष्ठ में उपयोगी होता है।

मात्रा— 1/100 रत्ती से 1/50 रत्ती तक (1.25 मि.ग्रा. से 2.50 मि.ग्राम तक)

दोषनिवारण— घृत एवं दुग्धपान, शीतोपचार।

विशिष्ट योग— समीरपन्नग रस, अमीर रस, भलल सिन्दूर।

मनःशिला

पर्याय— शिला, नेपाली, कुनटी, मेनसिल।
अंग्रेजी (Realgar) (रिएलगार)

परिचय— लाल-पिले रंग का यह खनिज 1:2 के अनुपात में क्रमशः गंधक एवं शंखिया का योगिक है। जिसे आजकल कृत्रिम रूप में भी बनाया जाता है। कुछ काली एवं पिण्ड रूप मनःशिला को श्यामांगी, खण्ड रूप में खण्डाख्या एवं लाल कणों के रूप में पायी जाने वाली मनःशिला कणवीरका कहलाती है। प्राकृतिक रूप में नारंगी के समान पीताभ रक्त, स्निग्ध तथा शीघ्र चूर्ण होने वाली कणवीरका जातीय मनःशिला श्रेष्ठ मानी जाती है।

शोधन— अगस्त्य के पत्र स्वरस, आर्द्रक स्वरस, बीजौरा, भृंगराज स्वरस की 7-7 भावना देने से यह शुद्ध हो जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रसायन— रक्त शोधक कफवात शामक

गुण— कटु, तिक्त रस, कटु विपाकी, उष्ण वीर्य, कास, श्वास, ज्वर, कन्दू में उपयोगी है।

मात्रा— 1/4 से 1 रत्ती।

हरताल

पर्याय— तालक, आल, नटभूषण, शैलूषभूषण, चित्रगंध, पिञ्चर, वंश पत्र।

परिचय— यह सामान्यतया पीतवर्णी, चमकीला, गंधक की गंध वाला स्वच्छ द्रव्य है। प्राकृतिक रूप से खदानों से प्राप्त होने पर भी संखिया और गंधक के क्रमशः 1 : 2 के अनुपात में सममिश्रण कर कृत्रिम भी वनाया जाता है। हरताल दो प्रकार की होती है।

1. **पत्र हरताल**— जो सुवर्ण के समान पीली चमकीली अभ्रक के समान पत्र वाली एवं भंगूर होती है इसे तबकी या बरकी हरताल भी कहते हैं।
2. **पिण्ड हरताल**— यह पत्र रहित कम चमकीली व पिण्डित होती है। जो सामान्यतया प्राकृतिक स्रोतों से ही प्राप्त की जाती है।

दुष्प्रभाव— दाह, कम्प, वेदना, कुष्ठ, मृत्यु।

शोधन— पत्र हरताल के छोटे-छोटे टुकड़े कर दोला यंत्र विधि से चूने के पानी में, कुष्माण्ड स्वरस में, त्रिफला क्वाथ में एवं तिल तैल में एक-एक प्रहर स्वेदन करने से शुद्ध हो जाती है।

गुण— विभिन्न योगों के द्वारा वातश्लैष्मिक रोग, कास, श्वास, ज्वर, फिरंङ्ग वातरकट, कुष्ठ तथा नाड़ीव्रण को ठीक करता है।

मात्रा— 30 मि.ग्रा. से 125 मि.ग्राम।

योग— रस माणिक्य, ताल सिन्दूर।

स्फटिक

पर्याय— स्फुटी, स्फुटिका, शुभ्रा, कांक्षी, रंगदा, तुवरी, फिटकरी, सौराष्ट्री। अंग्रेजी (Alum) (एलम) (डबल सल्फेट ऑफ पोटास एण्ड एल्युमिनीयम)

परिचय— यह जल में विलेय, पारदर्शक, चमकीला तथा कषाय रस वाला पदार्थ है। जिसमें Aluminum एल्युमिनियम एवं Potas पोटास के अंश प्राप्त होते हैं।

भेद— यह रक्त एवं श्वेत भेद से दो प्रकार की होती है।

शोधन— उत्तम स्फटिक को जल में पीसकर विलयन बना ले जिसे फिलटर पेपर से छानकर पुनः जलीयांश को वाष्पित कर शुद्ध स्फटिक प्राप्त किया जाता है।

अन्य विधि— के अनुसार स्फटिक चूर्ण को कडाही में डालकर गर्म करें। ऊष्मा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पाकर यह चूर्ण द्रवित होकर पुनः शुष्क होता हुआ फूल जाता है। जिसे स्फटिक पुष्प, खील या भस्म भी कहते है। इस विधि से शोधन एवं मारण दोनों ही हो जाता है।

गुण— स्फटिक भस्म, अम्ल, मधुर, कषाय, ग्राही, रक्तरोधक, प्रदर एवं मुख रोग नाशक है। गुद भ्रंश एवं योनि भ्रंश में भी उपयोगी है।

मात्रा— 500 मि. ग्राम से 1 ग्राम तक।

गैरिक

पर्याय— रक्तधातु, गिरीज, गैरेय, गिरीमृत्तिका, लोह धातु।

परिचय— यह लाल पत्थर के समान भंगूर द्रव्य है जो खदानों से प्राप्त होता है। लोह एवं ऑक्सीजन का यौगिक होने से इसे लोह का उपधातु माना गया है।

भेद— यह स्वर्ण गैरिक एवं पाषाण गैरिक भेद से दो प्रकार का होता है। गहरे लाल रंग का चमकीला तथा स्निग्ध स्वर्ण गैरिक तथा कठोर, रुक्ष, पीताभ रक्त, पाषाण गैरिक कहलाता है। औषधि प्रयोग में स्वर्ण गैरिक ग्राह्य है।

शोधन— स्वर्ण गैरिक में गोदुग्ध तीन भावनाऐं देने से अथवा तम्र की भावना देने से अथवा गौघृट के साथ लोह के पात्र में पकाने से शुद्ध हो जाता है।

गुण— शुद्ध स्वर्ण गैरिक मधुर, कषाय, स्निग्ध, शीत, पित्त शामक होता है। रक्त पित्त, वमन, विष, दाह, अर्श, शीतपित्त, कण्डू में उपयोगी।

विशिष्ट योग— शक्तिवर्धक चूर्ण, कामदुघा रसा लघु सूट शेखर।

मात्रा— 250 से 500 मि.ग्रा.।

तुत्थ या नीला थोथा

पर्याय— तुत्थक, तुत्थाञ्जन, भयुरक, शस्यक, ताम्रगर्भ, शिखिग्रीव।
अंग्रेजी— (Copper Suiphate) (कापर सल्फेट)

परिचय— यह नील हरित वर्णी, चमकीला पदार्थ है। जो खदानों से प्राप्त होता है। खुली हवा में रखने पर ऑक्सीजन के प्रभाव से ऊपरी सतह श्वेत-वर्ण की हो जाती है। नीले थोथे में ताम्र एवं गंधक का समास है।

शोधन— 1. तुत्थ के चूर्ण को ढाई गुने गर्म पानी में घोलकर फिलटर पेपर से छान लें। अब इस विलीयन को काच के पात्र में सुखा लेने से शुद्ध तुत्थ प्राप्त होता है।

2. अन्य विधि के अनुसार अम्ल वर्गीय द्रव्यों के रस की 7 सात भावना देने से शुद्ध हो जाता है।

यह एक विषैला द्रव्य होने से इसका आभ्यन्तर प्रयोग अत्यन्त सावधानी से करना चाहिए। यह वामक द्रव्य है। बाह्य प्रयोगों में त्वक् रोगों एवं फिरंङ्ग व्रणों के शोधन तथा क्षारकर्म में प्रयुक्त होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शिलाजीत

पर्याय— अश्मजतु, शैलेय, शैलधातुज, शिलास्वेद, शिला निर्यास, अद्रिज, अश्मलाक्षा।
अंग्रेजी— Black Bitumen.

परिचय— यह एक काले रंग का चमकीला, गौमूत्र की गंध वाला पिण्ड रूप द्रव्य है। जो पर्वतीय चट्टानों में से तीव्र सूर्य की ऊष्मा से पिघलकर निकलने वाले स्राव के जमने से प्राप्त होता है। उन चट्टनों में मिश्रित धातुओं के आधार पर शिलाजीत के संगठन पर प्रभाव पड़ता है। सुवर्ण, रजत, ताम्र, लोह, नाग या वंग आदि धातुओं में से एक या अनेक का मिश्रण मिलता है। पुरातात्विक अध्ययन के आधार पर यह माना जाता है कि सृष्टि के विकास क्रम में अथवा प्राकृति के आपदाओं के कारण भूपटल पर होने वाले परिवर्तनों से विचरण शील जीवों के चट्टानों में दबे हुए होने के कारण कालान्तर में उन्हीं के अवशेषों से यह सृख निकलता है।

भेद— यह पर्वतों से प्राप्त होने तथा मृतिका से प्राप्त होने के आधार पर दो प्रकार का होता है। (i) गिरिज या गौमूत्र गंधीं तथा (ii) मृत्तिकाजन्य या कर्पूर गंधीं।

शोधन— शिलाजतु शोधन के लिए लोहे के चार पात्र लें प्रथम पात्र में उत्तम शिलाजीत के टुकड़ों पर द्विगुण उष्ण जल डालें, उसके पश्चात् अच्छी प्रकार मसलकर पानी में विलीयन बना लें। इस विलीयन को वस्त्र पूत कर शिलाजीत की समान मात्रा में निम्ब और गिलोय का क्वाथ डालें। अब छने हुए जल को द्वितीय पात्र में लेकर सूर्य के प्रकाश में रख दें। कुछ समय बाद उस जल की सतह पर मलाई के समान पपड़ी जम जाती है इस स्तर (परत) को निकालकर एकत्रित करें। जब मलाई के समान परत आना बन्द हो जाये तब उस पानी को फेंक दें। यह शिलाजीत की मलाई शुद्ध स्वरूप में होती है।

शिलाजीत की भस्म बनाने की विधी भी उपलब्ध है किन्तु व्यवहार में शुद्ध शिलाजीत को ही प्रयुक्त किया जाता है।

शिलाजीत परीक्षा— उत्तम शिलाजीत की परीक्षा के लिए कांच का स्वच्छ गिलास लेकर पानी भरें अब शिलाजीत का छोटा-सा दाना पानी की सतह पर डाले, शिलाजीत का वह पानी की सतह के नीचे की ओर गीत करता हुआ कृष्णाभ परिखा या रेशा छोड़ता जाता है। ऐसा नहीं होने पर अग्राह्य मानें।

विशिष्ट योग— चन्द्र प्रभावटी, शिलाजतुवटक, शिवागुटिका, शिलाजत्वादि लोह आदि।

माक्षिक

पर्याय— भीक्षिका, तायज, तापी, ताप्य, तापीज Pyritis (पाइराईटस) सोना माखी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

परिचय— यह एक श्वेत-पीत या रक्ताभ-कृष्ण-वर्णी भारी धातु है। रंग के आधार पर यह दो प्रकार का होता है— स्वर्ण भाक्षिक व रजत भाक्षिक कहीं-कहीं कांस्य भाक्षिक का भी उल्लेख है।

शोधन— 1. भाक्षिक को कूट कर पोटली में बांधते हुए एरण्ड, बीजोरा या कदली कन्द स्वरस में दौला यंत्र विधि से स्वेदन करें।

2. प्रतप्त भाक्षिक को त्रिफला क्वाथ में 7 बार बुझाने से शुद्ध हो जाता है।

मारण— शुद्ध स्वर्ण भाक्षिक में 1/4 भाग गंधक मिलाकर एरण्ड तैल के साथ मर्दन करें, अच्छी तरह मिल जाने पर चक्रिका बना कर सूखा लें। उसके बाद पाँच से सात बार गज पुट देने से भस्मीकरण हो जाता है।

भस्म परीक्षा— वारितरता, रेखापूर्णता आदि भस्मों की सामान्य परीक्षा के अतिरिक्त भाक्षिक भस्म को निम्बू स्वरस या दही में रखें। चार पाँच घन्टे बाद उसमें वर्ण परिवर्तन या नीलापन नहीं आना चाहिए।

गुण— कषाय मधुर रस, कटु विपाकी, शीत वीर्य, विष नाशक, सर्वरोग हर, रक्त प्रसादन हैं। पाण्डु, कामला, जीर्ण ज्वर, वमन, नेत्रविकार, अम्ल पित्त तथा अर्श में उपयोगी है।

मात्रा— 125 से 250 मि.ग्रा.।

विशिष्ट योग— पीयूषवलली रस, पूर्ण चन्द्र रस, वातगजाञ्कुश रस, ताप्यादि लोह, स्वर्णभाक्षिक भस्म आदि।

अभ्रक

पर्याय— गगन, अबरक, भोडल, आकाश के पर्यायवाची शब्द। अंग्रेजी— Mica.

परिचय— यह एक खनिज द्रव्य है। जो मोटी शिलाओं के रूप में निकलता है। चमकीले पत्रमय स्तरों से निर्मित अभ्रग में बालु, एलयुमिनियम, सोडीयम, पोटाशियम, लिथीयम, मैग्निनिशियम, लोह, कोमियम, मैग्नीज, हाइड्रोजन आदि मिलते है। जो विद्युत का कुचालक है। इसके पत्रक पारदर्शक होते हैं।

रंग के आधार पर श्वेत, कृष्ण, पीत एवं रक्त के भेद से चार प्रकार का होता है। लोह की मात्रा अधिक होने पर कृष्ण वर्णी होता है। जो औषधि प्रयोग के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

कृष्णाभ्रक की अग्नि परीक्षा करने पर होने वाले परिवर्तनों के आधार पर यह पुनः चार प्रकार का होता है। **(i) पिनाक—** जिसे तपाने पर धनुष के समान मुड़ने लगे तथा पत्र आसानी से पृथक् हो जाते हैं।

(ii) नाग— जिसे अग्नि से तपाने से सर्प की फूंकार के समान ध्वनि करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(iii) मण्डूक— जो अग्नि पर तपाने पर मेंढक की तरह उछलने लगें।

(iv) वज्र— जिसे खूब तपाने पर भी किसी प्रकार का परिवर्तन न हो उसे वज्राभ्रक कहते हैं। औषधि प्रयोग के लिए यही प्रकार उत्तम है।

शोधन— वज्राभ्रक को कूट कर मिट्टी कंकड आदि अलग कर दें उसके बाद प्राप्त कर कांजी, गौमूत्र तथा त्रिफला क्वाथ में सात-सात बुझावे दें। दो बार बुजाये देने के बाद द्रव को बदल दें। अब स्वच्छ जल को धोकर विशिष्ट शोधन के लिए पुनः सात बुजाये गोदुग्ध में देवें।

मारण— शुद्ध धान्याभ्रक में अर्क दुग्ध की भावना देकर टिकिया बना लें। इन शुष्क टिकियाओं को अर्क पत्र में लपेटकर शराव सम्पुट करें। इस प्रकार पचास-साठ पुट देने पर भस्म तैयार हो जाती है। पुटों की अधिक संख्या होने पर अधिक लाभकारी होने से शतपुटी एवं सहस्रपुटी अभ्रक भी तैयार की जाती है।

गुण— कास, श्वास, पाण्डु, क्षय, जीर्ण ज्वर, प्रमेह, शूल, अम्लपित्त, प्रदर नाशक मेध्य तथा वृष्म है।

योग— विशिष्ट योग, अभ्रक भस्म, नागार्जुनाभ्र, शृंगाराभ्र, अभ्रलोह, लक्ष्मीविलास रस।

मात्रा— 125-200 mg. मि.ग्रा.।

विषाण

पर्याय— मृग श्रृंग, एणश्रृंग।

परिचय— बारह सिंगा हिरण के मजबूत सींग को विषाण कहते हैं। भारी एवं ठोस शृंग औषध कार्य में प्रयुक्त होते हैं।

शोधन— छोटे-छोटे टुकड़े बनाकर नींबू स्वरस या गंधाकाम्ल के घोल में चौबीस घंटे भिगों दें। ऊपर आये काले रंग के स्तर को खुरचकर पानी से धो लें।

मारण— विषाण के टुकड़ों को गज पुट में दे दें। दूसरा पुट देते समय उन्हें पीस कर चूर्ण बना लें तथा घृतकुमारी की भावना देते हुए चक्रिका बना लें। इस प्रकार चार पुट देने से भस्म बन जाती है।

गुण— लघु, उष्ण, कटु, श्वास, कास, ज्वर में उपयोगी है।

शंख

पर्याय— समुद्रज, कम्बु, शंखनक

परिचय— समुद्र में रहने वाले घोंघा जातीय एक प्राणी का यह आवरण है। जो सफेद रंग का मोटे स्तर वाला तथा आवर्त युक्त होताहै। यह मध्य भाग में खुला हुआ होता है। इन आवर्तों के आधार पर ही शंख दो प्रकार के माने जाते है। वामावर्त एवं दक्षिणावृत्त। रासायनिक विश्लेषण में यह पाया गया है कि इसमें कैल्शियम कार्बोनेट होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शोधन— उत्तम शंख नाभि को नींबू स्वरस युक्त जल में दो घण्टे स्वेदन करने के बाद ऊपरी स्तर को खुरच लें अब गर्म पानी से धोकर रख लें।

मारण— विषाण के समान।

गुण— दीपन, पाचन, क्षारीय है। यकृत्, प्लीहा, गुल्म, अजीर्ण, मन्दाग्नि संग्रहणी अम्लपित्त में लाभकारक है।

मात्रा— 250 मि.ग्रा. से 1 ग्राम।

शुक्ति

पर्याय— सीप।

परिचय— यह एक समुद्री जन्तु से प्राप्त होने वाला अण्डाकार प्याले की आकृति का द्रव्य है। दो शुक्तियों के आपस में मिलने से बनने वाले सम्पुट में इसका जन्तु निवास करता है। शुक्तियाँ दो प्रकार की होती हैं—

1. **मुक्ता शुक्ति—** ये शुक्तियाँ मोटी बड़ी आकृति की तथा अन्दर की तरफ मोती के लिए छोटे-छोटे खान बने होते हैं। जिसमें मोती का निर्माण हुआ होता है।
2. **जल शुक्ति—** ये आकृति में आपेक्षिक रूप से छोटी तथा पतली होती हैं। औषधि प्रयोग में मुक्ता शुक्ति ही अधिक उपयोगी है।

शोधन मारण— शंक के समान।

पिष्टी— इसके सूक्ष्म चूर्ण को चन्दन, गुलाब केवडा के अर्क के साथ मर्दन करने से श्वेत पिष्टी का निर्माण होता है। जो सोम्य गुण वाली होती है।

गुण, योग एवं मात्रा— शंख के समान।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

परिशिष्ट

अकारादि क्रम में विषय सूची

अर्क	106	काली मिरच	18
अभ्रक	112	कुचला	48
अजवायन	28	कुटकी	37
अजमोदा	29	कुटज	36
अदरख	17	कुलिञ्जन	30
अफीम	45	क्वाथ	103
अयापान	64	खतमी	63
अरिष्ट	106	खस	52
अवलेह	104	खुरासानी अजवायन	28
अंजीर	74	खून खराबा	67
अश्वगन्धा	49	खूब कला	68
आब रेशम	65	गन्धक	87
आमलकी	16	ग्वारपाठा	60
आलुबुखारा	65	गाजवां	61
आसव	106	गिलोय	57
उलटकंबल	77	गुटिका	104
उस्तखदूस	77	गुड़हल	79
इन्द्रयव	37	गुण	5
इलायची	21, 22	गैरिक	110
इसबगोल	66	गोक्षुर	27
उन्नाव	75	चन्दन	51
उसब्बा	67	चंद्रशूर	56
कर्म	11	चव्य	20
कर्कट शृंगी	40	चिरायता	54
कण्टकारी	25	चित्रक	20
कर्पूर	50	चूर्ण	102

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कबाब चीनी	78	चोपचीनी	31
कर्म	11	जदवार	63
कल्क	102	जयपाल	47
काकोली	32	जलापा	71
कायफल	57	जायफल	42
जावित्री	43	महामेदा	33
जीवक	32	माक्षिक	111
जूफा	62	मण्डूर	107
ताम्र	90	मंजीष्ठा	41
तालमखाना	71	मुनक्का	76
तुख्म खस-खस	74	मेदा	33
तुत्थ	110	यन्त्र	82
तेजपात	23	यशद	93
दरियाई नारियल	72	रजत	89
दालचीनी	23	रस	4, 84
द्रव्य	2	रसोंत	43
धतूरा	46	रास्ना	39
धातु	87	रूमीमस्तंगी	79
नागकेशर	24	रेवन्द चीनी	70
नागरमोथा	53	ऋद्धि	35
नाग	94	ऋभक	32, 33
नैत्रवाला	53	लवङ्ग	51
पटोल पत्र	55	लहसुन	68
पारसीक वच	30	लिसोड़ा	74
पित्त पापड़ा	54	लोध्र	44
पित्तल	92	लौह	91
पीपल	19	वत्सनाभ	47
पीपलामूल	19	वनप्सा	61
पुट	84	बायबिड़ङ्ग	32
पुष्करमूल	39	विपाक	9
प्रभाव	10	विषाण	113
प्याज	69	वीर्य	8
फाण्ट	103	विभीतक	15

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

117

बच	29	वंशलोचन	35
बड़ी कटेरी	26	वङ्ग	95
बिल्व	25	शंखपुष्पी	59
बिहीदाना	73	शंख	113
ऋद्धि-वृद्धि	35	शतावरी	117
भंग	43	शिलाजीत	111
मन:शिला	108	शुक्ति	114
मदनफला	38	सनाय	80
सोंठ	17	सर्पगन्धा	49
संखिया	108	स्फुटिक	19
स्वर्ण	88	सुरंजान	81
हरिद्रा	41	स्नेह	105
हिम	104	हरताल	19
हरीतकी	14	हिंगुल	107
क्षीर काकोली	32		

* * *

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection